FAIZAN-E-MADINA

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

मई 2026 ई. / ज़ुल हिज्जतिल हराम 1447 हि.

- तोहमत व बोहतान 6
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े क़ुरबानी 10
- ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के 10 औसाफ़ 29
- चन्द क़दीम मदारिस व जामिआ़त 36
- बच्चों की मायूसी और वालिदैन की ज़िम्मेदारी 47

नज़रे बद और दर्द का रूहानी इलाज

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 786 बार

काग़ज़ पर लिख (या लिखवा कर तावीज़) की तरह लपेट कर प्लास्टिक कोटिंग कर के रेग्ज़िन या कपड़े वग़ैरा में सी कर बाज़ू पर बांध या गले में पहन लीजिये اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم नज़रे बद का असर ख़त्म हो जाएगा।

जिस के हाथ पांव में दर्द हो उस के लिए भी येह तावीज़ اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم मुफ़ीद है। (मदनी पंजसूरह, स. 251)

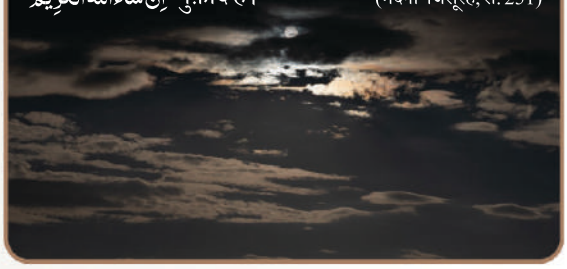

घर में झगड़े होते हों तो

يَاوَدُوْدُ يَاسَلَامُ

हर नमाज़ के बाद 100 बार रोज़ाना पढ़िये । اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم घर में महब्बत भरी फ़ज़ा क़ाइम होगी ।

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूदे पाक पढ़ना है, ता हुसूले मुराद वज़ीफ़ा जारी रखना है)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
24 रमज़ाने करीम 1446 हि। 25-3-25

जब कोई चीज़ ग़मगीन करती तो

अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ पढ़ते :

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

(यानी ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रखने वाले ! मैं तेरी रहमत से मदद मांगता हूं) (ترمذی، 5/311، حدیث:3535)

रंजो ग़म दूर होने के लिए फ़ज्र के सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान 40 मरतबा पढ़ना मुफ़ीद है और मक़रूज़ रोज़ाना किसी भी वक़्त दिन में 100 बार पढ़े तो क़र्ज़ से छुटकारा पाएगा, اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم

अमीरे अहले सुन्नत
मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
28 रमज़ाने करीम 1446 हि. 29-3-25

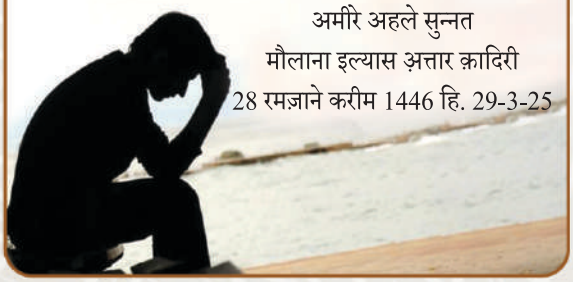

मुराद पूरी हो

يَا رَحْمٰنُ 11 बार

फ़र्ज़ या नफ़्ल रोज़ा खोलते वक़्त सूरज ग़ुरूब होने से मामूली वक़्त पहले पेशानी पर हाथ रख कर पढ़ लीजिये और वक़्त होने पर इफ़्तार कर लीजिये اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْكَرِيْم दिल की मुराद पूरी होगी।

अमीरे अहले सुन्नत
मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी
8 रमज़ाने करीम 1446 हि. 9-3-25

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

मई 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

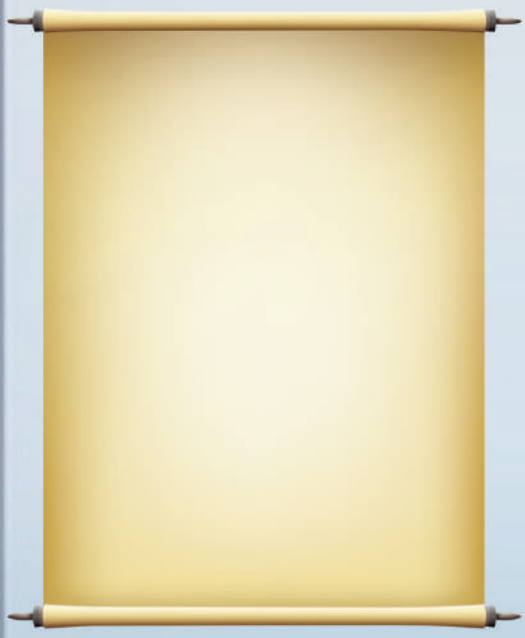

क़ुरआनो ह़दीस
- तक़्वा में तआवुन 3
- तोहमत व बोहतान 6

फ़ैज़ाने सीरत
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم का अन्दाज़े क़ुरबानी 10

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत
- क़ुरबानी के जानवरों को चादर पहनाना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 12

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत
- ग़ैर मुस्लिम से क़ुरबानी का जानवर ख़रीदने का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 14

मज़ामीन
- इस्लाम यतीमों का रखवाला 16
- अफ़्ज़ल अ़मल 18
- ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाली आंख का अज्रो सवाब 20
- तबक़ाते मुआ़शरा की तरबियत और इस्लाम 22
- बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 24

ताजिरों के लिये
- अह़कामे तिजारत 25

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
- ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ عنہ 27
- ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के 10 औसाफ़ 29
- ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رضی اللہ عنہما 31
- अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 32

मुतफ़र्रिक़
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم की ग़िज़ाएं (ककड़ी) 34
- चन्द क़दीम मदारिस व जामिआ़त 36

क़ारेईन के सफ़ह़ात
- नए लिखारी 38

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- जिस ने धोका दिया ! 42
- हड्डियों पर दस्ते मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم 43
- क़तरा क़तरा मोती 45
- बच्चों की मायूसी और वालिदैन की ज़िम्मेदारी 47

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक 49
- इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 51

क़ुरआनी तालीमात

तक़्वा में तअ़ावुन

क़ुरआने करीम ने "البرّ" और "التقوٰی" में बाहमी तअ़ावुन की तालीम दी है, "البر" यानी भलाई का क़ुरआनी मफ़्हूम गुज़श्ता शुमारे में बयान हुवा, आइये ! अब तक़्वा के बारे में क़ुरआनी बयान मुलाहज़ा करें :

तक़्वा का लुग़वी और इस्तिलाही माना लफ़्ज़ "**तक़्वा**" अ़रबी ज़बान के माद्दा "وق" से है जिस के माना बचाव और हिफ़ाज़त के हैं। इस्तिलाह में तक़्वा का मतलब येह है कि "अल्लाह करीम ने जिन कामों को करने का हुक्म दिया है उन को कर के और जिन से मना फ़रमाया है उन को न कर के अपने आप को उस के अ़ज़ाब से बचाया जाए।"[1]

क़ुरआने करीम में तक़्वा और इस के मुश्तक़ात तक़रीबन 200 से ज़ाइद मक़ामात पर आए हैं, येह इस्लाम का बुनियादी उसूल है। अल्लाह तअ़ाला ने तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को तक़्वा की तालीम दी, और येह तमाम शरीअ़तों का मुश्तरक उसूल है। चूंकि अल्लाह करीम ने अहले ईमान को हुक्म दिया है कि "**तक़्वा**" में एक दूसरे का साथ दें तो हमारे लिए येह जानना ज़रूरी है कि तक़्वा में क्या क्या शामिल है?

तक़्वा नमाज़ रोज़े और इ़बादात समेत एक मुकम्मल तर्ज़े ज़िन्दगी है जिस में हर अ़मल अल्लाह की रिज़ा के मुताबिक़ होता है। क़ुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ आयात में तक़्वा का इ़तलाक़ मुतअ़द्दिद आमाल और सिफ़ात पर हुवा, चुनान्चे

1 अ़क़ाइद की दुरुस्ती "तक़्वा" है सूरतुल बक़रह की इब्तिदाई आयात में "तक़्वा" का इ़तलाक़ अ़क़ाइद की दुरुस्ती पर हुवा है जिसे अल्लाह करीम ने मुत्तक़ीन की सिफ़ात के तौर पर बयान फ़रमाया : ﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛ فِیْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ ۙ(۲) الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ(۳) وَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ؕ(۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं और वोह कि ईमान लाएं इस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर यक़ीन रखें।[2]

तक़्वा की सब से पहली बुनियाद अ़क़ीदा है। जब अल्लाह तआ़ला ने मुत्तक़ियों की सिफ़ात बयान कीं तो सब से पहले "ग़ैब पर ईमान" का ज़िक्र फ़रमाया। ग़ैब वोह हक़ाइक़ हैं जिन का इदराक हवासे ज़ाहिरी से मुम्किन नहीं। अल्लाह तआ़ला की ज़ातो सिफ़ात, मलाइका, क़ियामत, जन्नत व जहन्नम, और आख़िरत के अहवाल। इन सब पर पुख़्ता ईमान रखना तक़्वा की पहली शर्त है। मज़ीद येह कि आयत में तमाम आस्मानी किताबों पर ईमान का भी ज़िक्र है यानी तौरैत, ज़बूर, इन्जील और क़ुरआन सभी पर ईमान लाना ज़रूरी है।

2 इ़बादात, नमाज़, रोज़ा और ज़कात की अदाएगी "तक़्वा" है तक़्वा का इ़तलाक़ इ़बादात पर भी होता है, सूरतुल बक़रह में अल्लाह तआ़ला ने पूरी इन्सानियत को मुख़ातब किया : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ(۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़गारी मिले।[3]

सूरतुल बक़रह की इब्तिदा में है : ﴿الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ(۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं।[4]

रोज़े के बारे में फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۱۸۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।[5]

इबादात का अस्ल मक़्सद तक़्वा का हुसूल है। इबादत अल्लाह की बन्दगी का नाम है और बन्दगी का मतलब येह है कि इन्सान अपनी तमाम ख़्वाहिशात, इरादों और आमाल को अल्लाह की मर्ज़ी के ताबेअ़ कर ले। येही तक़्वा का जौहर है। इबादत इस्लाम में सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा और ह़ज तक महदूद नहीं। इबादत का दायरा बहुत वसीअ़ है। अल्लाह का ज़िक्र, क़ुरआन की तिलावत, दुआ, तौबा, अस्तिग़फ़ार, अल्लाह की नेमतों पर शुक्र, बीमार की इयादत, मिस्कीन की मदद, मां बाप की ख़िदमत येह सब इबादत हैं जब येह अल्लाह की रिज़ा के लिए किये जाएं तो येह सब तक़्वा बन जाते हैं। इबादत और तक़्वा का येह तअ़ल्लुक़ समझने से इन्सान की पूरी ज़िन्दगी इबादत बन जाती है।

3 ईमान पर इस्तिक़ामत तक़्वा है ईमान लाना तक़्वा है, इबादात तक़्वा हैं, इसी तरह ईमान पर क़ाइम रहना भी तक़्वा है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَ لَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ(۱۰۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान।[6]

ईमान पर इस्तिक़ामत तक़्वा का वोह पहलू है जो सब से ज़ियादा आज़माइशों में ज़ाहिर होता है। जब दुनिया की चमक दमक ईमान को ललचाती हो, जब गुनाहों का रास्ता आसान नज़र आता हो, जब साथी, दोस्त या मुआशरा बुराई की तरफ़ बुला रहा हो उन तमाम ह़ालात में डटे रहना, ईमान पर क़ाइम रहना और इस्लाम को मज़बूती से थामे रखना और बिल आख़िर ईमान ही पर दुनिया से रुख़्सत होना येही ह़क़ीक़ी तक़्वा है।

4 इताअ़ते अम्बिया तक़्वा है इताअ़ते अम्बिया के बग़ैर तक़्वा का मफ़्हूम अधूरा है क्यूंकि येह अम्बियाए किराम ही हैं जिन्हों ने अह़कामे इलाही पहुंचाए, क़ुरआने करीम में कई अम्बियाए किराम ने अपनी क़ौमों को अपनी इताअ़त और तक़्वा का हुक्म इकट्ठा ज़िक्र फ़रमाया, जैसा कि सूरतुश्शुअरा में बहुत ही पुर तासीर अन्दाज़ है, ह़ज़रते नूह, ह़ज़रते हूद, ह़ज़रते सालेह़, ह़ज़रते लूत, और ह़ज़रते शुऐब عَلَیْهِمُ السَّلَام पांचों अम्बियाए किराम ने अपनी अपनी क़ौमों को तक़रीबन एक ही अल्फ़ाज़ में पुकारा : ﴿اَلَا تَتَّقُوْنَ﴾ क्या तुम डरते नहीं ? ﴿اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ﴾ बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का भेजा हुवा अमीन हूं ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ﴾ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो। इसी तरह ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام ने भी अपनी क़ौम को ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ﴾ फ़रमाया।

आज हमारे लिए इताअ़ते रसूल का मतलब है कि हम नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका को अपनी ज़िन्दगी में इख़्तियार करें, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन को दिल से मानें, और अपनी ख़्वाहिशात को सुन्नत के ताबेअ़ करें। जो शख़्स सुन्नते नबवी से मुंह मोड़ कर तक़्वा का दावा करे वोह धोके में है।

5 इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और सब्र तक़्वा है इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और सब्र को भी मुत्तक़ीन की सिफ़ात में ज़िक्र किया गया है कि येह भी तक़्वा हैं, सूरतुल बक़रह की आयते बिर में अल्लाह तआ़ला ने नेकी और तक़्वा का एक जामेअ़ नक़्शा इरशाद फ़रमाया है। इस आयत में मुतअ़द्दद आमाल के साथ साथ इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और हर ह़ाल में सब्र करने को मुत्तक़ीन की सिफ़ात बताया है : ﴿وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِ ۙ وَ السَّآىٕلِیْنَ وَ فِی الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِیْنَ فِی الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِیْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ(۱۷۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की महब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गर्दनें छूड़ाने में और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और येही परहेज़गार हैं।[7]

6 अ़द्लो इन्साफ़ तक़्वा है इस्लामी तालीमात में अ़द्लो इन्साफ़ की अहमियत इस क़दर बुनियादी है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे तक़्वा के क़रीब तरीन अ़मल क़रार दिया है : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِیْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ गवाही देते और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) इस

पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो इन्साफ़ करो वोह परहेज़गारी से ज़ियादा क़रीब है।[8]

येह बहुत बड़ा लम्हए फ़िक्रिया है कि जब क़ुरआन अ़द्ल को तक़्वा का क़रीब तरीन अ़मल बताता है तो इस का मत़लब येह हुवा कि ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी तक़्वा से दूर ले जाने वाला अ़मल है। आयत का एक इन्तिहाई अहम पहलू येह है कि दुश्मन के साथ भी इन्साफ़ करना ज़रूरी है। किसी क़ौम या गिरोह की दुश्मनी इन्साफ़ तर्क करने पर न उभारे।

7 हुदूदुल्लाह की पाबन्दी तक़्वा है अल्लाह करीम ने ह़लाल व ह़राम की जो हुदूद इरशाद फ़रमाई हैं उन की पाबन्दी करना भी तक़्वा है : ﴿تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَاؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ(۱۸۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह अल्लाह की ह़दें हैं उन के पास न जाओ अल्लाह यूंही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले।[9]

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानी ज़िन्दगी के लिए कुछ हुदूद मुक़र्रर फ़रमाई हैं जिन्हें **"हुदूदुल्लाह"** कहते हैं। येह हुदूद दरअस्ल अल्लाह की रह़मत का इज़्हार हैं जैसे एक मह़ब्बत करने वाले वालिदैन अपने बच्चे को नुक़्सान देह चीज़ों से रोकते हैं, इसी त़रह अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिए ऐसी ह़दें क़ाइम की हैं जो उन्हें दुन्यवी और उख़रवी नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रखती हैं। शराब, ज़िना, सूद, जुवा, ग़ीबत, चोरी येह सब अल्लाह की मम्नूआ़त हैं जिन के क़रीब जाना भी तक़्वा के ख़िलाफ़ है।

आयत में ग़ौर त़लब बात येह है कि फ़रमाया : ﴿فَلَا تَقْرَبُوْهَا﴾ उन के क़रीब भी न जाओ। येह नहीं फ़रमाया कि उन का इरतिकाब न करो बल्कि फ़रमाया कि उन के क़रीब तक न जाओ। उस में एक अहम तरबियती पहलू है। तक़्वा सिर्फ़ गुनाह से बचने का नाम नहीं बल्कि गुनाह के रास्ते, गुनाह के मवाक़ेअ़, और गुनाह के मोह़र्रिकात से भी बचने का नाम है। जो शख़्स शराब तो नहीं पीता लेकिन शराबियों की सोह़बत में बैठता है, वोह ह़द के क़रीब है। जो ज़िना तो नहीं करता लेकिन बे ह़याई की जगहों पर जाता है, वोह ह़द के क़रीब है। मुत्तक़ी वोह है जो हुदूद से दूर भागे, न कि उन की सरह़दों पर खेले।

8 ईफ़ाए अ़हद तक़्वा है क़ुरआने करीम ने ईफ़ाए अ़हद को तक़्वा के साथ जोड़ा है और उसे अल्लाह की मह़ब्बत का ज़रीआ़ बताया है :

﴿بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَ اتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ(۷۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां क्यूं नहीं जिस ने अपना अ़हद पूरा किया और परहेज़गारी की और बेशक परहेज़गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं।[10]

याद रखिए ! मुआ़शरे की अख़्लाक़ी बुनियाद वादे और अ़हद पर क़ाइम है। जब कोई शख़्स वादा पूरा करता है तो वोह दर ह़क़ीक़त अपनी ज़बान की हुर्मत क़ाइम करता है, अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करता है, और दूसरे का ह़क़ अदा करता है और येह सब तक़्वा के मज़ाहिर हैं। और जो वादा तोड़ता है वोह न सिर्फ़ बे ईमानी करता है बल्कि तक़्वा भी खो देता है।

तक़्वा मुकम्मल त़र्ज़े ज़िन्दगी है क़ुरआने करीम की मज़्कूरा बाला आयात का मुत़ालआ़ हमें येह अ़ज़ीम सबक़ देता है कि तक़्वा कोई मह़दूद या जुज़वी अ़मल नहीं बल्कि येह एक मुकम्मल, हमागीर और जामेअ़ त़र्ज़े ज़िन्दगी है। तक़्वा अ़क़ीदे में भी है और अ़मल में भी, इ़बादत में भी है और मुआ़मलात में भी, अख़्लाक़ में भी है और समाज में भी।

ह़क़ीक़ी मुत्तक़ी वोह है जिस का अ़क़ीदा दुरुस्त हो, जिस की नमाज़, रोज़ा और ज़कात बर वक़्त और मुकम्मल त़रीक़े से अदा हो, जो हर ह़ाल में ईमान पर साबित क़दम रहे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुकम्मल इत़ाअ़त करे, सब्रो इस्तिक़ामत का पैकर हो, हर फ़ैसले में अ़द्लो इन्साफ़ का दामन थामे, हर क़दम पर अल्लाह की बन्दगी को याद रखे, हुदूदुल्लाह की पूरी पाबन्दी करे, और अपने वादे और अ़हद का वफ़ादार हो। येह सब मिल कर तक़्वा बनते हैं और तक़्वा दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी की ज़मानत है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : ﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।[11] यानी अल्लाह के हां इ़ज़्ज़त का मेयार नस्ल, रंग, ज़बान, दौलत या मन्सब नहीं बल्कि तक़्वा है। पस अगर हम अल्लाह की नज़र में मुअ़ज़्ज़ज़ होना चाहते हैं और हर मोमिन की येही ख़्वाहिश होनी चाहिये तो हमें तक़्वा की राह इख़्तियार करनी होगी और तक़्वा के तमाम पहलूओं को अपनी ज़िन्दगी में समेटना होगा।

अल्लाह हम सब को तक़्वा इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) دلیل الفالحین، 2/24، تحت الحدیث:236 (2) پ1، البقرۃ:2تا4 (3) پ1، البقرۃ:21 (4) پ1، البقرۃ:3 (5) پ2، البقرۃ:183 (6) پ4، اٰل عمرٰن:102 (7) پ2، البقرۃ:177 (8) پ6، المآئدۃ:8 (9) پ2، البقرۃ:187 (10) پ3، اٰل عمرٰن:76 (11) پ26، الحجرات:13۔

लो मदीने का फूल लाया हूं
मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं

शर्ह़े ह़दीसे रसूल

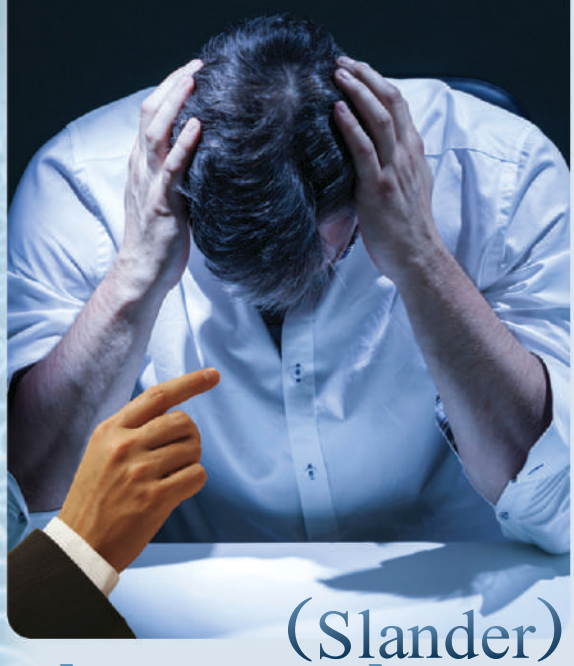

(Slander)

तोहमत व बोहतान

किसी मुसलमान का बुराइयों और गुनाहों में मुब्तला होना बिलाशुबा बुरा है लेकिन किसी पर गुनाहों और बुराइयों का झूटा इल्ज़ाम लगाना इस से कहीं ज़ियादा बुरा है। हमारे मुआशरे में जो बुराइयां नासूर की त़रह़ फैल रही हैं उन में से एक तोहमत व बोहतान यानी झूटा इल्ज़ाम लगाना भी है। मुस्लिम शरीफ़ में है :

عَنْ اَبِی هُرَیْرَةَ، اَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: اَتَدْرُونَ مَا الْغِیبَةُ قَالُوا: اللّٰهُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا یَكْرَهُ قِیلَ اَفَرَاَیْتَ اِنْ كَانَ فِی اَخِی مَا اَقُولُ؟ قَالَ: اِنْ كَانَ فِیهِ مَا تَقُولُ، فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وَاِنْ لَمْ یَكُنْ فِیهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ

तर्जमा : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो ग़ीबत क्या है? अ़र्ज़ की : अल्लाह और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं। फ़रमाया : तुम अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करो जिसे वोह नापसन्द करता है। अ़र्ज़ की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो? फ़रमाया : जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की ग़ीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर बोहतान बांधा।[1]

ह़दीसे पाक की वज़ाह़त

येह फ़रमान बहुत वसीअ़ है। जब साइल ने पूछा कि जो ऐ़ब मैं बयान कर रहा हूं अगर वोह ऐ़ब उस में मौजूद हो तो क्या तब भी ग़ीबत होगी? इस के जवाब में हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कुछ तू बयान कर रहा है अगर वोह तेरे भाई में मौजूद है तभी तो वोह ग़ीबत है और अगर वोह बात उस में न हो जो तू ने बयान की तब तो तू ने उस पर बोहतान लगा दिया।

इस फ़रमाने आ़ली की नफ़ासत पर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه ! क्या नफ़ीस जवाब है कि ग़ीबत सच्चे ऐ़ब बयान करने को कहते हैं और बोहतान झूटे ऐ़ब बयान करने को। ग़ीबत होता है सच, मगर है ह़राम, अक्सर गालियां सच्ची होती हैं मगर हैं बेह़याई व ह़राम, हर सच ह़लाल नहीं होता, ख़ुलासा येह है कि ग़ीबत एक गुनाह है बोहतान दो गुनाह।[2]

बोहतान की तारीफ़ और शरई़ हुक्म

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लियुल क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने बोहतान की तारीफ़ इन अल्फ़ाज़ में की : وَهُوَ كَذِبٌ عَظِيمٌ يُبْهَتُ فِيهِ مَنْ يُقَالُ فِي حَقِّهِ बोहतान ऐसा बड़ा झूट है जिसे सुन कर आदमी ह़ैरान रह जाता है।[3]

आला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : किसी मुसलमान को तोहमत लगानी ह़रामे क़त़ई है ख़ुसूसन مَعَاذَ اللّٰه अगर तोहमते ज़िना हो।[4]

तोहमत की 5 सज़ाएं

1 सूरतुन्निसा में है : ﴿وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई ख़ता या गुनाह कमाए फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप दे उस ने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह उठाया।[5]

2 नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को अल्लाह पाक उस वक़्त तक रदग़तुल ख़बाल में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।[6] रदग़तुल ख़बाल जहन्नम में एक जगह है जहां जहन्नमियों का ख़ून और पीप जमा होगा।[7]

3 झूटे इल्ज़ामात लगाने वालों का अन्जाम जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को ज़बानों से लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर बिला वज्ह इल्ज़ामे गुनाह लगाने वाले हैं।[8]

4 तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम में मुफ़्लिस (यानी ग़रीब मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और ना ही कोई माल। इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फ़ुलां को गाली दी होगी, फ़ुलां पर तोहमत लगाई होगी, फ़ुलां का माल खाया होगा, फ़ुलां का ख़ून बहाया होगा और फ़ुलां को मारा होगा। पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का ह़िस्सा दे दिया जाएगा। अगर उस के ज़िम्मे आने वाले हुक़ूक़ पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिए जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।[9]

5 किसी औ़रत पर बदकारी का झूटा इल्ज़ाम लगाना ज़ियादा ख़तरनाक है लेकिन बाज़ बेबाक (Brazen) लोग येह भी कर गुज़रते हैं और इतना नहीं सोचते कि उस औ़रत और उस के घर वालों पर क्या गुज़रेगी ! जो किसी औ़रत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाए और चार गवाहों की मदद से उसे साबित न कर सके तो उस की शरई सज़ा "**ह़दे क़ज़्फ़**" है यानी सुल्ताने इस्लाम या क़ाज़िये शरअ़ के हुक्म से उसे 80 कोड़े मारे जाएंगे। इस का उख़रवी नुक़्सान भी सुन लीजिये, चुनान्चे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ قَذْفَ الْمُحْصَنَةِ يَهْدِمُ عَمَلَ مِائَةِ سَنَةٍ यानी किसी पाक दामन औ़रत पर ज़िना की तोहमत लगाना सौ साल की नेकियों को बरबाद करता है।[10] फ़ैज़ुल क़दीर में है : यानी अगर बिलफ़र्ज़ वोह शख़्स सौ साल तक ज़िन्दा रह कर इबादत करे तो भी येही बोहतान उस के उन आमाल को ज़ाएअ़ कर देगा।[11]

तोहमत की 4 ह़िकायात

1 बुज़ुर्ग पर चोरी की तोहमत लगा दी मक्कए मुकर्रमा में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه आराम फ़रमा रहे थे। उन के क़रीब एक आदमी सोया हुवा था जिस के पास सिक्कों की थैली थी। जब वोह बेदार हुवा तो थैली ग़ाइब थी। उस ने उन बुज़ुर्ग पर चोरी की तोहमत लगा दी। उन्हों ने पूछा : तुम्हारी थैली में कितने सिक्के थे ? उस ने सिक्के बताए तो वोह बुज़ुर्ग उस आदमी को अपने घर ले गए और सिक्के उस के ह़वाले कर दिए। बाद में उसे मालूम हुवा कि दोस्तों ने बत़ौरे शरारत सिक्के छुपा लिए थे। वोह शख़्स अपने दोस्तों के साथ उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और सिक्के लौटाना

चाहे तो उन्हों ने लेने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया : इसे रख लो ! येह तुम्हारे लिए ह़लाल हैं क्यूंकि हम जिस माल को राहे ख़ुदा में देते हैं उसे वापस नहीं लेते। जब उन लोगों का इसरार बढ़ा तो बुज़ुर्ग ने अपने बेटे को बुलाया और थैलियों में रखवा कर तमाम सिक्के तक़्सीम करवा दिए।[12]

2 गवर्नर पर तोहमत व बोहतान लगाने का अन्जाम ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर एक शख़्स ने तीन झूटे इल्ज़ामात लगाए :

(1) येह लश्करे इस्लाम के साथ जिहाद में शरीक नहीं होते

(2) माले ग़नीमत बराबर तक़्सीम नहीं करते

(3) मुक़द्दमात का फ़ैसला करने में अ़द्ल से काम नहीं लेते।

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : सुनो ! अल्लाह की क़सम ! मैं उस के ख़िलाफ़ तीन दुआ़एं करता हूं : या अल्लाह ! अगर तेरा येह बन्दा झूटा है, दिखाने और सुनाने के लिए खड़ा हुवा है तो

(1) उस की उ़म्र दराज़ फ़रमा दे

(2) उस के फ़क़्र में इज़ाफ़ा फ़रमा दे और

(3) उसे फ़ित्नों में मुब्तला फ़रमा।

जब कोई इस से इस का ह़ाल पूछता तो वोह कहा करता था : मैं क्या बताऊं ? मैं वोह बूढ़ा हूं जो फ़ित्नों में मुब्तला हूं क्यूंकि मुझ को ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बददुआ लग गई है। ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है : इस दुआ़ का मैं ने येह असर देखा कि "**अबू सअ़दा**" नामी वोह शख़्स इस क़दर बूढ़ा हो चुका था कि बुढ़ापे की वज्ह से उस की दोनों भवें उस की दोनों आंखों पर लटक पड़ी थीं, वोह दरबदर भीक मांग कर इन्तिहाई फ़क़ीरी और मोह़ताजी की ज़िन्दगी बसर करता था और इस बुढ़ापे में भी वोह राह चलती हुई जवान लड़कियों को छेड़ता और उन के बदन में चुटकियां भरता रहता था।[13]

इस ह़िकायत से लोगों पर झूटे इल्ज़ाम लगाने के आ़दी अफ़राद को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये कि जो मौक़अ़ की नज़ाकत से फ़ायदा उठाते हुए दूसरों पर झूटे इल्ज़ाम लगाना शुरूअ़ कर देते हैं, न उस के मन्सब का लिह़ाज़ रखते हैं न रुत्बे का ख़याल, शायद ऐसा करने वालों के दिलो दिमाग़ में एक ही बात समाई होती है कि "हम भी मुंह में ज़बान रखते हैं" उन्हें डरना चाहिये कि हमारे साथ भी इसी त़रह़ मुकाफ़ाते अ़मल हो सकता है जैसा उस बूढ़े के साथ हुवा।

3 तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए एक शख़्स ने किसी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन्हें उन के दोस्त की कुछ मन्फ़ी (Negative) बातें बताईं, इस पर उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : अफ़सोस ! तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए:

(1) मुझे मेरे इस्लामी भाई से नफ़रत दिलाई

(2) इस वजह से मेरे दिल को (तश्वीशों और वस्वसों में) मश्ग़ूल किया और

(3) अपने अमीन नफ़्स पर तोहमत लगाई। (यानी मैं तुम्हें अमानतदार समझता था मगर तुम तो पेट के हल्के निकले !)[14]

4 लड़की ने फांसी ले ली दुश्मनी, ह़सद, रास्ते से हटाने, बदला लेने, सस्ती शोहरत ह़ासिल करने की कैफ़िय्यात में गुम हो कर तोहमत व बोहतान तराशी करने वाले तो इल्ज़ाम लगाने के बाद अपनी राह लेते हैं लेकिन जिस पर झूटा इल्ज़ाम लगा वोह बक़िय्या ज़िन्दगी रुस्वाई और बदनामी का सामना करता रहता है और बाज़ औक़ात येही झूटा इल्ज़ाम ग़लत़ फ़हमी की बिना पर भी लगा दिया जाता है। जालन्धर में एक बारहवीं जमाअ़त की त़ालिबा ने स्कूल में ख़ुदकुशी करली। रिपोर्टस के मुताबिक़ एक उस्ताद ने उस पर पैसों की चोरी का इल्ज़ाम लगाया था, जिस के बाद वोह शदीद ज़ेहनी दबाव का शिकार हो गई। बाद में मालूम हुवा कि इल्ज़ाम ग़लत़ था, लेकिन उस से पहले ही त़ालिबा ने स्कूल के एक कमरे में ख़ुद को फांसी दे दी। पुलिस ने वाक़िए की तह़क़ीक़ात शुरूअ़ कर दी हैं।[15]

तोहमत के मक़ामात से बचो

मुसलमान को ऐसी जगहों, ह़ालात और कामों से बचना चाहिये जहां इस पर तोहमत या बद गुमानी हो सकती हो। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ज़ौजा मोह़तरमा ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के साथ जा रहे थे तो दो सह़ाबी गुज़रे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वज़ाहत फ़रमाई कि येह मेरी ज़ौजा सफ़िय्या हैं, ताकि कोई ग़लत़ गुमान न करे: اِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِى مِنَ الْاِنْسَانِ مَجْرَى الدَّمِ، وَاِنِّىْ خَشِيْتُ اَنْ يَّقْذِفَ فِىْ قُلُوْبِكُمَا شَيْئًا तर्जमा : बेशक शैत़ान इन्सान के अन्दर इस त़रह़ गर्दिश करता है जैसे ख़ून गर्दिश करता है, और मुझे अन्देशा हुवा कि वोह तुम दोनों के दिलों में कोई शै न डाल दे।[16]

तोहमत व बोहतान से तौबा ज़रूरी है

सदरुश्शरीआ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बोहतान की सूरत में तौबा करना और मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने बोहतान बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने झूट कहा था जो फ़ुलां पर मैं ने बोहतान बांधा था।[17]

ह़सद, वादा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबत व तोहमत
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह[18]
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी[19]

---

(1)مسلم، ص1071، حدیث:6593(2)دیکھئے:مراٰۃ المناجیح،6/456(3)مرقاۃ المفاتیح،8/572، تحت الحدیث:4829(4)فتاویٰ رضویہ،24/386(5)پ5، النسآء:112(6)ابوداؤد،3/427، حدیث:3597(7)دیکھیے:مراٰۃ المناجیح،5/313 (8)شرح الصدور، ص183(9)مسلم، ص1069، حدیث:6579(10)معجم کبیر، 3/168، حدیث: 3023 (11)فیض القدیر، 2/601، تحت الحدیث: 2340 (12)احیاء العلوم،4/349(13)بخاری،1/266، حدیث:755(14)احیاء العلوم، 3/193(15)The times of india 3march(16)دیکھئے:بخاری،1/668، حدیث:2023 (17)بہارِ شریعت، 3/538 (18)وسائل بخشش، ص332 (19)وسائلِ بخشش، ص712۔

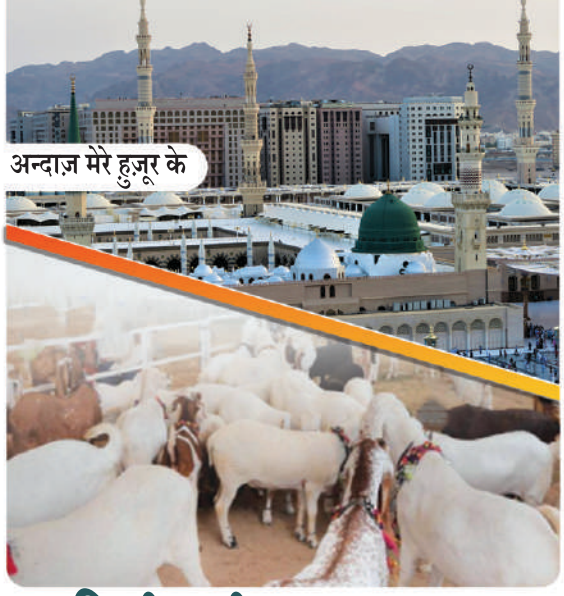

आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم मुहम्मदे अ़रबी का अन्दाज़े क़ुरबानी

अ़मल (Action) की तासीर अल्फ़ाज़ से कई गुना ज़ियादा होती है, अच्छी बातें कह तो दी जाती हैं सिर्फ़ उन पर अ़मल करना बाक़ी बचता है और जब "कहे हुए" को "किया हुवा" बना दिया जाए तो सोसायटी में ख़ामोश इन्क़िलाब बरपा हो जाता है। इस नुक़्ते को ज़ेहन में रख कर सीरते मुस्तफ़ा को नज़रों के सामने लाइये, आप को अहादीस में आमाले मुस्तफ़ा के कई मनाज़िर भी पूरी आबो ताब के साथ नज़र आएंगे, इन्ही में से एक मन्ज़र रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े क़ुरबानी भी है, आइये ! इसे मुलाहज़ा कीजिए :

यौमे क़ुरबानी की अहमिय्यत अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मुबारक दिन की अहमिय्यत यूं बयान फ़रमाई : اِنَّ اَعْظَمَ الْاَیَّامِ عِنْدَ اللّٰہِ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی یَوْمُ النَّحْرِ، ثُمَّ یَوْمُ الْقَرِّ यानी अल्लाह के नज़्दीक सब से अ़ज़ीम दिन क़ुरबानी का दिन (यानी 10 ज़ुल हिज्जा) है, फिर इस के बाद वाला दिन (यानी 11 ज़ुल हिज्जा)।[1]

क़ुरबानी करने की अहमिय्यत अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुरबानी की अहमिय्यत यूं बयान फ़रमाई : 1 क़ुरबानी करने वाले को क़ुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले में एक नेकी मिलती है।[2] 2 जिस ने ख़ुशदिली से त़ालिबे सवाब हो कर क़ुरबानी की, तो वोह आतशे जहन्नम से हिजाब (यानी रोक) हो जाएगी।[3] 3 जिस शख़्स में क़ुरबानी करने की वुस्अ़त हो फिर भी वोह क़ुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह के क़रीब न आए।[4]

क़ुरबानी है क्या ? सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! येह क़ुरबानियां क्या हैं ? फ़रमाया : तुम्हारे बाप इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत हैं। सहाबा ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! इन में हमारे लिए क्या सवाब है ? फ़रमाया : हर बाल के बदले एक नेकी है। अ़र्ज़ किया : और उन में ? फ़रमाया : उस के हर बाल के बदले भी एक नेकी है।[5]

क़ुरबानी नमाज़े ईद के बाद की जाए रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ईदे क़ुरबां के दिन नमाज़ पढ़ी फिर ख़ुत्बा पढ़ा फिर क़ुरबानी की और फ़रमाया : जिस ने नमाज़ से पहले क़ुरबानी कर ली वोह उस की जगह दूसरी क़ुरबानी करे और जिस ने (नमाज़ से पहले) क़ुरबानी न की हो तो वोह अल्लाह के नाम पर क़ुरबानी करे।[6]

हज़रते बरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से पहले जो काम आज हम करेंगे वोह येह है कि नमाज़ पढ़ें फिर उस के बाद क़ुरबानी करेंगे जिस ने ऐसा किया उस ने हमारी सुन्नत (त़रीक़ा) को पा लिया और जिस ने पहले ज़ब्ह कर लिया वोह गोश्त है जो उस ने पहले से अपने घर वालों के लिए तय्यार कर लिया क़ुरबानी से उसे कुछ तअ़ल्लुक नहीं।[7]

मक़ामे क़ुरबानी का इन्तिख़ाब हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईदगाह में ज़ब्ह व नह्र फ़रमाते थे।[8]

आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ईदगाह के क़रीब क़ुरबानी के जानवर को ज़ब्ह करने या नह्र करने की वजह येह है कि आप (क़ुरबानी का वक़्त शुरूअ़ होने की) ख़बर देने के लिए ऐसा करते थे ताकि लोग आप को देख कर अपनी क़ुरबानियां करना शुरूअ़ कर दें।[9] याद रहे कि क़ुरबानी शिआ़रे इस्लाम में से है, इस का इज़्हार मज्मए़ आ़म में अफ़्ज़ल है ताकि लोग देखें और क़ुरबानी की सुन्नत की अहमिय्यत का इज़्हार हो।[10] नीज़ येह भी ज़रूरी है कि क़ुरबानी के साथ सफ़ाई का भी पूरा पूरा एहतिमाम किया जाए ताकि हुक़ूक़े आ़म्मा तल्फ़ ना हों।

क़ुरबानी कैसे फ़रमाई ? इस सिल्सिले में चन्द रिवायतें मुलाहज़ा कीजिए :

1 हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो चितकबरे सींग वाले मेंढों की क़ुरबानी की कि उन्हें अपने हाथ से ज़ब्ह किया, बिस्मिल्लाह व तक्बीर कही। हज़रते अनस मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं ने आप को उन मेंढों की करवटों पर अपना क़दम रखे देखा, आप फ़रमाते थे : بِسۡمِ اللّٰہِ وَاللّٰہُ اَکۡبَر[11]

2 हज़रते आइशा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि सींग वाला मेंढा लाया जाए जो सियाही में चलता हो और सियाही में बैठता हो और सियाही में नज़र करता हो (यानी इस के पांव सियाह हों और पेट सियाह हो और आंखें सियाह हों) आप की ख़िदमत में हाज़िर किया गया ताकि उस की क़ुरबानी करें। आप ने फ़रमाया : आइशा ! छुरी लाओ। फिर फ़रमाया : इसे पत्थर पर तेज़ कर लो। मैं ने कर लिया, फिर आप ने छुरी पकड़ी, मेंढे को लिटाया और उसे ज़ब्ह किया फिर फ़रमाया :

بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ تَقَبَّلۡ مِنۡ مُّحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّمِنۡ اُمَّۃِ مُحَمَّدٍ

यानी अल्लाह के नाम से (शुरूअ़), इलाही ! इसे मुहम्मद व आले मुहम्मद और उम्मते मुहम्मद की तरफ़ से क़बूल फ़रमा। फिर उस की क़ुरबानी की।[12]

3 नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी प्यारी बेटी हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا से फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! अपनी क़ुरबानी के पास मौजूद रहो क्यूंकि जैसे ही तुम्हारी क़ुरबानी के ख़ून का पहला क़तरा गिरेगा तुम्हारे सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे।[13]

क़ुरबानी के वक़्त की जाने वाली दुआ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ब्ह के वक़्त जानवर को क़िब्ला रुख़ कर के येह दुआ पढ़ी : اِنِّیۡ وَجَّھۡتُ وَجۡھِیَ لِلَّذِیۡ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ عَلٰی مِلَّۃِ اِبۡرَاھِیۡمَ حَنِیۡفًا، وَمَا اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ، اِنَّ صَلَاتِیۡ وَنُسُکِیۡ وَمَحۡیَایَ وَمَمَاتِیۡ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ لَاشَرِیۡکَ لَہٗ، وَبِذٰلِکَ اُمِرۡتُ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ، اَللّٰھُمَّ مِنۡکَ وَلَکَ، عَنۡ مُحَمَّدٍ وَّاُمَّتِہٖ بِسۡمِ اللّٰہِ، وَاللّٰہُ اَکۡبَر यानी मैं ने ख़ुद को उस की तरफ़ मुतवज्जेह किया जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये दीने इब्राहीमी पर हों, हर बेदीनी से अलग, मुश्रिकों में से नहीं हों, यक़ीनन मेरी नमाज़ मेरी क़ुरबानी मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत रब्बुल आ़लमीन के लिए है, उस का कोई शरीक नहीं मुझे उसी का हुक्म मिला और मैं इताअ़त गुज़ारों से हूं, इलाही ! येह तेरी तौफ़ीक़ से, तेरी बारगाह में (येह क़ुरबानी पेश है), मुहम्मद मुस्तफ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उन की उम्मत की तरफ़ से है।[14]

क़ुरबानी के जानवर की तक़्सीम कारी अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबा के दरमियान बकरियां तक़्सीम फ़रमाईं ताकि सहाबा अपनी तरफ़ से बकरियों की क़ुरबानी कर सकें।[15]

अल्लाह ने जिन लोगों को नवाज़ा है वोह जानवर ख़रीद कर ग़रीबों में यूं बांटने लग जाएं तो ईद की ख़ुशी बहुत तेज़ी से सोसाइटी में फैलेगी और शिआ़रे क़ुरबानी भी ज़ियादा आ़म होगा।

उम्मत की तरफ़ से क़ुरबानी अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दो जानवरों की क़ुरबानी फ़रमाई, एक की क़ुरबानी कर के येह दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰھُمَّ مِنۡکَ وَاِلَیۡکَ اَللّٰھُمَّ اِنَّ ھٰذَا عَنۡ مُحَمَّدٍ وَّاَھۡلِ بَیۡتِہٖ

यानी ऐ अल्लाह ! येह तेरी तौफ़ीक़ से, तेरी बारगाह में (येह क़ुरबानी पेश है), ऐ अल्लाह ! येह मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उस के घर वालों की तरफ़ से है।

फिर दूसरे की क़ुरबानी कर के येह दुआ़ फ़रमाई :

بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ مِنۡکَ وَاِلَیۡکَ اَللّٰھُمَّ ھٰذَا عَمَّنۡ وَحَّدَکَ مِنۡ اُمَّتِیۡ

यानी अल्लाह के नाम से (शुरूअ़), ऐ अल्लाह ! तेरी तौफ़ीक़ से, तेरी बारगाह में (येह क़ुरबानी पेश है), ऐ अल्लाह ! येह मेरी उम्मत में से उन लोगों की तरफ़ से है जो तुझे एक मानते हैं।[16]

क़ुरबानी करने की वसिय्यत मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा शेरे ख़ुदा हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہ क़ुरबानी में दो जानवर ज़ब्ह फ़रमाते, जब आप से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया :

اِنَّ رَسُوۡلَ اللّٰہِ صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم اَوۡصَانِیۡ اَنۡ اُضَحِّیَ عَنۡہُ فَاَنَا اُضَحِّیۡ عَنۡہُ

यानी मुझे अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वसिय्यत फ़रमाई कि मैं आप की तरफ़ से भी क़ुरबानी किया करूं इस लिए मैं आप हुज़ूर की तरफ़ से क़ुरबानी करता हूं।[17]

अल्लाह करीम हमें भी क़ुरबानी के येह अन्दाज़ अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)ابوداؤد، 2/211، حدیث: 1765(2)ترمذی، 3/162، حدیث:1498
(3)معجم کبیر، 3/84، حدیث: 2736(4)ابن ماجہ، 3/529، حدیث:3123
(5)ابن ماجہ، 3/531، حدیث: 3127(6)بخاری، 1/338، حدیث:985
(7)بخاری،3/571، حدیث:5545(8)بخاری،1/338، حدیث:982(9)دیکھیے: ضیاء الساری،9/343(10)فیوض الباری،4/96(11)مسلم، ص837، حدیث: 5088(12)مسلم، ص837، حدیث:5091(13)سنن کبری للبیہقی،9/476، حدیث:19161(14)ابوداؤد،3/126، حدیث:2795(15)دیکھیے: مسلم، ص837، حدیث:5086،5085(16)حلیۃ الاولیاء،8/190، حدیث:11848
(17)ابوداؤد، 3/124، حدیث:2790۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 8 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 नमाज़ में वस्वसे आते हों तो क्या करें ?

सुवाल : नमाज़ में वस्वसे आते हों तो क्या किया जाए ?

जवाब : नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले उल्टे कन्धे की त़रफ़ तीन मरतबा इस त़रह़ थुत्कारें कि न थूक उड़े, न आवाज़ बुलन्द हो : फिर لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़ लें नीज़ नमाज़ में जहां देखना मुस्तह़ब है वहां नज़र रखें मसलन क़ियाम में सज्दे की जगह पर, रुकूअ़ में पुश्ते क़दम यानी पांव के ऊपरी हिस्से पर, सज्दे में नाक की त़रफ़, अत्तहि़य्यात में गोद में, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم वस्वसों से नजात ह़ासिल होगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 11 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

2 ह़ज़राते इब्राहीम व इस्माई़ल عَلَيْهِمَا السَّلَام के अल्क़ाबात

सुवाल : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام के अल्क़ाबात बता दीजिए।

जवाब : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब ख़लीलुल्लाह और ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब ज़बीहुल्लाह है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का एक लक़ब अबुल अम्बिया और मेहमान नवाज़ होने की वज्ह से अबुज़्ज़ैफ़ान भी है मगर ख़लीलुल्लाह लक़ब ज़ियादा मश्हूर है।

(मदनी मुज़ाकरा, 16 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

3 क़ुरबानी करने वाले की नेकियां

सुवाल : क़ुरबानी करने वाले को कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब : क़ुरबानी करने वाले को क़ुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले में एक नेकी मिलती है। (دیکھئے: ترمذی، 3/162، حدیث: 1498- - मदनी मुज़ाकरा, यकुम ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 1441 हि.)

4 क़ुरबानी के जानवरों को चादर पहनाना कैसा ?

सुवाल : क्या क़ुरबानी के जानवर को चादर पहनाने से सवाब मिलेगा ?

जवाब : जी हां ! क़ुरबानी के जानवर को ताज़ीम की निय्यत से ख़ूबसूरत चादर पहनाने से सवाब मिलेगा। अगर बग़ैर किसी निय्यत के चादर पहनाई या वोह जानवर क़ुरबानी का न हो तब भी जाइज़ है।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1441 हि.)

5 व्हील चेयर मस्जिद में लाना कैसा ?

सुवाल : बाज़ लोग Wheel chair (माज़ूरों की कुर्सी) मस्जिद में ले कर आते हैं और वोही Wheel chair बाहर भी घूम रही होती है। इस बारे में क्या एह़तियातें करनी चाहिएं ?

जवाब : जब यक़ीनी मालूमात हो कि येह नापाक पानी से गुज़री है और पाक नहीं की गई तब तो मस्जिद में न लाई जाए। अगर इस में कोई मैल कुचैल नज़र आ रहा है जिस से मस्जिद का फ़र्श

आलूदा हो सकता हो तो भी न लाएं। अगर ख़ुश्क हो तो उस का दारो मदार उ़र्फ़ पर है, जैसे लोग ह़रमैन शरीफ़ैन में Wheel chair ले जाते हैं, क्यूंकि वहां का उ़र्फ़ है। जब येह पाक हो तो उसे धोने का हुक्म नहीं दे सकते कि माज़ूर आदमी Wheel chair कैसे धोएगा ! नापाक पहिये तो मस्जिदे नबवी शरीफ़ के फ़र्श पर घुमाने की इजाज़त नहीं मिलेगी। हां ! अगर नापाक नहीं हैं और नापाक होने का पता भी नहीं है तो पाक है। सुवाल करने वाले ने हो सकता है ह़रमैन शरीफ़ैन का मन्ज़र देखा हो और उसी के बारे में पूछा हो, क्यूंकि हमारे यहां Wheel chair पर ग़ालिबन किसी को मस्जिद नहीं ले जाते, मैं ने कभी किसी को नहीं देखा। (देखिये : मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

6 मुआ़फ़ी मांगने का अन्दाज़ कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : मुआ़फ़ी मांगने का अन्दाज़ कैसा होना चाहिये ? अगर किसी ने दिल से अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ न किये हों तो क्या फिर भी हमारी मुआ़फ़ी हो जाएगी ?

जवाब : अगर किसी की मख़्सूस मुआ़मले में ह़क़ तल्फ़ी की गई और इस से मुआ़फ़ी मांगी गई और उस ने मुआ़फ़ कर दिया तो मुआ़फ़ी हो जाएगी, अब उस का दिल चीर कर देखने की ज़रूरत नहीं। हम ख़्वाह मख़्वाह येह वस्वसे क्यूं पालें कि उस ने दिल से मुआ़फ़ नहीं किया, हां मुआ़फ़ी इस अन्दाज़ से मांगी जाए जैसा मुआ़फ़ी मांगने का ह़क़ है। येह नहीं कि उस को मज़ीद तक्लीफ़ दे कर मुआ़फ़ी का मुत़ालबा किया जाए मसलन मुआ़फ़ करते हो या नहीं ? अब क्या तुम्हारे पैर पकड़ूं ? वग़ैरा। जिस ने सब के सामने किसी को बेइ़ज़्ज़त किया था तो उसे चाहिये कि सब के सामने मुआ़फ़ी मांगे, येह नहीं कि कान में हल्के से Sorry बोल दिया। जिस से मुआ़फ़ी मांगी जा रही है उस को भी महसूस हो कि मुझ से वाक़ेई़ मुआ़फ़ी मांगी गई है। (मदनी मुज़ाकरा, 9 मुह़र्रमुल ह़राम 1440 हि.)

7 क़ुर्बे इलाही का बेहतरीन ज़रीआ़

सुवाल : अल्लाह पाक का क़ुर्ब ह़ासिल करने के लिए कौन सा वज़ीफ़ा ज़ियादा पढ़ना चाहिये ?

जवाब : पांच वक़्त की नमाज़ पढ़नी चाहिये, क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करने का इस से बेहतर कोई और ज़रीआ़ नहीं है। फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नत नमाज़ें पढ़िये फिर नवाफ़िल पढ़ कर अल्लाह पाक का क़ुर्ब (यानी नज़्दीकी) ह़ासिल कीजिए। अगर कोई शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ें न पढ़े मगर नवाफ़िल पढ़े तो वोह नवाफ़िल क़ुर्ब का ज़रीआ़ कैसे बनेंगे ! ह़दीसे पाक में भी इस त़रह़ का इरशाद मौजूद है कि बन्दा फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल पढ़ता रहे तो फिर उसे अल्लाह पाक का क़ुर्ब ह़ासिल हो जाता है।[1] लिहाज़ा फ़र्ज़ नमाज़ ही नहीं बल्कि फ़राइज़ इ़बादात के ज़रीए क़ुर्ब ह़ासिल करना यानी जिस पर रोज़ा फ़र्ज़ है वोह रोज़ा रखता हो और जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है तो वोह ज़कात की अदाएगी भी करता हो वग़ैरा।

(मदनी मुज़ाकरा, पहली रबिउ़ल अव्वल 1442 हि.)

8 चश्मे की मछली खाना कैसा ?

सुवाल : बाज़ अ़लाक़ों में कहा जाता है कि चश्मे की मछली खाना जाइ़ज़ नहीं तो क्या चश्मे की मछली ह़लाल है ?

जवाब : जो पानी क़ुदरती त़ौर पर ज़मीन और पहाड़ों से उबलता है उसे चश्मा या पानी का सोता कहा जाता है और गुजराती ज़बान में उसे "झरणां" कहते हैं। बहरह़ाल चश्मे की मछली ह़लाल है, उसे खाने में कोई ह़रज नहीं है। जो चश्मे की मछली को ह़राम कहते हैं वोह ग़लत़ फ़हमी और मालूमात की कमी की वजह से ऐसा कह रहे होंगे। (मदनी मुज़ाकरा, 24 ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1440 हि.)

---

(1) ह़दीसे क़ुदसी में है : जिस ने मेरे किसी वली से अ़दावत की उस से मेरा एलाने जंग है, बन्दा किसी शै से इस क़दर क़ुर्ब ह़ासिल नहीं करता जितना फ़राइज़ से करता है और नवाफ़िल के ज़रीए से हमेशा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस बन्दे को अपना महबूब (यानी प्यारा) बना लेता हूं और जब मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है और उस की आंखें बन जाता हूं जिस से वोह देखता है। जब वोह मुझ से किसी चीज़ का सुवाल करता है तो मैं उसे अ़ता करता हूं और जब वोह मुझ से पनाह मांगता है तो मैं उसे पनाह देता हूं। (دیکھیے: بخاری، 4/248، حدیث: 6502)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अमल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से छे मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 ग़ैर मुस्लिम से क़ुरबानी का जानवर ख़रीदने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ईसाई ब्योपारी से क़ुरबानी का जानवर ख़रीदने का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ख़रीदो फ़रोख़्त दुरुस्त वाक़ेअ होने के लिए आक़िदैन का मुसलमान होना शर्त नहीं, काफ़िर से भी ख़रीदो फ़रोख़्त करना शरअन जाइज़ है, लिहाज़ा ईसाई ब्योपारी से क़ुरबानी का जानवर ख़रीदना शरअन जाइज़ है, जब कि वोह जानवर क़ुरबानी के लाइक़ हो और उस में क़ुरबानी दुरुस्त होने की तमाम तर शराइत पाई जाती हों। (بدائع الصنائع فی ترتیب الشرائع، 5/135- फ़तावा रज़विय्या, 14/421)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क्या मय्यित की क़ुरबानी का गोश्त ख़ुद खाना जाइज़ है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि लोगों में येह बात मश्हूर है कि मय्यित की तरफ़ से की गई क़ुरबानी के गोश्त में से ख़ुद नहीं खा सकते। शरई तौर पर इस बात की क्या हक़ीक़त है, क्या येह दुरुस्त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मय्यित की तरफ़ से की जाने वाली क़ुरबानी आम तौर पर मय्यित के ईसाले सवाब के लिए होती है, इस में से क़ुरबानी वाले को इख़्तियार होता है कि वोह ख़ुद भी खा सकता है, दूसरों को भी खिला सकता है, फ़ुक़रा व अग़निया में तक़्सीम भी कर सकता है। इस में शरअन कोई हरज नहीं। (حاشیۃ الطحطاوی علی الدر، 4/168- बहारे शरीअत, 3/345)

अलबत्ता अगर मय्यित की वसिय्यत के मुताबिक़ क़ुरबानी की जाए तो अब फ़ुक़रा पर ही उस को सदक़ा करना लाज़िम है, उस में से न ख़ुद खा सकते हैं, न किसी ग़नी को खिला सकते हैं।

(فتاویٰ فیض الرسول، 2/444- बहारे शरीअत, 3 345)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 पैदाइशी छोटी दुम वाले बकरे की क़ुरबानी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने क़ुरबानी के लिए एक बकरा ख़रीदना है। ज़ैद को एक ख़ूबसूरत बकरा पसन्द आया है। वोह उयूब जिन से क़ुरबानी नहीं होती, बकरे के अन्दर मौजूद नहीं हैं, लेकिन उस बकरे की दुम पैदाइशी एतिबार से छोटी है। इस बात की सौ फ़ीसद तहक़ीक़ है कि बकरे की दुम कटने की वज्ह से छोटी नहीं है, बल्कि पैदाइशी तौर पर ही छोटी है। क्या ऐसे बकरे की क़ुरबानी कर सकते हैं या नहीं ? शरई रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत के मुताबिक़ जिस बकरे की दुम पैदाइशी एतिबार से छोटी है, तो ऐसे बकरे की क़ुरबानी जाइज़ है।

इस मस्अले की क़रीब तरीन नज़ाएर येह हैं कि फ़ुक़हाए किराम ने ऐसी बकरी जिस के पैदाइशी कान छोटे हों और इसी त़रह़ भेड़ या दुम्बा जिस की चक्की पैदाइशी एतिबार से छोटी हो, उस की क़ुरबानी को जाइज़ क़रार दिया है उस की वज्ह फ़ुक़हाए किराम ने येह बयान फ़रमाई कि उ़ज़्व जब मौजूद हो, ख़ारिजी एतिबार से इस में कोइ नुक़्स या एब पैदा नहीं किया गया, बल्कि ख़ल्क़त यानी पैदाइशी एतिबार से उस के साइज़ में कमी बेशी हुई है, तो उस उ़ज़्व के छोटे, बड़े, मोटे, पतले, ज़ियादा या कम गोश्त वाला होने से क़ुरबानी में कोई फ़र्क़ और रुकावट नहीं होगी और ऐसे जानवर की क़ुरबानी हो जाएगी, जब कि दीगर कोई शरई़ ख़राबी न पाई जाए, लिहाज़ा सुवाल में पूछे गए बकरे की पैदाइशी दुम छोटी हो, तो उस की क़ुरबानी जाइज़ है।

(فتاوا ہندیہ، 5/279- فتاوا امجدیہ، 2/303- جوہرہ نیرہ، 2/245)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 अय्यामे क़ुरबानी के बाद फ़ौत शुदा क़ुरबानी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि साहिबे निसाब और मुक़ीम शख़्स ने क़ुरबानी नहीं की जब कि उस ने क़ुरबानी के लिए कोई जानवर भी नहीं ख़रीदा था। अब अय्यामे क़ुरबानी गुज़र जाने के बाद उस के लिए क्या हुक्म है ? क्या वोह साहिबे निसाब जानवर ख़रीद कर सदक़ा कर दे या उसे ज़ब्ह़ कर के उस गोश्त को सदक़ा कर दे ? किस त़रह़ से वोह बरियुज़्ज़िमा होगा ?? रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में उस साहिबे निसाब शख़्स पर औसत़न ऐसी बकरी कि जिस में क़ुरबानी की तमाम शराइत पाई जाती हों उसे ज़िन्दा सदक़ा करना या फिर उस की क़ीमत सदक़ा करना, वाजिब है। नीज़ बिला वज्हे शरई़ क़ुरबानी न करने के गुनाह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करना भी लाज़िम है।

अलबत्ता क़ुरबानी की क़ज़ा में अब जानवर को ज़ब्ह़ नहीं किया जा सकता। (بدائع الصنائع، 6/280- درمختار مع ردالمحتار، 9/531 تا 533 ملتقطاً و ملخصاً – فتاوا رضویہ، 20/361- بہار شریعت، 1/338، 339 – فتاوا فقیہ ملت، 2/248)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 नमाज़े ईद के बाद ख़ुत्बे से पहले क़ुरबानी करने का हुक्म ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि नमाज़े ईद हो जाने के बाद ख़ुत्बे से पहले क़ुरबानी करने से क्या क़ुरबानी अदा हो जाएगी ?

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शहर में क़ुरबानी दुरुस्त होने के लिए शर्त है कि नमाज़े ईद पढ़ी जा चुकी हो कि अस्ल नमाज़े ईद हो जाने का एतिबार है, लिहाज़ा नमाज़ हो जाने के बाद ख़ुत्बे से पहले ही अगर किसी शख़्स ने क़ुरबानी कर दी, तो इस सूरत में उस की क़ुरबानी तो अदा हो जाएगी लेकिन वोह शख़्स इसाअत का मुर्तकिब होगा।

(بدائع الصنائع فی ترتیب الشرائع، 5/37- الدر المختار مع ردالمحتار، 9/527، 528- حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار، 11/14- بہار شریعت، 3/337 ملتقطاً)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

6 वाजिब क़ुरबानी के गोश्त से ज़कात की अदाएगी का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स ने वाजिब क़ुरबानी की और उस में से जो गोश्त उसे ह़ासिल हुवा उसे ज़कात के त़ौर पर शरई़ फ़क़ीर को दे दिया तो क्या ज़कात अदा हो जाएगी ? क्यूंकि 600 रुपिये फ़ी किलो गोश्त है तो अगर दस किलो गोश्त शरई़ फ़क़ीर को दे दे तो क्या येह 6 हज़ार रुपिये का गोश्त ज़कात में दिया जा सकता है ?

بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में क़ुरबानी का गोश्त किसी शरई़ फ़क़ीर को ज़कात के त़ौर पर देने से ज़कात अदा नहीं होगी। ईद या सदक़ए वाजिबा की क़ुरबानी तो पहले से एक वाजिब फ़रीज़ा है उस का गोश्त तो वोह मिल्किय्यत है जो अल्लाह की राह में सर्फ़ हो चुका। येह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है कि उस ने क़ुरबानी करने वाले को उसे खाने और इस्तिमाल करने का ह़क़ दिया है। लेकिन येही गोश्त किसी और सदक़ए वाजिबा की अदाएगी के लिए इस्तिमाल नहीं हो सकता। (فتاوا ہندیہ، 5/308)

وَاللہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(क़िस्त : 01)

इस्लाम यतीमों का रखवाला

इस्लाम की अ़ज़ीम ख़ूबियों में से एक अहम ख़ूबी येह है कि इस्लाम कमज़ोरों को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम करता है जैसा कि यतीम मुआ़शरे में कमज़ोर समझा जाने वाला त़बक़ा है और यतीम क़दीम ज़माने से ही मज़्लूम रहे हैं। इस्लाम से क़ब्ल लोग इन के हुक़ूक़ पर डाके डालते, उन की ज़मीन व जायदाद पर क़ब्ज़ा जमा लेते, उन्हें बुनियादी ज़रूरिय्यात से महरूम कर दिया करते थे।

ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग यतीम लड़कियों के साथ त़रह़ त़रह़ के ज़ुल्म करते, उन से निकाह़ करते तो ना मेहर अदा करते और ना उन की दीगर ज़रूरिय्यात पूरी करते थे। एक ज़ुल्म येह भी किया करते कि अपनी ज़ेरे कफ़ालत यतीम लड़कियों से उन के माल की वजह से निकाह़ कर लेते ह़ालांकि उन की त़रफ़ उन्हें कोई रग़बत नहीं होती थी, निकाह़ इस लिए कर लेते कि उस यतीम को मिलने वाला विरासत का माल किसी दूसरे को ना देना पड़े, फिर उन यतीम लड़कियों के हुक़ूक़ पूरे न करते और उन के माल का वारिस बनने के लिए उन के मरने का इन्तिज़ार करते रहते। इस बुराई और ज़ुल्म को इस्लाम ने ख़त्म किया है और क़ुरआने करीम में इस की मुमानअ़त नाज़िल हुई है।[1] दूसरी सूरत येह भी होती कि अगर यतीम बच्ची ख़ुश शक्ल व ख़ूबसूरत न होती तो उस का निकाह़ किसी और से इस लिए नहीं करते थे कि उस बच्ची का माल उसे देना पड़ेगा। येह रवय्या भी राइज था कि क़ुरैश दस दस बल्कि इस से ज़ियादा औ़रतों से शादियां करते जब उन का बोझ न उठा सकते तो जो यतीम लड़कियां उन की सरपरस्ती में होतीं उन के माल ख़र्च कर डालते।[2]

यतीमों के सरपरस्त बोटी दे कर बकरे की फ़िक्र में रहते। यतीम का उ़म्दा माल ख़ुद ले लेते और उस की जगह अपना रद्दी और घटिया माल रख देते। यतीम के बकरियों के रेवड़ में से मोटी ताज़ी बकरी ले ली और बदले में दुबली पतली दे दी। खरा दिरहम निकाल लिया और उस की जगह खोटा दिरहम यतीम के माल में रख दिया और कहते कि दिरहम के इ़वज़ दिरहम हो गया और बकरी के बदले बकरी हो गई।

इस्लाम वोह दीने रहमत है जिस ने यतीमों को सिर्फ़ हमदर्दी का मुस्तहिक़ क़रार नहीं दिया बल्कि उन के हुक़ूक़ को बाक़ायदा शरई तहफ़्फ़ुज़ अता फ़रमाया। क़ुरआने करीम ने बार बार यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक, उन के माल की हिफ़ाज़त और उन की इ़ज़्ज़तो तकरीम का हुक्म दे कर येह वाज़ेह कर दिया कि इस्लाम महज़ दावा नहीं करता बल्कि अमली तौर पर यतीमों का रखवाला है।

यतीमों को इ़ज़्ज़त न देना बाइ़से ज़िल्लत क़ुरआने करीम में ज़िल्लत के अस्बाब में से एक सबब यतीमों को इ़ज़्ज़त न देना क़रार दिया गया है : ﴿كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : हरगिज़ नहीं बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते।[3] इस आयत के तह़त तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : तुम में से अल्लाह पाक की बारगाह में जो ज़लील है वोह वोह नहीं जो माल की कमी का शिकार है बल्कि अल्लाह पाक के हां तुम्हारी ज़िल्लत का सबब येह है कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते और दौलतमन्द होने के बावुजूद उन के साथ अच्छे सुलूक नहीं करते और उन्हें उन के हुक़ूक़ नहीं देते जिन के वोह वारिस हैं। उमय्या बिन ख़लफ़ के पास क़ुदामा बिन मज़ऊ़न यतीम थे वोह उन्हें उन का ह़क़ नहीं देता था, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई।[4]

यतीमों का माल बदलने वालों की मज़म्मत जो लोग यतीमों का माल दबा लेते थे या उन का अच्छा माल रख लेते और घटिया माल दे देते थे, उन के रद में अल्लाह करीम ने फ़रमाया :

﴿وَ اٰتُوا الْیَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَ لَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِیْثَ بِالطَّیِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِیْرًا(۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और यतीमों को उन के माल दे दो और पाकीज़ा माल के बदले गन्दा माल न लो और उन के मालों को अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक येह बड़ा गुनाह है।[5]

क़बीलए ग़त़फ़ान के एक आदमी की निगरानी में उस के यतीम भतीजे का बहुत ज़ियादा माल था, जब वोह यतीम बालिग़ हुवा तो उस ने अपना माल त़लब किया, चचा ने देने से इन्कार कर दिया, येह मुआमला नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचा तो इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिसे सुन कर उस शख़्स ने यतीम का माल उस के ह़वाले कर दिया और कहा कि हम अल्लाह व रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते हैं और गुनाहे कबीरा से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।[6]

यतीम और क़ुरआने करीम क़ुरआने पाक में यतीम और उस की जमा के अल्फ़ाज़ बीस से ज़ियादा बार आए हैं जिन में यतीमों के हुक़ूक़, अह़काम, हुस्ने सुलूक, माल की हिफ़ाज़त, उस में ख़ुर्द बुर्द न करने के अह़काम, उन का माल नाह़क़ खाने की वई़द, उन की कफ़ालत और उन के साथ इन्साफ़ करने की ताकीद की गई है जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴿فَادْفَعُوْۤا اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّ بِدَارًا اَنْ یَّكْبَرُوْا ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन के माल उन्हें सिपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ ह़द से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएं।[7]

एक मक़ाम पर यूं फ़रमाया : ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ وَ سَیَصْلَوْنَ سَعِیْرًا(۱۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जाएंगे।[8] एक और जगह इरशाद हुवा है :

﴿وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْیَتِیْمِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى یَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا(۳۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है यहां तक कि वोह अपनी जवानी को पहुंचे और अ़हद पूरा करो बेशक अ़हद से सुवाल होना है।[9]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में...

---

(1)صاوی،2/359،النسآء، تحت الآیۃ:3(2)خازن،1/342النسآء، تحت الآیۃ:3
(3)پ30،الفجر:17(4)خازن،4/377،الفجر، تحت الآیۃ:17(5)پ4،النسآء:2
(6)خازن،1/341،النسآء، تحت الآیۃ:2(7)پ4،النسآء:6(8)پ4،النسآء:10
(9)پ15،بنی اسرآءیل:34۔

अफ़ज़ल अ़मल

(The Best of Deeds)

एक बुज़ुर्ग कीचड़ वाली जगह से अपने कपड़ों को बचा बचा कर रास्ते के किनारे से गुज़र रहे थे कि अचानक उन का एक पांव फिसल कर कीचड़ में आलूदा हो गया फिर उन्हों ने अपने दोनों पांव कीचड़ में डाल दिये और कीचड़ के दरमियान से गुज़रने लगे, वोह रोने लगे किसी ने पूछा क्यूं रो रहे हैं ? जवाब दिया येह बन्दे की मिसाल है कि बन्दा भी गुनाहों से बचता रहता है फिर किसी एक गुनाह का शिकार हो जाता है यहां तक कि गुनाहों में ग़र्क़ हो जाता है इन्सान पर लाज़िम है कि वोह ग़फ़लत से तौबा करे जब इन्सान उसे जान लेगा तो हमेशा तौबा पर इस्तिक़ामत नसीब होगी, दुनिया में ग़ाफ़िल लोग आख़िरत में नुक़्सान उठाएंगे।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं: اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ مَا اُكْرِهَتْ عَلَيْهِ النُّفُوسِ यानी अफ़ज़ल अ़मल वोह है जिस पर नफ़्स को मजबूर किया जाए।[2]

शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस रिवायत को नक़्ल करने के बाद फ़रमाते हैं : क्यूंकि नफ़्स अपनी ख़्वाहिशात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पसन्द नहीं करता, नफ़्सानी ख़्वाहिश ह़क़ की ज़िद है और अल्लाह पाक ह़क़ को पसन्द फ़रमाता है, तो नफ़्स पर सख़्ती ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ और ह़क़ के मुताबिक़ होगी क्यूंकि ह़क़ की मह़ब्बत अफ़ज़ल आमाल में से है।[3]

नफ़्स को क़ाबू करने के इ़लावा भी दीगर अफ़ज़ल आमाल का अह़ादीस व रिवायात में बयान हुवा : उन में से 7 बयान की जा रही हैं : अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखना, वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना, मुसलमान का दिल ख़ुश करना, खाना खिलाना और सलाम को आ़म करना, ज़बान की ह़िफ़ाज़त करना, भूके मिस्कीन को खाना खिलाना क़र्ज़ से नजात देना और उस का ग़म दूर करना, शैख़ैन करीमैन से मह़ब्बत करना।

इन की रिवायात पढ़िये :

1 रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया : कौन सा अ़मल अफ़ज़ल है ? फ़रमाया : अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाना है।[4]

2 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायात है : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा : अल्लाह को कौन सा अ़मल ज़ियादा मह़बूब है ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वक़्त पर नमाज़ अदा करना । मैं ने पूछा फिर कौन सा अ़मल ? फ़रमाया : वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना।[5]

3 फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ بَعْدَ الْفَرَائِضِ اِدْخَالُ السُّرُوْرِ عَلَى الْمُسْلِمِ यानी अल्लाह पाक के नज़्दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बाद सब से अफ़ज़ल अ़मल मुसलमान को ख़ुश करना है।[6]

4 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा : कौन सा इस्लाम अच्छा है ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ عَلٰى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ यानी खाना खिलाओ और हर जाने अन्जाने शख़्स को सलाम करो।[7]

5 मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा सहाबा से इस्तिफ़सार फ़रमाया : अल्लाह पाक को सब से प्यारा अ़मल कौन सा है ? सब ने सुकूत फ़रमाया और किसी ने कोई जवाब न दिया। येह देख कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَى اللهِ حِفْظُ اللِّسَان यानी वोह अ़मल ज़बान की हिफ़ाज़त है।[8]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़बान की हिफ़ाज़त से मुराद झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा मम्नूअ़ा चीज़ों से बचाना है, ज़बान की अ़दम हिफ़ाज़त दिल को फ़ासिद करती है, और दिल के फ़साद के बाइ़स बदन भी फ़साद का शिकार हो जाता है, येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल कर्दा सहीफ़ों में येह बात भी थी कि अ़क़्लमन्द शख़्स के लिए लाज़िम है कि वोह जहां दीदा, अपने से मतलब रखने वाला, ज़बान की हिफ़ाज़त करने वाला हो और काम की बात के इ़लावा बातें कम करता हो।[9]

6 सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक को सब से प्यारा अ़मल किसी भूके मिस्कीन को खाना खिलाना, उस को क़र्ज़ से नजात दिलाना या उस का ग़म दूर करना है।[10]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मिस्कीन को खाना खिलाने का ज़िक्र इस लिए मुक़द्दम फ़रमाया कि येह रूह की हुर्मत की हिफ़ाज़त का सबब है। क़र्ज़ से नजात देने की तीन सूरतें हैं : 1 ख़ुद अदा कर दे 2 अगर वोह उस का क़र्ज़दार है तो क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे 3 ऐसा रास्ता बता दे जिस से क़र्ज़ बाआसानी उतर जाए। मज़ीद फ़रमाते हैं : "कर्ब" उस ग़म को कहते हैं जो दिल में बसेरा कर ले। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक औ़रत तेल ले कर एक सूफ़ी जो कि अकाबिरीन में से थे के पास आई और बोली : इस से मस्जिद में चराग़ रौशन कर दीजिए, फ़रमाया : तुझे क्या ज़ियादा पसन्द है ? वोह रौशनी जो छत तक पहुंचे ? या वोह रौशनी जो अ़र्श तक पहुंचे ? बोली : जो अ़र्श तक सब रौशन कर दे, फ़रमाया : अगर इस तेल को क़िन्दील में डालेंगे तो इस की रौशनी छत तक जाएगी, लेकिन अगर इस तेल को किसी भूके फ़क़ीर के खाने में इस्तिमाल किया जाए तो उस की रौशनी अ़र्श तक जाएगी, फिर उन्हों ने उस तेल से किसी फ़क़ीर के खाने का इन्तिज़ाम फ़रमा दिया।[11]

7 ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि मुझे ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की ज़ियारत कराई गई। इन दोनों ह़ज़रात के सामने एक त़शतरी (प्लेट) रखी थी जिस में मज़ीजद (ज़मुर्रद के जैसा एक क़ीमती पत्थर) की त़रह़ बैर मौजूद था और उन दोनों ने इस में से कुछ खाया फिर वोह बैर अंगूर में तब्दील हो गया दोनों ने उसे तनावुल किया फिर वोह अंगूर ताज़ा खजूर में तब्दील हो गया और उन्हों ने इस से खाया मैं ने उन से पूछा आप दोनों के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल अ़मल किया है ? उन्हों ने जवाब दिया : अल्लाह पाक के सिवा कोई माबूद नहीं कहना। मैं ने पूछा फिर कौन सा ? जवाब दिया اَلسَّلامُ عليكَ يا رسولَ الله (यानी ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम हो) मैं ने फिर पूछा : उस के बाद कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है जवाब दिया : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से महब्बत करना।[12]

---

(1)قوت القلوب، 1/316(2)ذم الھویٰ، ص56، رقم:148(3)قوت القلوب، 1/378(4)بخاری، 1 / 21، حدیث: 26(5)بخاری، 1 / 196، حدیث: 527 (6) معجم کبیر، 11/59، حدیث: 11079(7)بخاری، 1 / 16، حدیث: 12 (8) شعب الایمان، 4 /245، حدیث :4950(9)دیکھئے: فیض القدیر، 1/216، تحت الحدیث: 201(10) معجم کبیر، 3/218، حدیث:3187(11)فیض القدیر، 1/216، تحت الحدیث:199(12)فردوس الاخبار، 1/129، حدیث:1220۔

(क़िस्त : 01)

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने वाली आंख का अज्रो सवाब

अल्लाह पाक की अ़ज़मतो जलाल के सामने दिल का पिघलना, उस की हैबत से आंखों का बह जाना और उस के ख़ौफ़ से रूह का लरज़ जाना, येह ईमान की वोह कैफ़िय्यत है जो बन्दे को अपने रब से क़रीब कर देती है। ख़शिय्यते इलाही में बहाए गए आंसू महज़ पानी के क़तरे नहीं, बल्कि येह दिल की गहराइयों से निकलने वाली वोह गवाही है जो अल्लाह पाक की अ़ज़मत के एतिराफ़ पर मब्नी होती है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस अ़मल की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हुए ऐसे अज्रो सवाब की ख़ुशख़बरी सुनाई है जो किसी भी मोमिन के दिल में उस नेकी की त़लब पैदा कर दे।

आइये ! मुलाह़ज़ा फ़रमाएं कि अह़ादीसे नबविया में उस मुबारक अ़मल के कैसे कैसे इन्आ़मात बयान हुए हैं :

1 अ़र्शे इलाही के साए में जगह पाने वाले

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : सात लोग ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह पाक उस दिन अपने (अ़र्श के) साए में जगह देगा जिस दिन उस के (अ़र्श के) साए के सिवा कोई साया न होगा : 1 इन्साफ़ करने वाला हुक्मरान 2 वोह नौजवान जिस की परवरिश अल्लाह पाक की इ़बादत में हुई 3 वोह शख़्स जिस का दिल मसाजिद में लगा रहे, 4 दो ऐसे आदमी जो अल्लाह पाक की ख़ातिर महब्बत रखते हों, इसी पर जमा हों और इसी पर जुदा हों 5 वोह शख़्स जिसे किसी मुअ़ज़्ज़ज़ और ख़ूबसूरत औ़रत ने बुलाया तो उस ने कह दिया : मैं अल्लाह से डरता हूं 6 वोह शख़्स जिस ने इतने पोशीदा त़रीक़े से सदक़ा किया कि उस के बाएं हाथ को भी ख़बर न हो कि उस के दाएं हाथ ने क्या ख़र्च किया और 7 वोह शख़्स जिस ने तन्हाई में अल्लाह पाक को याद किया तो उस की आंखें बह पड़ीं।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰه ! कितनी अ़ज़ीम बिशारत है उन बन्दों के लिए जो तन्हाई में अपने रब को याद करते हैं और उन की आंखों से ख़ौफ़े इलाही में आंसू जारी हो जाते हैं। क़ियामत के दिन जब सूरज सरों के क़रीब होगा, जब लोग अपने आमाल के बोझ तले पसीने में नहाए होंगे, उस वक़्त येह ख़ुशनसीब बन्दे अल्लाह पाक के अ़र्श के साए में ठन्डक और सुकून से होंगे। येह अल्लाह पाक का ख़ास करम है उन पर जिन्हों ने दुनिया में उस की याद में आंसू बहाए। अल्लाह पाक हमें भी उन ख़ुशनसीबों में शामिल फ़रमाए।

2 आग से नजात का परवाना

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू रैहाना رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जहन्नम की आग उस आंख पर ह़राम कर दी गई जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से बह पड़ी या रो पड़ी, और जहन्नम की आग उस आंख पर

ह़राम कर दी गई जो अल्लाह पाक की राह में (पहरा देते हुए) जागती रही।[2]

अल्लाहु अक्बर ! कितना अ़ज़ीम इन्आ़म है ! जो आंख ख़ौफ़े ख़ुदा में रोए, उसे जहन्नम की आग से मुकम्मल ह़िफ़ाज़त अ़ता की गई। येह अल्लाह करीम की रह़मत का इज़्हार है कि उस के ख़ौफ़ में बहाया गया एक छोटा सा आंसू भी जहन्नम की भड़कती हुई आग के मुक़ाबले में ढाल बन जाता है।

3 जहन्नम में दाख़िला नामुम्किन हो जाए

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोया, यहां तक कि दूध थन में वापस चला जाए (यानी येह नामुम्किन है), और अल्लाह पाक की राह में लगने वाली गर्दो ग़ुबार और जहन्नम का धुवां इकट्ठे नहीं हो सकते।[3]

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह ह़दीसे मुबारका हमें अपने दिल में ख़ौफ़े इलाही पैदा करने की तरग़ीब देती है। शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस रिवायत के तह़त लिखते हैं: जिस त़रह़ निकला हुवा दूध दोबारा थन में नहीं जा सकता, इसी त़रह़ अल्लाह पाक के डर से रोने वाला जहन्नम में नहीं जा सकता और जो शख़्स अल्लाह पाक की राह में ग़ुबार आलूद हुवा, उस पर दोज़ख़ का धुवां और उस की आलूदगी असर नहीं करेगी।[4]

4 आंखों का जहन्नम न देखना

ह़ज़रते मुआ़विया बिन ह़ैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन आंखें ऐसी हैं जो जहन्नम की आग नहीं देखेंगी : 1 वोह आंख जिस ने अल्लाह पाक की राह में पहरेदारी की, 2 वोह आंख जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोई, और 3 वोह आंख जो अल्लाह पाक की ह़राम कर्दा चीज़ों को देखने से रुकी रही।[5]

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह इस बात की त़रफ़ इशारा है कि उन्हें आग से बहुत दूर रखा जाएगा, और जो आग से दूर किया गया वोह जन्नत के क़रीब हो गया। मज़ीद फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से रोने का मत़लब मह़ज़ औ़रतों जैसा रोना नहीं है कि इन्सान थोड़ी देर के लिए रोए और फिर नेक अ़मल छोड़ दे, बल्कि इस से मुराद वोह ख़ौफ़ है जो दिल में घर कर जाए यहां तक कि उस ख़ौफ़ के ग़ल्बे के सबब आंखों से आंसू निकल आएं और वोह ख़ौफ़ इन्सान को गुनाह करने से बाज़ रखे और नेकियों पर मुदावमत (यानी हमेशगी) की तरग़ीब दे।[6]

5 अल्लाह को सब से मह़बूब चीज़ें

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक को दो क़त़रों और दो निशानों से ज़ियादा कोई चीज़ प्यारी नहीं : एक वोह आंसू का क़त़रा जो अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से निकला हो और एक अल्लाह पाक की राह में बहाया जाने वाला ख़ून का क़त़रा। और दो निशान : एक अल्लाह की राह में लगने वाला निशान, और अल्लाह पाक के फ़राइ़ज़ में से किसी फ़रीज़े में लगने वाला निशान।[7]

ह़दीसे पाक में मज़कूर दो निशान से मुराद :

एक "अल्लाह की राह में लगने वाला निशान" जैसे अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए उठने वाला कोई क़दम या ग़ुबार या जिहाद में लगने वाला कोई ज़ख़्म या दीन का इ़ल्म सीखने के दौरान सियाही का लगने वाला निशान। और दूसरा निशान जो अल्लाह पाक के फ़राइ़ज़ में से किसी फ़र्ज़ की अदाएगी का हो, जैसे : सर्दी के मौसम में वुज़ू करने से हाथों और पैरों का फट जाना, गर्मी में वुज़ू की तरी का जिस्म पर बाक़ी रहना, तपती हुई ज़मीन पर सज्दा करने से पेशानी का झुलसना, रोज़ेदार के मुंह की बू, और ह़ज के सफ़र में पांव का गर्द आलूद होना।[8]

---

(1) بخاری، 1/480، حدیث:1423 (2) مسند احمد، 6/99، حدیث:17213
(3) ترمذی، 3/236، حدیث:1639 (4) اشعۃ اللمعات، 3/364 (5) معجم کبیر، 19/416، حدیث:103 (6) فیض القدیر، 3/426، تحت الحدیث:3518 (7) ترمذی، 3/253، حدیث:1675 (8) مرقاۃ المفاتیح، 7/399، تحت الحدیث:3837۔

तबक़ाते मुआ़शरा की तरबियत और इस्लाम

दीने इस्लाम ने तरबियत का एक ऐसा जामेअ़ निज़ाम दिया है जो हर उ़म्र, हर हैसिय्यत और हर किरदार के इन्सान को मक़्सदे ह़यात, अख़्लाक़ व किरदार, और अल्लाह से तअ़ल्लुक़ की त़रफ़ रहनुमाई फ़राहम करता है।

1 बच्चों की तरबियत इस्लामी तालीमात में बच्चों की तरबियत को निहायत अहम मक़ाम ह़ासिल है, क्यूंकि नौ निहाल ही मुस्तक़बिल के मेमार और उम्मत के अमीन होते हैं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चों की तरबियत में निहायत ह़िक्मत, नर्मी और उन की फ़ित़रत व ज़ेहनी सत़ह के मुत़ाबिक़ अन्दाज़े इख़्तियार फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह अ़मली मिसाल पेश फ़रमाई। बच्चों की तरबियत के ह़वाले से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़ येह था कि आप उन की समझ के मुत़ाबिक़ उन की तरबियत फ़रमाते और सिखाते थे। एक मरतबा (बचपन में) ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने सदक़े की खजूरों में से एक खजूर अपने मुंह में रख ली तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन फ़रमाया : "کخ کخ" यानी उस को फेंक दें।[1]

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ालांकि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़साह़त इस बात से आ़जिज़ न थी कि आप यूं फ़रमाते "येह खजूर फेंक दो, येह ह़राम है" लेकिन आप जानते थे कि बच्चा येह कलाम समझ न सकेगा लिहाज़ा फ़साह़त को छोड़ कर बच्चे की समझ के मुत़ाबिक़ कलाम फ़रमाया।[2]

2 ख़वातीन की तरबियत इस्लाम में ख़वातीन की तालीमो तरबियत को वोही अहमियत दी गई है जो मर्दों को ह़ासिल है। दीने इस्लाम ने औ़रत को मुआ़शरे का एक फ़आ़ल और बाइ़ज़्ज़त रुक्न क़रार दिया है, और इस की फ़िक्री, अख़्लाक़ी और रूह़ानी तरबियत को उम्मत की इस्लाह़ का लाज़िमी जुज़्व बनाया है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़वातीन की दीनी तालीम व तरबियत के लिए ऐसा मुनज़्ज़म और रह़मत भरा निज़ाम क़ाइम फ़रमाया जो इस बात का वाज़ेह़ सुबूत है कि इस्लाम औ़रत की तरक़्क़ी, इल्मो फ़हम, और किरदार साज़ी का अ़लमबरदार है।

दौरे नबवी मे ख़वातीन की दीनी व अख़्लाक़ी तालीमो तरबियत का बाक़ाइ़दा एहतिमाम किया गया। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस त़रह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की तालीमो तरबियत फ़रमाई, इसी त़रह सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की रूह़ानी, अख़्लाक़ी और इ़ल्मी तरबियत का भी ख़ुसूसी ख़याल रखा। आप ने ख़वातीन को दीन सीखने और सिखाने के मवाक़ेअ़ फ़राहम किए और उन की फ़िक्री व अ़मली रहनुमाई फ़रमाई ताकि वोह भी दीने इस्लाम की फ़हमो बसीरत से बहरामन्द हो सकें। एक औ़रत ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मर्द ह़ज़रात तो आप की बारगाह में ह़ाज़िरी दे कर आप के इरशादात सुन लेते हैं, हमें भी एक दिन अ़त़ा फ़रमा दें जिस में आप हमें वोह कुछ सिखाएं जो अल्लाह पाक ने आप को सिखाया है। इरशाद फ़रमाया : तुम फ़ुलां दिन फ़ुलां मक़ाम पर जमा हो जाया करो! चुनान्चे वोह औ़रतें जमा हो गईं। रसूलुल्लाह ने उन्हें अल्लाह के सिखाए हुए (अह़कामात) में से कुछ सिखाया।[3] इसी त़रह एक मौक़अ़ पर आप ने तालीमे निस्वां की तरग़ीब देते हुए इरशाद फ़रमाया : जिस की एक बेटी हो वोह उसे अच्छे आदाब सिखाए, अच्छी तालीम दिलाए और जो नेमतें अल्लाह पाक ने उसे दी हैं उन में से ख़ूब ख़र्च करे तो येह बेटी उस के लिए जहन्नम से रुकावट बन जाएगी।[4]

3 जवानों की तरबियत इस्लाम ने नौजवानों की तरबियत को निहायत अहम और बुनियादी हैसिय्यत दी है, क्यूंकि नौजवानी वोह दौर है जब इन्सान की सलाह़िय्यतें, इरादे और तवानाइयां अपने उ़रूज पर होती हैं। अगर इस्लाम के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ इस त़ाक़त का इस्तिमाल किया जाए तो नौजवान कल के बाकिरदार मुसलमान, सच्चे आ़शिक़ाने रसूल और दीन के मज़बूत दाई बन सकते हैं। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नौजवानों की तालीमो तरबियत को हमेशा ख़ुसूसी अहमियत दी। आप ने मौक़अ़ महल के मुत़ाबिक़ उन की अख़्लाक़ी, रूह़ानी और अ़मली रहनुमाई फ़रमाई, ताकि वोह मुआ़शरे में मिसाली किरदार अदा कर सकें। ह़ज़रते अ़ली, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जिन्हों ने बचपन से ही नबिय्ये करीम

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरबियत में वक़्त गुज़ारा, इसी तरबियत का नतीजा था कि वोह कम सिनी में ही दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और फिर सारी ज़िन्दगी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ेरे साया रह कर दीन की ख़िदमत करते रहे।

इसी त़रह़ ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर ह़ज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे सुवारी पर सुवार थे। इतने में क़बीलए ख़स्अ़म की एक औ़रत आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मस्अला पूछने आई। ह़ज़रते फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उस औ़रत को देखने लगे और वोह औ़रत भी उन्हें देखने लगी। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ज़्ल का चेहरा दूसरी त़रफ़ मोड़ दिया (ताकि वोह औ़रत को न देखें)।[5]

एक और वाक़िए में एक नौजवान नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़िना की इजाज़त मांगता है, तो आप ने सख़्ती के बजाए मह़ब्बत, ह़िक्मत और दलील से उस की इस्लाह़ फ़रमाई।[6] येह तमाम मिसालें इस बात का वाज़ेह़ सुबूत हैं कि हुज़ूर ने नौजवानों के जोश को दबाया नहीं, बल्कि उसे दुरुस्त समत में परवान चढ़ाया। आज भी अगर नौजवानों की तरबियत सीरते नबवी की बुनियाद पर की जाए, तो वोह गुमराही के रास्तों से बच कर दीनो मिल्लत के बेहतरीन ख़ादिम बन सकते हैं।

4 ह़ुक्मरान व ज़िम्मेदारान की तरबियत इस्लाम एक ऐसा कामिल निज़ाम है कि ह़ुकूमत व क़ियादत के उसूल भी सिखाता है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह वाज़ेह़ फ़रमाया कि क़ियादत दरअस्ल अमानत है, जिस के बारे में क़ियामत के दिन बाज़ पुर्स होगी। लिहाज़ा इस्लाम में ह़ुक्मरानों और ज़िम्मेदारान की तरबियत निहायत अहमियत रखती है ताकि वोह इक़्तिदार को ज़ाती मफ़ाद के बजाए अ़वामी भलाई और रिज़ाए इलाही का ज़रीआ़ बनाएं।

इस्लाम सिखाता है कि ह़ुक्मरानों और ज़िम्मेदारों को चाहिये कि वोह अ़द्ल, अमानत, मश्वरा, और रिआ़या की ख़ैरख़्वाही को अपना शिआ़र बनाएं। उन के किरदार में ख़ौफ़े ख़ुदा, आ़जिज़ी, और जवाब देही का एह़सास होना चाहिये, ताकि वोह इक़्तिदार को ख़िदमते ख़ल्क़ का ज़रीआ़ बनाएं, फ़ख़्रो ग़ुरूर का नहीं। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ना सिर्फ़ ख़ुद अ़द्लो इन्साफ़ पर मब्नी ह़ुकूमत क़ाइम की बल्कि अपने ख़ुलफ़ा, गवर्नरों और क़ाज़ियों को भी उसी का ह़ुक्म दिया। आइये ! इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिए :

नबिय्ये कीरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ़मिल (सरकारी नुमाइन्दे) की तरबियत करते हुए येह सिखाया कि अ़वामी मन्सब के दौरान मिलने वाला माल या तोह़फ़ा तुम्हारी मिल्किय्यत नहीं बल्कि अमानत होता है, और उसे दियानतदारी से बैतुल माल में जमा करवाना चाहिये।[7]

इसी त़रह़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तरबियत याफ़्ता सह़ाबए किराम भी नबवी उसूलों की बुनियाद पर अपने ओ़हदे व मन्सब को पूरी ज़िम्मेदारी से निभाया करते थे, जैसा कि एक मिस्री शख़्स ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और शिकायत की, कि मैं ने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बेटे से दौड में सबक़त ह़ासिल की, तो उस ने मुझे कोड़े मारे और कहा : तू मुझे शिकस्त देता है ? मैं दो करीमों का बेटा हूं। ह़ज़रते उ़मर ने फ़ौरन अ़म्र बिन आ़स और उन के बेटे को मदीना त़लब किया जब वोह आए, तो ह़ज़रते उ़मर ने उस मिस्री को कोड़ा दे कर फ़रमाया : "मारो इसे !" मिस्री ने उसे ख़ूब मारा, ह़ज़रते उ़मर फ़रमाते रहे : दो करीमों के बेटे को और मारो ! फिर ह़ज़रते उ़मर ने फ़रमाया : येह कोड़ा अ़म्र बिन आ़स के सर पर भी मारो ! लेकिन मिस्री ने कहा कि मेरा बदला पूरा हो गया है। इस पर ह़ज़रते उ़मर ने फ़रमाया : तुम ने कब से लोगों को ग़ुलाम बनाना शुरूअ़ कर दिया, ह़ालांकि उन की माएं तो उन्हें आज़ाद जना करती थीं ? ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स ने अ़र्ज़ किया कि मुझे इस वाक़िए का इ़ल्म न था।[8]

इस वाक़िए से मालूम हुवा कि इस्लाम की नज़र में सब बराबर हैं, ज़ालिम चाहे कितने ही बड़े ओ़हदे पर फ़ाइज़ हो उस से ज़ुल्म का बदला हर ह़ाल में लिया जाएगा।

5 ग़ैर मुस्लिमों को दावत व अख़्लाक़ के ज़रीए तरबियत इस्लाम सिर्फ़ मुसलमानों की तरबियत नहीं करता बल्कि ग़ैर मुस्लिमों तक भी दावते दीन के ज़रीए ह़क़ की पहचान और अख़्लाक़ी रौशनी पहुंचाना इस का मिशन है। ग़ैर मुस्लिमों से ख़ैरख़्वाही, हुस्ने सुलूक, और बेहतरीन अख़्लाक़ के साथ पेश आना इस्लामी तरबियत का अहम ह़िस्सा है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत में हमें इस की कई रौशन मिसालें नज़र आती हैं कि आप ने अपनी नर्म मिज़ाजी, अ़द्ल, और अपने अख़्लाक़े ह़सना से ग़ैर मुस्लिमों के दिल जीत लिए और वोह भी दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गए।

(1) مسلم، ص416، حدیث:2473 (2) احیاء العلوم، 4/53 (3) بخاری، 4/510، حدیث:7310 (4) معجم کبیر، 10/197، حدیث 10447 (5) مسلم، ص535، حدیث:3251 (6) مسند احمد، 8/285، حدیث:22274 (7) بخاری، 4/398، حدیث:6979 (8) کنز العمال، الجزء:12، 6/294، حدیث:36005۔

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

अ़क़्लमन्द अपने दिल का जाइज़ा लेता रहता है

अ़क़्लमन्द शख़्स वक़्तन फ़वक़्तन अपने दिल का जाइज़ा लेता है, अपने नफ़्स को मम्नूआ चीज़ों से बाज़ रखता है, और उसे मुख़्तलिफ़ क़िस्म की इ़ताआ़तों और नेक कामों पर क़ाइम रखता है, जब अ़मल में सुस्ती या कमज़ोरी आए तो वोह चौकन्ना और बेदार होना ज़रूरी समझता है।

(फ़रमाने हज़रत अबू हातिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) (روضۃ العقلاء، ص29)

बह़स व तकरार से बचो

ना किसी ह़लीम व बुर्दबार से बह़स करो और ना ही किसी बेवुक़ूफ़ शख़्स से क्यूंकि बुर्दबार तुम से बेज़ार आ जाएगा और बेवुक़ूफ़ तुम को (ज़बानी) तक्लीफ़ पहुंचाएगा। (फ़रमाने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) (इ़ह्याउल उ़लूम, 3/140)

मुकाफ़ाते अ़मल का यक़ीन होना चाहिये

उस शख़्स की त़रह़ अ़मल करो जिसे यक़ीन हो कि नेकी पर उसे जज़ा दी जाएगी और गुनाह पर उस की पकड़ होगी। (फ़रमाने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) (इ़ह्याउल उ़लूम, 3/140)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

नफ़्स की लगाम ढीली नहीं करनी चाहिये

नफ़्स की बाग (लगाम) नर्म कर लीजिये (तो) दबा लेता है, उस वक़्त ज़रूरत, ह़ाजत, माज़ूरी, मजबूरी सूझती है और बाग जब करीं (सख़्त) कर लीजिये दब जाता है। (फ़तावा रज़विय्या, 13/339)

दुआ़ से इ़बादत की लज़्ज़त ह़ासिल करो

दुआ़ में सिर्फ़ मुद्दआ़ पर नज़र न रखे बल्कि नफ़्से दुआ़ को सिर्फ़ मक़्सूद बिज़्ज़ात जाने कि वोह ख़ुद इ़बादत बल्कि मग़्ज़े इ़बादत है मक़्सद मिलना न मिलना दर किनार लज़्ज़ते मुनाजात नक़्दे वक़्त (वक़्त का सर्माया) है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 110)

शाने दुरूद

दुरूद शरीफ़ सब से बड़ा मत़लूब, बड़ी शान वाला, मुस्तह़ब और सब से अफ़्ज़ल सवाब (का काम है)। (फ़तावा रज़विय्या, 23/395)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

औ़रतें मवेशी मन्डी न जाएं

इस दौर में जो ह़ालात हैं और मन्डी में जैसे ह़ालात हैं तो इस के ह़िसाब से औ़रतों को मन्डी नहीं जाना चाहिये।

(मदनी मुज़ाकरा, 23 ज़ुल क़ादतुल ह़राम, 1442 हि.)

क़ब्र के अम्न के लिए इस्लाम के उ़सूल अपनाइये

अगर क़ब्र के अन्दर अम्न चाहते हैं तो आप को अम्न वाले इस्लाम के जो भी उ़सूल हैं और जो अल्लाह व रसूल के अह़कामात हैं उन पर अ़मल करना होगा, उन पर अ़मल करेंगे तो اِنْ شَآءَاللهُ क़ब्र के अन्दर अम्न होगा। (मदनी मुज़ाकरा, 23 ज़ुल क़ादतुल ह़राम, 1442 हि.)

अदब इ़ल्म का नूर है

जिस से इ़ल्म ह़ासिल कर रहे हैं उस का अदबो एह़तिराम करें कि इसी त़रह़ इ़ल्म आएगा वरना इ़ल्म नहीं आएगा क्यूंकि अदब इ़ल्म का नूर है। (मदनी मुज़ाकरा, 4 शव्वालुल मुकर्रम, 1442 हि.)

अह़कामे तिजारत

1 बिल्ली की ख़रीदो फ़रोख़्त का हुक्म और ह़दीसे पाक की शर्ह़

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बिल्ली की ख़रीदो फ़रोख़्त करना कैसा है ? हम ने सुना है कि ह़दीसे पाक में बिल्ली की क़ीमत खाने से मना फ़रमाया गया है।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सुवाल : बिल्ली की ख़रीदो फ़रोख़्त करना, जाइज़ है, इस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं। रही बात उन अह़ादीसे करीमा की जिन में बिल्ली की क़ीमत खाने से मना फ़रमाया गया है उन के मुह़द्दिसीने किराम ने चन्द जवाबात दिए हैं जो कि दर्जे ज़ैल हैं :

पहला जवाब : जिस बिल्ली की ख़रीदो फ़रोख़्त मम्नूअ़ है वोह ग़ैर नाफ़ेअ़ बिल्ली है जैसे वह़शी बिल्ली।

दूसरा जवाब : येह मुमानअ़त इब्तिदाए इस्लाम में थी कि जब बिल्ली को नापाक जानवर क़रार दिया गया था बाद में जब उस के जूठे की पाकी का हुक्म दिया गया तो उस की क़ीमत ह़लाल हो गई।

तीसरा जवाब : यहां जो मुमानअ़त की गई है वोह तह़रीमी नहीं बल्कि तन्ज़ीही है यानी उस का फ़रोख़्त करना, जाइज़ तो है मगर ग़ैर मुनासिब है, येह जानवर तो यूंही बत़ौर हिबा दे देना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "نهى رسول الله صلَّى الله عليه وسلَّم عن اكل الهرة وثمنها"

यानी : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिल्ली और उस की क़ीमत खाने से मना फ़रमाया। (ابن ماجہ، 3/285)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "या तो कुत्ते बिल्ली से मुराद ग़ैर नाफ़ेअ़ कुत्ते बिल्ली हैं जैसे दीवाना कुत्ता, वह़शी बिल्ली कि अगर उसे बांध कर रखो तो चूहों का शिकार न कर सके और अगर खोल दो तो भाग जाए और या मुत़लक़न कुत्ता बिल्ली मुराद है और नही कराहत तन्ज़ीही के लिए है यानी उन का फ़रोख़्त करना ग़ैर मुनासिब है, येह जानवर तो यूं ही बत़ौर हिबा दे देना चाहिएं।" (मिरआतुल मनाजीह़, 4/254)

सदरुश्शरीआ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ लिखते हैं : "कुत्ता, बिल्ली, हाथी, चीता, बाज़, शिक्रा, बहरी, इन सब की बैअ़ जाइज़ है।" (बहारे शरीअ़त, 2/809)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 ब्लूटूथ वाला आईना बेचना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में

कि हम शीशों की ख़रीदो फ़रोख़्त करते हैं, आज कल मार्केट में Bluetooth Mirror भी फ़रोख़्त होते हैं जो कि मोबाइल फ़ोन से Connect हो जाते हैं, नीज़ इस में लाइट की सहूलत और एन्टी फ़ोग (Anti Fog) की सहूलत भी मौजूद होती है, आम तौर पर लोग नहाते वक़्त Bluetooth को म्यूज़िक सुनने और दीगर गुनाहों भरी चीज़ें सुनने के लिए इस्तिमाल करते हैं। क्या उन को बेचना जाइज़ है?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में कस्टमर का Bluetooth Mirror को ख़रीद कर उसे गुनाह के कामों में इस्तिमाल करना मुतअ़य्यन नहीं, इस के दीगर जाइज़ इस्तिमालात भी मौजूद हैं नीज़ Bluetooth इस्तिमाल करने वाले के लिए भी उसे म्यूज़िक वग़ैरा के इ़लावा जाइज़ चीज़ों में इस्तिमाल करना मुम्किन है मसलन कोई आने वाली किसी ज़रूरी फ़ोन कॉल को उस स्पीकर के ज़रीए सुन सकता है अगर्चे बैतुल ख़ला में कलाम करना बहुत मायूब बात है लेकिन ऐसा करना गुनाह नहीं है।

लिहाज़ा उस शीशे को फ़रोख़्त करना ऐसा ही है जैसे छुरी चाकू वग़ैरा फ़रोख़्त करना, इस्तिमाल करने वाले पर मुन्हसिर है कि वोह उसे जाइज़ कामों में इस्तिमाल करे या नाजाइज़ कामों में, जिस त़रह इस्तिमाल करेगा उस का ज़िम्मा भी उसी पर होगा।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 कमेटी ताख़ीर से देने पर जुर्माने की शर्त लगाना कैसा?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद अपने पास कमेटी डालना चाहता है, उस ने मेम्बरान को वक़्त पर क़िस्त देने का पाबन्द बनाने के लिए तह़रीरी त़ौर पर येह शर्त रखी है कि अगर कोई मेम्बर मुक़र्ररा तारीख़ (मसलन दस तारीख़) के बाद अपनी क़िस्त अदा करेगा तो उसे हर दिन के ह़िसाब से दो सौ रुपिये बत़ौरे जुर्माना देना होगा तमाम मेम्बरान को इस तह़रीर पर दस्तख़त़ भी करने होंगे। अलबत्ता ज़ैद की निय्यत येह है कि वोह ह़क़ीक़त में किसी से जुर्माना नहीं लेगा बल्कि येह शर्त महज़ मेम्बरान को वक़्त पर कमेटी की क़िस्त अदा करने की तरग़ीब देने के लिए लगाई गई है। क्या इस त़रह़ की शर्त लगाना जब कि जुर्माना लेने का कोई इरादा न हो तो शरअ़न जाइज़ है?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में कमेटी मेम्बरान पर ताख़ीर से कमेटी जमा करवाने पर इज़ाफ़ी रक़म लेने की शर्त लगाना, जाइज़ नहीं अगर्चे ज़ैद की निय्यत इज़ाफ़ी रक़म लेने की ना हो।

इस मस्अले की तफ़्सील कुछ यूं है कि कमेटी की रक़म जमा करवाने वाले की दो सूरतें बनती हैं:

1. एक सूरत येह है कि उस की कमेटी निकली नहीं है, ऐसी सूरत में ताख़ीर से जमा करवाने पर इज़ाफ़ी रक़म लेने की शर्त माली जुर्माना है जो कि नाजाइज़ो ह़राम है।

2. दूसरी सूरत येह है कि उस ने कुछ कमेटियां भरीं और कमेटी निकल आई, ऐसी सूरत में जो उस को इज़ाफ़ी रक़म मिली है वोह उस पर क़र्ज़ है, अब जो क़िस्तें अदा कर रहा है, वोह अपना क़र्ज़ उतार रहा है, ऐसी सूरत में ताख़ीर से कमेटी जमा करवाने पर इज़ाफ़ी पैसे लेने की शर्त सूद है कि येह क़र्ज़ पर मशरूत़ इज़ाफ़ी नफ़ा लेना है और सूद ह़राम व गुनाह है।

अब चूंकि कमेटी की क़िस्त ताख़ीर से जमा करवाने वाले पर इज़ाफ़ी रक़म की शर्त लगाने की सूरत में सूद और माली जुर्माना दोनों का एह़तिमाल मौजूद है और दोनों ग़ैर शरई अ़मल हैं। लिहाज़ा ज़ैद का इस त़रह़ की शर्त लगाना और बाक़ी अफ़राद का येह ग़ैर शरई काम करने पर रिज़ामन्दी ज़ाहिर करना ह़राम फ़ेल है अगर्चे ज़ैद की निय्यत इज़ाफ़ी रक़म वुसूल करने की ना हो।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जन्नतुल बक़ीअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते अ़म्र बिन मअ़दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से एक अ़ज़ीम सह़ाबिये रसूल के मुतअ़ल्लिक़ राय त़लब की तो उन्हों ने यूं अ़र्ज़ की : वोह तो निहायत ही आला सिफ़ात के ह़ामिल हैं, क़र्ज़ व ख़िराज वग़ैरा वुसूल करने में सख़्ती से काम नहीं लेते, सियाह व सफ़ेद धारी दार कम्बल वाले (मुअ़ज्ज़ज़) अ़रबी हैं, हिम्मत व बहादुरी में शेर हैं, फ़ैसला हमेशा इन्साफ़ से करते हैं बराबर बराबर तक़्सीम करते हैं, हम पर ऐसे शफ़ीक़ हैं जैसे बेवा औ़रत की अपने बच्चों पर शफ़्क़त, नीज़ हमारे हुक़ूक़ हम को इस त़रह़ देते हैं जैसे च्यूंटियां अपने सूराख़ों तक सामान ले जाती हैं।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आला सिफ़ात वाले येह सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ थे आप का क़द छोटा लेकिन शख़्सिय्यत बा रोब थी, आप का जिस्म मज़बूत और सर बड़ा था (जो आप के मुदब्बिर और त़ाक़तवर होने की ग़म्माज़ी करता था), आप की उंगलियां मोटी, रंग गन्दुमी और सर के बाल घुंघरियाले थे जब कि जिस्म पर बकसरत बाल मौजूद थे।[2]

क़बूले इस्लाम और मशक़्क़त ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इब्तिदाए इस्लाम में ईमान ले आए थे।[3] उस वक़्त उ़म्र मुबारक 17 साल थी।[4] काफ़िरा वालिदा ने आप को दीने मतीन से फेरने की भरपूर कोशिश की, कहने लगी : ऐ सअ़द ! येह क्या दीन है जिसे तू ने क़बूल कर लिया, जब तक तू इस दीन को छोड़ कर पहले वाले दीन पर नहीं आएगा तब तक ना मैं कुछ खाऊंगी और ना कुछ पियूंगी या फिर भूकी प्यासी मर जाऊंगी फिर लोग तुझे शर्म दिलाते हुए कहेंगे : ऐ मां के क़ातिल ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी वालिदा को समझाया कि तू ऐसा मत कर, मैं किसी भी क़ीमत पर अपने दीन को नहीं छोड़ूंगा, एक दिन गुज़र गया वालिदा ने कुछ नहीं खाया पिया और साथ ही साए में बैठना भी छोड़ दिया, फिर दूसरा दिन भी गुज़र गया मगर वालिदा ने अपने ह़लक़ से कुछ नीचे न उतारा। फिर मैं वालिदा के पास आया और कहा : ऐ मेरी मां ! तू इस बात को जान ले कि अगर तेरी 100 जानें भी हों और एक एक कर के सब निकल जाएं तो भी मैं दीने इस्लाम से ना फिरूंगा, अब तेरी मर्ज़ी है तू खा ! या न खा। जब वालिदा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मायूस हो गई तो उस ने खाना पीना शुरूअ़ कर दिया।[5]

औसाफ़ व एज़ाज़ात प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को येह एज़ाज़ी कलिमात मिले हैं : सअ़द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं उन के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दाऊद عَلَیْہِمَا السَّلَام होंगे।[6] आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बेहतरीन तीर अन्दाज़ थे[7] ग़ज़वए उ़ह़ुद के दिन तीर अन्दाज़ी का येह जौहर ख़ूब निखर कर सामने आया प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जंगे उ़ह़ुद में ख़ुद आप से इरशाद फ़रमा रहे थे : اِرْمِ فِدَاکَ اَبِیْ وَاُمِّیْ यानी तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान हों ! तीर मारो।[8] सिन 17 हिजरी में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ह़ुक्म से कूफ़ा शहर की बुनियाद आप ने रखी थी।[9]

दरे रसूल के पहरेदार हिजरत के बाद मदीनए मुनव्वरा में दुश्मनों की त़रफ़ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए ख़त़रा था। एक रात आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद कलामी फ़रमाई कि काश ! मेरे अस्ह़ाब में से कोई नेक शख़्स आज रात हमारा पहरा दे। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आयशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं

कि अभी हम इसी ह़ाल में बैठे हुए थे कि (बाहर) हथियार हिलने की आवाज़ आई। प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : कौन है ? आवाज़ आई : सअ़द बिन अबी वक़्क़ास। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या बात तुम्हें यहां ले आई ? उन्हों ने अ़र्ज़ की: आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुश्मन से नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा मेरे दिल में पैदा हुवा तो मैं बग़र्ज़े निगेहबानी चला आया। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की जांनिसारी पर ख़ुश हो कर दुआ़ दी और फिर आराम फ़रमाने लगे।[10]

मोह़तात़ ज़िन्दगी ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का अपनी रोज़ी को ह़लाल और पाक करने का येह अ़ालम था कि जानवरों के लिए लाई गई सूखी घास में अगर आप की निगाह गन्दुम के किसी ख़ोशे पर पड़ जाती तो ख़ुद्दाम से फ़रमाते : उस ख़ोशे को वहीं रख आओ जहां से तुम ने उसे काटा है।[11] आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जब नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाते तो कामिल रुकूअ़ व सुजूद के साथ मुख़्तसर नमाज़ अदा फ़रमाते लेकिन जब घर में नमाज़ अदा फ़रमाते तो त़वील नमाज़ पढ़ते। किसी ने वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : हम क़ौम के इमाम व राहनुमा हैं लोग हमारी पैरवी करते हैं।[12]

जिहादी व सियासी कारनामे आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मारकए बद्र, जंगे उहुद और दीगर तमाम ग़ज़्वात में शामिल होने का शरफ़ पाया।[13] अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने इ़राक़ की जानिब एक लश्कर रवाना फ़रमाया तो आप को उस का अमीर बनाया, चुनान्चे क़ादिसिया, इ़राक़ और मुल्के फ़ारस के दीगर शहरों की फ़त्ह अल्लाह करीम ने आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के हाथों मुक़द्दर फ़रमाई।[14] ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में आप 2 मरतबा कूफ़ा के गवर्नर बने जब कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने भी अपने दौरे ख़िलाफ़त में आप को एक मरतबा कूफ़ा का गवर्नर बनाया।[51] आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की शहादत के बाद मुल्की मुआ़मलात और जंगों से अलग थलग रहे।[16]

रिवायात में एह़तियात़ ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه रिवायात और मसाइल बयान करने में बहुत एह़तियात़ करते थे एक मरतबा आप से कोई मस्अला पूछा गया तो आप ने ख़ामोशी इख़्तियार की, फिर फ़रमाया : मुझे अन्देशा है कि मैं तुम्हें एक ह़दीस बयान करूं तो तुम इस में इज़ाफ़ा कर के 100 ह़दीसें बना लोगे।[17] ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा तक ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के साथ सफ़र किया लेकिन ह़दीस बयान करने में आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की एह़तियात़ का येह आ़लम था कि इतने अ़र्से में आप ने फ़क़त एक ही ह़दीस बयान फ़रमाई।[18]

मरविय्यात की तादाद आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत कर्दा 270 अह़ादीसे मुबारका हैं, बुख़ारी व मुस्लिम में बिल इत्तिफ़ाक़ 15 हैं, इन्फ़िरादी त़ौर पर इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने 5 अह़ादीस बुख़ारी शरीफ़ में जब कि इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने 18 रिवायात मुस्लिम शरीफ़ में शामिल की हैं।[19]

वफ़ात मुबारका बवक़्ते वफ़ात आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ऊन का एक पुराना जुब्बा मंगवाया फिर फ़रमाया : मुझे इसी का कफ़न देना कि जब मैं ने ग़ज़्वए बद्र में मुश्रिकीन से मुक़ाबला किया था तो येह मेरे बदन पर था, और कफ़न के लिए ही मैं इसे ह़िफ़ाज़त से रखता रहा हूं।[20] एक क़ौल के मुताबिक़ 58 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा से दस मील दूर मक़ामे अ़क़ीक़ में आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की वफ़ात हुई फिर आप की नाश मुबारका को मदीने लाया गया यहीं नमाज़े जनाज़ा अदा की गई आज भी जन्नतुल बक़ीअ़ की पाकीज़ा मिट्टी ने आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को अपने दामन में लिया हुवा है।[21] आप ने 82 साल की उ़म्र पाई इस दुनिया से रुख़्सत होने वाले मुहाजिर सह़ाबए किराम में आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه सब से आख़िरी सह़ाबी हैं।[22]

---

(1)تاریخ ابن عساکر، 20/352، ثمار القلوب،ص644(2)ریاض النضرۃ، 2/320 (3)الاستیعاب، 2/171(4)تاریخ ابن عساکر، 20/293(5)تفسیر بغوی، 3/396، العنکبوت، تحت الآیۃ:8-تاریخ ابن عساکر،20/331(6)الریاض النضرۃ،1/35(7)سیر اعلام النبلاء، 3/63(8)مسلم، ص1009، حدیث:6233 (9)وفیات الاعیان،1/212(10)مسلم،ص1009،حدیث:6231(11)تاریخ ابن عساکر،20/340(12)تاریخ ابن عساکر،20/361(13)سیر السلف الصالحین، 1/110(14)تاریخ ابن عساکر،20/294(15)الاستیعاب،2/172(16)سیر اعلام النبلاء،3/76(17)طبقات ابن سعد،3/106(18)تاریخ ابن عساکر،20/361 (19)تہذیب الاسماء واللغات،1/ 208(20)سیر السلف الصالحین، 1/111 (21)سیر السلف الصالحین، 1/110، تاریخ ابن عساکر،20/371(22)سیر اعلام النبلاء،3/77،78۔

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के 10 औसाफ़

इस्लामी तारीख़ में बाज़ शख़्सिय्यात ऐसी हैं जिन की ज़िन्दगी रहती दुनिया तक इन्सानिय्यत के लिए मश्अले राह बन जाती है। उन अ़ज़ीम हस्तियों में एक नाम उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का है। आप इस्लाम के तीसरे ख़लीफ़ा, जलीलुल क़द्र सह़ाबी और उन ख़ुश नसीब अफ़राद में शामिल हैं जिन्हें दुनिया ही में जन्नत की बिशारत दी गई। यूं तो आप के सैंकड़ों औसाफ़ हैं जिन को इह़ात़ए तह़रीर में लाना मुश्किल है अलबत्ता दस मुन्तख़ब औसाफ़ मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 पैकरे ह़या "शर्मो ह़या" ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ाते पाक का इस्तिआ़रा और पहचान है। आप इस उम्मत में सब से ज़ियादा बाह़या हैं यहां तक कि फ़रिश्ते भी आप से ह़या करते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में ह़या के ए़तिबार से सब से ज़ियादा सादिक़, उ़स्मान हैं।[1] एक और त़वील ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं उस शख़्स से कैसे ह़या न करूं जिस से फ़रिश्ते भी ह़या करते हैं।[2]

आप की शर्मो ह़या का येह आ़लम था कि आप ग़ुस्ल ख़ाने में भी तहबन्द बांध कर ग़ुस्ल करते थे।[3]

2 बे मिसाल सख़ावत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इन्तिहाई सख़ी और फ़य्याज़ थे। इस्लाम के इब्तिदाई दौर में जब मुसलमानों को माली मुश्किलात का सामना था तो आप ने ख़ुले दिल से मदद की। ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर आप ने 950 ऊंट, 50 घोड़े और 1000 अशरफ़ियां पेश कीं, फिर बाद में 10 हज़ार अशरफ़ियां मज़ीद पेश कीं।[4] इसी त़रह़ मदीना में मुसलमानों के लिए पानी की कमी थी तो आप ने बिअरे रूमा ख़रीद कर मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया। अ़हदे सिद्दीक़ी में एक बार क़ह़त़ पड़ गया तो जनाब उ़स्माने ग़नी ने खाने पीने की अश्या से लदे हुए एक हज़ार ऊंट मुसलमानों पर सदक़ा कर दिये।

3 इ़बादत गुज़ारी और तक़्वा इ़बादत गुज़ार ऐसे थे कि दिन में नफ़्ली रोज़ा रखा करते और सिर्फ़ रात के इब्तिदाई ह़िस्से में आराम करते फिर उठ कर सारी रात इ़बादत में मसरूफ़ रहते।[5] क़ुरआन के आ़शिक़ ऐसे कि एक रकअ़त में ख़त्मे क़ुरआन कर लेते थे।[6] जिस वक़्त आप को शहीद किया गया उस वक़्त भी क़ुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे।[7] तक़्वा और फ़िक्रे आख़िरत ऐसी थी कि अ़शरए मुबश्शरा (दस जन्नती सह़ाबा) में शामिल होने और दुनिया ही में कई बार मालिके जन्नत रसूले मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से जन्नत की बिशारत पाने के बावुजूद जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा से इस क़दर रोते कि आंसुओं से दाढ़ी तर हो जाती।[8]

4 जामेउ़ल क़ुरआन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का एक अ़ज़ीम तरीन कारनामा "**जम्ए़ क़ुरआन और तह़फ़्फ़ुज़े क़ुरआन**" है, इसी बिना पर आप को "**जामेउ़ल क़ुरआन**" कहा जाता है। आप के दौरे मुबारक में इस्लाम दूर दराज़ अ़लाक़ों तक फैल चुका था, मुख़्तलिफ़ क़बाइल और अक़्वाम के अपनी त़र्ज़ और लबो लहजे में क़ुरआन पढ़ने से एक नई सूरतेह़ाल पैदा हो रही थी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने क़ुरआने मजीद की ह़िफ़ाज़त और उम्मते मुस्लिमा को इख़्तिलाफ़ से बचाते हुए ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर का जमा किया हुवा नुस्ख़ा ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के घर से मंगवा कर उस से कई नुस्ख़े तय्यार करवाए और उन्हें इस्लामी रियासत में फैला दिया। यूं पूरी उम्मत को क़ुरआने मजीद के एक नुस्ख़े पर जमा फ़रमा दिया।[9] इस इक़्दाम की बदौलत क़ुरआन आज तक एक ही शक्ल में महफ़ूज़ है। इसी नुस्ख़े को तारीख़ में "**मुस्ह़फ़े उ़स्मानी**" के नाम से याद किया जाता है।

5 ज़ुन्नूरैन येह आप का ऐसा वस्फ़ है कि आप के इ़लावा दुनिया में किसी को भी नहीं मिला कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो बेटियां यके बाद दीगरे आप के निकाह़ में आईं। आप के इ़लावा दुनिया में किसी भी शख़्स के निकाह़ में किसी नबी की दो बेटियां नहीं आईं। इसी लिए आप को ज़ुन्नूरैन भी कहा जाता है।

6 ख़िदमते ख़ल्क़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शख़्सिय्यत "**ख़िदमते ख़ल्क़**" का वोह रौशन मीनार है जिस की मिसाल तारीख़े इन्सानी में मिलना मुश्किल है। जब मुसलमान मदीना हिजरत कर के आए तो उन्हें वहां पानी की क़िल्लत का सामना करना पड़ा जब कि एक यहूदी बहुत महंगे दामों पानी बेचा करता था, आप ने वोह रूमा नामी कुंवां 35 हज़ार दिरहम में ख़रीद कर वक़्फ़ कर दिया।[10] नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हर जुमुआ़ को ग़ुलाम आज़ाद किया करते, अगर किसी जुमुआ़ नाग़ा हो जाता तो अगले जुमुआ़ दो ग़ुलाम आज़ाद करते थे।[11]

7 सब्रो इस्तिक़ामत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का सब्रो इस्तिक़ामत भी तारीख़े इस्लाम का एक बे मिसाल बाब है। ह़ज़रते उ़स्मान ग़नी के चचा ह़कम बिन अबिल आ़स ने क़बूले इस्लाम की वजह से आप को रस्सियों से जकड़ दिया और सख़्त तशद्दुद करते हुए दीने इस्लाम छोड़ने का कहा तो आप ने उसे साफ़ साफ़ कह दिया: मैं दीने इस्लाम को कभी भी नहीं छोड़ूंगा और ना ही कभी उस से जुदा होउंगा।[12] आप ने पहले ह़बशा की त़रफ़ और फिर मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत की। अपना घर बार, मालो दौलत और करोबार सब कुछ अल्लाह की ख़ातिर छोड़ देना और अजनबी अ़लाक़ों में क़ियाम करना आप के सब्रो रिज़ा का मुंह बोलता सुबूत था। ख़िलाफ़त के आख़िरी अय्याम में बाग़ियों ने मदीनए मुनव्वरा का घेराव कर लिया। आप के पास त़ाक़त थी, जांनिसार सह़ाबा और ग़ुलाम लड़ने के लिए तय्यार थे, लेकिन आप ने सख़्ती से मना कर दिया कि "मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से शहरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ख़ून का एक क़त़रा भी गिरे।" बाग़ियों ने आप के घर का पानी बन्द कर दिया (वोही उ़स्मान जिन्हों ने मदीना को पानी पिलाने के लिए कुंवां ख़रीदा था, आज प्यासे थे)। आप ने उस तक्लीफ़ को ख़ामोशी और सब्र से बरदाश्त किया यहां तक कि शहीद कर दिये गए।

8 सादगी ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अ़रब के अमीर तरीन ताजिर होने के बावुजूद इन्तिहा दर्जे के सादा और मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। आप सादा लिबास ज़ेबे तन फ़रमाते थे।[13] खाने में सादगी ऐसी कि लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते और ख़ुद घर जा कर सिर्का और ज़ैतून पर गुज़ारा करते।[14]

9 आ़जिज़ी व इन्किसारी ख़िलाफ़त के मन्सब पर फ़ाइज़ होने के बावुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़िन्दगी में कोई प्रोटोकोल या शाहाना ठाठ बाठ नहीं था। आप के दौरे ख़िलाफ़त में इस्लामी सल्त़नत ईरान से ले कर अफ़्रीक़ा तक फैल चुकी थी, लेकिन आप का त़र्ज़े ज़िन्दगी वोही रहा जो मक्का के एक सादा मुसलमान का था। आप कई बार मस्जिदे नबवी के कच्चे फ़र्श पर आराम फ़रमा लेते थे, जिस की वजह से आप के पहलू पर कंकरियों के निशान पड़ जाते। बाज़ औक़ात मिट्टी की ढेरी का तक्या बना कर सो जाते।

10 नफ़ीस त़बीअ़त के मालिक आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तबअ़न ही सच्चे, ईमानदार और नफ़ीस त़बीअ़त के मालिक थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ज़मानए जाहिलिय्यत में भी न कभी शराब पी, न बद कारी के क़रीब गए, न कभी चोरी की न गाना गाया और न ही कभी झूट बोला।[15]

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरत हमें येह पैग़ाम देती है कि इक़्तिदार, दौलत और मक़ाम के बावुजूद आ़जिज़ी, तक़्वा और ख़िदमते ख़ल्क़ को कभी नहीं छोड़ना चाहिये आप ने अपनी पूरी ज़िन्दगी इस्लाम की ख़िदमत और उम्मत की फ़लाह़ के लिए वक़्फ़ कर दी। आज के दौर में जब मुआ़शरा मुख़्तलिफ़ अख़्लाक़ी और समाजी मसाइल का शिकार है, ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़िन्दगी हमारे लिए एक रौशन मिसाल बन सकती है। अगर हम उन की ह़या, सख़ावत, सब्र और अ़द्ल जैसे औसाफ़ को अपनी ज़िन्दगी में अपना लें तो ना सिर्फ़ हमारी इन्फ़िरादी ज़िन्दगी बेहतर हो सकती है बल्कि मुआ़शरा भी अम्न, मह़ब्बत और उख़ुव्वत का गहवारा बन सकता है।

---

(1) مصنف ابن ابی شیبہ، 17/77، حدیث:32691 (2) مسلم، ص1004، حدیث:6209 (3) مسند امام احمد، 1/160، حدیث:543 (4) مراٰۃ المناجیح، 8/395 (5) الزھد لامام احمد، ص156، رقم:688 (6) معجم کبیر، 1/87، حدیث:130 (7) معجم ابن الاعرابی، ص370 (8) ترمذی، 4/138، حدیث:2315 (9) دیکھیے: سنن کبریٰ للبیہقی، 2/61، حدیث:2374 (10) معجم کبیر، 2/41، حدیث:1226 (11) تاریخ ابن عساکر، 39/28 (12) تاریخ ابن عساکر، 39/26 ملخصاً (13) دیکھئے: معرفۃ الصحابہ، 1/79 (14) الزھد لامام احمد، ص155، رقم:684 (15) الریاض النضرۃ، 2/33، تاریخ ابن عساکر، 39/27، 225۔

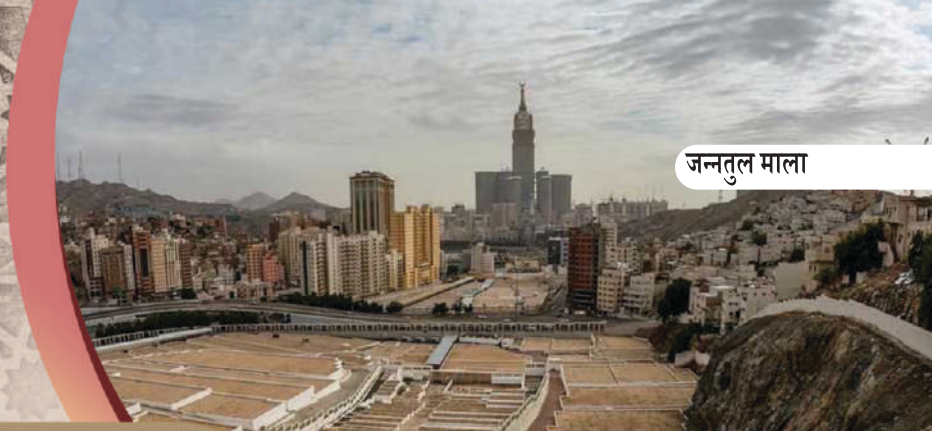

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا

कम उ़म्री में जिन ख़ुश नसीब शख़्सिय्यात को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी होने का शरफ़ मिला उन में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا भी शामिल हैं, आइए ! उन के बचपन की मुख़्तसर सीरत पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सह़ाबए किराम से रौशन करते हैं :

मुख़्तसर तआ़रुफ़

आप का शुमार कमसिन सह़ाबा में होता है, आप सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते साइब बिन अबू साइब के बेटे और क़ारिये मक्का हैं, आप ने फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर इस्लाम क़बूल किया।[1]

तादादे रिवायात

आप से 7 अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं।[2]

हुज़ूर के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी

एक रिवायत में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मक्कए मुकर्रमा में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई, सूरए मोमिनून शुरूअ़ की ह़त्ता कि ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून या ह़ज़रते ईसा का ज़िक्र आया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को खांसी आ गई और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ फ़रमा दिया।[3]

मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : यानी फ़त्ह़े मक्का के दिन आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ज्र की नमाज़ में) क़िराअत ज़ियादा करना चाहते थे मगर दरमियान में खांसी आ जाने की वजह से रुकूअ़ फ़रमा दिया कि अगर इमाम को दौराने नमाज़ में कोई ह़ादिसा पेश आ जाए जिस से वोह दराज़ क़िराअत ना कर सके तो रुकूअ़ कर दे।[4]

विसाल

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने 70 हिजरी के बाद मक्कए मुकर्रमा में सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की शहादत से पहले वफ़ात पाई।[5]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِیۡن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) طبقات ابن سعد، 6/4- سیر اعلام النبلاء، 4/477 (2) خلاصۃ تذہیب تہذیب الکمال، ص198 (3) مسلم، ص190، حدیث: 1022- مشکاۃ المصابیح، 1/175، حدیث: 837 (4) دیکھئے: مرآۃ المناجیح، 2/53 (5) تاریخ الاسلام للذہبی، 5/147- الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/47-

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार ह़ज़रते पीर मख़्दूम मूसा नवाब सोहरवर्दी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा नूर मुह़म्मद महारवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा ह़ाफ़िज़ दोस्त मुह़म्मद लिल्लाही رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ

ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम इस्लामी साल का बारहवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 116 का मुख़्तसर ज़िक्र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1438 हि. ता 1446 हि. के शुमारों में किया जा चुका है। मज़ीद 13 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए:

सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان

शोहदाए जंगे मर्जे राह़ित : ज़ुल क़ादा 64 हि. को मरवानी फ़ौज ने ह़ज़रते ज़ह़्हाक बिन क़ैस फ़िहरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की फ़ौज पर ह़म्ला किया, 20 दिन जंग जारी रही, बिल आख़िर 15 ज़ुल ह़िज्जा 64 हि. को मरवानी फ़ौज ग़ालिब आई और ह़ज़रते ज़ह़्हाक رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ दीगर सह़ाबए किराम मसलन ह़ज़रते रबीआ़ बिन ग़ाज़ जुरशी, ह़ज़रते ज़मल बिन अ़म्र अ़ज़री और ह़ज़रते मआ़न बिन यज़ीद सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم वग़ैरा के हमराह शहीद हो गए।[1]

1 ह़ज़रते सअ़द बिन ख़ौला क़रशी आ़मिरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ क़बीलए बनी आ़मिर बिन लअवी के फ़रज़न्द थे या इस के ह़लीफ़ थे और अस्ल में फ़ारसी (अ़जमी) थे, येह اَلسَّابِقُوۡنَ الۡاَوَّلُوۡن में शामिल, क़दीमुल इस्लाम, ह़ब्शा व मदीना की जानिब हिजरत करने वाले, ग़ज़्वए बद्र, उ़ह़ुद, ख़न्दक़ और सुल्ह़े ह़ुदैबिया में शरीक हुए, उन की वफ़ात हिज्जतुल वदाअ़ (ज़ुल ह़िज्जा 10 हि.) में हुई, ह़ज़रते सुबैअ़ह बिन्ते ह़ारिस अस्लमिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا आप की ज़ौजा थीं।[2]

औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام

2 शैख़ुल सूफ़िया ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन अ़त़ा रोज़बारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ मश्हूर वलियुल्लाह ह़ज़रते अबू अ़ली रोज़बारी के भांजे, वली, मोह़द्दिस, क़ारी, आ़लिमे दीन और आला अख़्लाक़ व शमाइल के मालिक थे, फ़क़्र में आप का मक़ाम बहुत बुलन्द है। आप ने ज़ुल ह़िज्जा 369 हि. को सूर (Tyre, Lebanon) में विसाल फ़रमाया।[3]

3 नवाबुल औलिया ह़ज़रते पीर मख़्दूम मूसा नवाब सोहरवर्दी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 584 हि. को कोट करोड़ ज़िला लिया, पंजाब में हुई और 25 ज़ुल ह़िज्जा 667 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार सरवाही शरीफ़, संजरपूर, तह़सील सादिक़ाबाद ज़िला रह़ीम यार ख़ान में है। आप शैख़ुल इस्लाम शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी के मुरीदो ख़लीफ़ा, मख़्दूम अ़ब्दुर्रशीद ह़क़्क़ानी के भाई हैं।[4]

4 कसीरुल फ़ैज़ ह़ज़रते ख़्वाजा ह़ाफ़िज़ अह़मद यसवी नक़्शबन्दी कश्मीरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ वलिय्ये कामिल, साह़िबे करामत, कसीरुल मुरीदीन और मम्बए अन्वार व तजल्लियात हैं। विसाल 3 ज़ुल ह़िज्जा 1114 हि. या 1116 हि. को कश्मीर में फ़रमाया।[5]

5 ह़ज़रते ख़्वाजा नूर मुह़म्मद महारवी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 14 रमज़ान 1142 हि. को बस्ती चोटाला, महार शरीफ़, चिश्तियां ज़िला बहावलंगर में हुई। आप खरल ख़ान्दान से तअ़ल्लुक़ रखते

थे, आप ने इ़ल्मे दीन महार शरीफ़, लाहौर और देहली से ह़ासिल किया, देहली में फ़ख़्रे जहां, मुह़िब्बुन्नबी ह़ज़रते ख़्वाजा फ़ख़रुद्दीन देहल्वी चिश्ती निज़ामी से बैअ़त और ख़िलाफ़त ह़ासिल की, महार शरीफ़ आ कर ख़ानक़ाह की बुनियाद रखी, ख़्वाजा सुलैमान तूंनसवी आप के ही मुरीदो ख़लीफ़ा हैं, आप का विसाल 3 ज़ुल ह़िज्जा 1205 हि. को हुवा, मज़ार मुबारक महार शरीफ़ में मर्जए़ आमो ख़ास है।[6]

6 ह़ज़रते ख़्वाजा ह़ाफ़िज़ दोस्त मुह़म्मद लिल्लाही رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बानिये ख़ानक़ाह लिल्लाही ख़्वाजा ग़ुलाम नबियल्लाही के साह़िबज़ादे, ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन, आ़रिफ़ बिल्लाह और वालिदे गिरामी के जानशीन थे, पैदाइश 1266 हि. और विसाल 18 ज़ुल ह़िज्जा 1318 हि. को हुवा, वालिद के पहलू में तदफ़ीन की गई।[7]

7 ह़ज़रते सख़ी इब्राहीम जीलानी वजड़ी वाला رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हुज़ूर ग़ौसुल आज़म की औलाद से हैं, आप बड़े सख़ी, फ़य्याज़ और साह़िबे नज़र थे, आप के पास आने वाले ह़ाजतमन्द ख़ाली हाथ न जाते, आप को गंजे का घोट यानी गंजू पहाड़ का दूल्हा भी कहा जाता है। आप का उ़र्स 9 ज़ुल ह़िज्जा को होता है, मज़ार गंजू टक्कर पहाड़, नूराई शरीफ़, ह़ैदराबाद, सिन्ध में है।[8]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

8 इमाम व मुह़द्दिस शैख़ अबू अ़ब्दुल मलिक बक्र बिन मुज़िर मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 100 हि. और वफ़ात 9 ज़ुल ह़िज्जा 174 हि. को हुई। सह़ाबी ह़ज़रते शुरह़बील बिन ह़सना के ग़ुलामों से थे, आप इ़ल्मो अ़मल के जामेअ़, इ़बादत गुज़ार, सुदूक़, सिक़ह और हुज्जत थे। कई मुह़द्दिसीन ने आप से अह़ादीस रिवायत की हैं।[9]

9 इमाम अबू यमान ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ह़िम्सी बुहरानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 138 हि. और विसाल माहे ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 222 हि. को ह़िम्स में हुवा। आप ने जलीलुल क़द्र अइम्मा अह़ादीस से समाअ़त कर के मुह़द्दिसे कबीर के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए, आप के तलामिज़ा में इमाम बुख़ारी, इमाम यह़या बिन मुईन और इमाम उ़स्मान बिन सअ़द दारिमी जैसे मुह़द्दिसीन शामिल हैं।[10]

10 क़ुदवतुल मुस्लिमीन इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन राफ़ेअ़ क़ुशैरी नेशापुरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 170 हि. के बाद हुई और त़वील उ़म्र पा कर आप का विसाल ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 245 हि. में हुवा, इमाम मुह़म्मद बिन यह़या ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। आप उस्ताज़ुल मुह़द्दिसीन, जलीलुल क़द्र और बा रोब थे। इमाम अबू बक्र मुह़म्मद बिन नई़म मदनी ने मरने के बाद ख़्वाब में देखा तो क़ुरआने पाक की तिलावत कर रहे थे।[11]

11 जलालुल मिल्लते वद्दीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू मुह़म्मद उ़मर बिन मुह़म्मद ख़बाज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े फ़क़ीह, जामेअ़ उसूलो फ़ुरूअ़, साह़िबे इ़बादत व तक़्वा और आ़रिफ़ बिल्लाह थे। आप ने मद्रसए ख़ातूनिया दिमश्क़ में 25 ज़ुल ह़िज्जा 691 हि. को वफ़ात पाई। आप की तस्नीफ़ कर्दा कुतुब में अल मुग़नी फ़ी उसूले फ़िक़्ह मश्हूर है।[12]

12 शैख़ मुह़म्मद फ़ाज़िल शहीद गुजराती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश तक़रीबन 1084 हि. को एक इ़ल्मी घराने में हुई। आप आ़लिमे कबीर, बेहतरीन ताजिर, इस्लामी शाइ़र, शारेह़ कुतुब थे। आप की शहादत 24 या 25 ज़ुल ह़िज्जा 1129 हि. को हुई। तदफ़ीन मस्जिद बीबी जी, अह़मदाबाद, गुजरात, हिन्द में की गई। छे कुतुब में मअ़दनुल फ़ज़ाइल फ़ी शर्ह़शमाइलुत्तिर्मिज़ी अहम है।[13]

13 फ़ाज़िले बरेली शरीफ़ उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 1340 हि. को हुई और विसाल 25 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1393 हि. को हुवा, आप दर्से निज़ामी के उस्ताज़, शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा क़मरुद्दीन सियालवी के मुरीद और मुह़द्दिसे आज़म के शागिर्द थे।[14]

---

(1)اسد الغابۃ، 3/49، 2/256، 307-الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 6/151-البدایۃ والنہایۃ، 5/757تا760(2)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 2/153-طبقات ابن سعد، 3/311-معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 2/406(3)طبقات الصوفیہ، ص370 (4)ویکیپیڈیا، مضمون: پیر موسیٰ نواب(5)خزینۃ الاصفیاء، 3/225 (6)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام،4/97تا101(7)تذکرہ اکابرِ اہلِ سنت، ص139 (8)تذکرہ اولیائے سندھ، ص325، 326(9)تذکرۃ الحفاظ للذہبی، 1/176 (10)تاریخ کبیر للبخاری، 2/328، 329-تہذیب الکمال، 3/63تا67-اسامی شیوخ البخاری للصغانی،ص99(11)سیر اعلام النبلاء،10/166تا168(12)تاریخ الاسلام للذہبی، 52/115-البدایۃ والنہایۃ، 9/220(13)معدن الفضائل، ص25تا28(14)تذکرہ اکابر اہلسنت، ص270۔

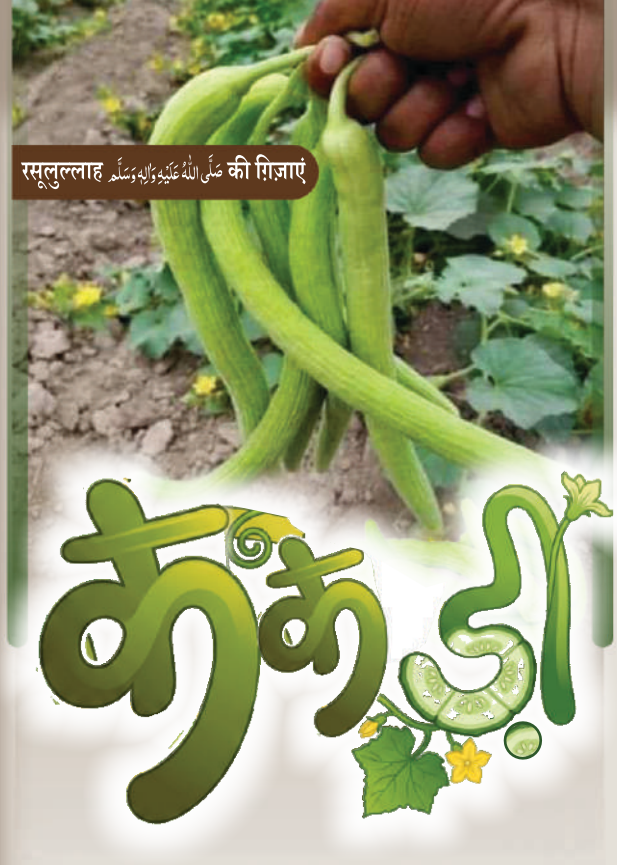

ककड़ी

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ग़िज़ाओं में से एक "**ककड़ी शरीफ़**" भी है। इस मुबारक सब्ज़ी का ज़िक्र क़ुरआने करीम में भी आया है।[1] येह एक मारूफ़ सब्ज़ी है जो लम्बी, पतली, गोल और मुड़ी हुई होती है और इस का रंग हल्का सब्ज़ी माइल सफ़ेद होता है।

छोटी ककड़ी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द थी।[2]

नोट : कुतुबे ह़दीस व लुग़त में ककड़ी और ख़ीरे के लिए मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ वारिद हैं जैसा कि "القثاء، قثاء الصغار، ضغابيس، الخيار" वग़ैरा । शुरूह़ाते ह़दीस और लुग़ात की तौज़ीह़ात से नतीजा येही निकलता है कि ककड़ी और खीरा एक ही सब्ज़ी हैं अलबत्ता अन्वाअ़ का फ़र्क़ है और खजूर के साथ मिला कर खाने में ककड़ी और खीरा दोनों ही को मुराद लेना दुरुस्त है। यानी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ककड़ी या खीरे को खजूर के साथ मिला कर खाया।[3]

ककड़ी में हर बीमारी से शिफ़ा ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ककड़ी को लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि अल्लाह पाक ने इस में हर बीमारी से शिफ़ा रखी है।[4]

ककड़ी के साथ खजूर मिला कर खाना ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ककड़ी के साथ खजूर तनावुल फ़रमाते देखा।[5]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : खजूर त़बअ़न गर्म व ख़ुश्क है और ककड़ी सर्द व तर, इन दोनों के मिलने से एतिदाल हो कर फ़ायदा बढ़ जाता है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ककड़ी और खजूर को कभी तो मेदे में जमा फ़रमाया कि बयक वक़्त कभी खजूर खाई कभी ककड़ी और चबाने में जमा फ़रमाया कि खजूर मुंह शरीफ़ में रख ली और ककड़ी भी कतर ली और दोनों मिला कर चबाईं, कभी खजूर और तरबूज़ भी मिला कर खाए हैं, खजूर ककड़ी मिला कर खाना सेह़त के लिए बहुत ही मुफ़ीद है।[6]

ककड़ी पर नमक लगा कर खाना ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से मरवी है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ककड़ी को नमक के साथ तनावुल फ़रमाते थे।[7]

ककड़ी और खजूर मिला कर खाने के फ़वाइद अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : खजूर और खीरा या ककड़ी, नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ खाना सुन्नत है। इस में भी ह़िक्मतों के मदनी फूल हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारे अ़मल के लिए तो इस का सुन्नत होना ही काफ़ी है। अत़िब्बा का कहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमज़ोरी और दुबलापन दूर होता है।[8] ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : (रुख़्सती से क़ब्ल मैं बहुत कमज़ोर थी) मेरी अम्मीजान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا मुझे फ़र्बा करने की कोशिश करतीं ताकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेज सकें जब कोई तदबीर कारगर न हुई तो उन्हों ने मुझे खजूर और ककड़ी मिला कर खिलाना शुरूअ़ कर दी जिस से मैं (चन्द रोज़ में ही) फ़र्बा हो गई।[9]

बारगाहे रिसालत में ककड़ी के तोह़फ़े ह़ज़रते रुबैअ़ बिन्ते

मुअव्विज़ رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने एक थाल में ताज़ा खजूरें और रूएंदार ककड़ियां रख कर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हदिये में पेश कीं तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी हथेली भर कर ज़ेवरात या सोना मुझे अ़ता फ़रमाया और फ़रमाया : इसे ज़ेवर बना लो।[10] एक सह़ाबी के खेत में लम्बी ककड़ी पैदा हुई, तोह़फ़े के त़ौर पर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर की, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के इ़वज़ में एक लप भर सोना इनायत फ़रमाया।[11]

ककड़ी को ख़रबूज़े पर तरजीह़ देते ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबू ह़ातिम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का एक ज़मीन का टुकड़ा था जिस का आप हर साल 700 दिरहम किराया लिया करते थे, किराएदार बाज़ औक़ात इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के लिए एक या दो ककड़ियां लाया करता था क्यूंकि इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को पकी हुई ककड़ी बहुत पसन्द थी और आप उस को ख़रबूज़े पर तरजीह़ देते थे, इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ उस शख़्स को ककड़ी लाने के सबब हर साल 100 दिरहम दिया करते थे।[12]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत का अदब आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ एक बार कहीं मदऊ़ (यानी दावत पर बुलाए गए) थे, खाना लगा दिया गया, सब को सरकारे आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के खाना शुरूअ़ फ़रमाने का इन्तिज़ार था, आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ककड़ियों के थाल में से एक क़ाश उठाई और तनावुल फ़रमाई, फिर दूसरी, फिर तीसरी, अब देखा देखी लोगों ने भी ककड़ी के थाल की त़रफ़ हाथ बढ़ा दिये मगर आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने सब को रोक दिया और फ़रमाया, सारी ककड़ियां मैं खाऊंगा। चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने सब ख़त्म कर दीं, ह़ाज़िरीन मुतअ़ज्जिब थे कि आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ तो बहुत कम ग़िज़ा इस्तिमाल फ़रमाने वाले हैं, आज इतनी सारी ककड़ियां कैसे तनावुल फ़रमा गए ! लोगों के इस्तिफ़सार पर फ़रमाया : मैं ने जब पहली क़ाश खाई तो वोह कड़वी थी उस के बाद दूसरी और तीसरी भी, लिहाज़ा मैं ने दूसरों को रोक दिया कि हो सकता है कोई साहिब ककड़ी मुंह में डाल कर कड़वी पा कर थू थू करना शुरूअ़ कर दें, चूंकि ककड़ी खाना मेरे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है इस लिए मुझे गवारा न हुवा कि इस को खा कर कोई थू थू करे।[13]

ककड़ी के फ़वाइद ककड़ी का मिज़ाज दूसरे दरजे में सरदो तर है।[14] ❁ ककड़ी निज़ामे हाज़िमा को नर्म और बेहतर बनाती है, जिस से क़ब्ज़ का ख़त़रा कम हो जाता है ❁ ककड़ी को खाने के दौरान बत़ौरे सलाद इस्तिमाल करना मुफ़ीद है ❁ ककड़ी जिस्म से फ़ासिद माद्दे ख़ारिज करने में मदद देती है ❁ छोटी ककड़ी जिस पर रुवां हों वोह बहुत नर्म और फ़ायदेमन्द होती है ❁ ककड़ी तेज़ाबियत (सीने की जलन) के लिए मुफ़ीद है ❁ ककड़ी खाने से जिगर और मेदे की गर्मी दूर होती है ❁ भूक बढ़ाती है ❁ सुफ़रा को दूर करती है ❁ ककड़ी में पोटाशियम के अज्ज़ा काफ़ी मिक़्दार में पाए जाते हैं जो ब्लड प्रेशर को नॉर्मल रखते हैं ❁ ककड़ी मौसमे गर्मा की सब्ज़ी है इसे गर्मी के मौसम में ज़रूर इस्तिमाल कर के इस से फ़ायदा उठाना चाहिये ❁ ककड़ी प्यास बुझाती है ❁ गर्मी से होने वाली पेशाब की तक्लीफ़ में ककड़ी काट कर उस के ऊपर लीमूं का रस और काला नमक छिड़क कर खाने से اِنْ شَآءَ اللہُ الْکَرِیْم फ़ायदा होगा ❁ ककड़ी के येह सारे फ़वाइद बग़ैर पकाए छिल्के के साथ खाने में ही हैं क्यूंकि छिल्का उतारने और पकाने से इस के बहुत से फ़ायदे ज़ाएअ़ हो जाते हैं।[15]

नोट : हर ग़िज़ा और दवा अपने डॉक्टर या ह़कीम के मश्वरे से ही इस्तिमाल कीजिए। नीज़ इस मज़्मून की त़िब्बी तफ़्तीश ह़कीम रिज़्वान फ़िरदौस ने फ़रमाई है।

---

(1) دیکھیے: پ 1، البقرۃ: 61 (2) دیکھیے: مراٰۃ المناجیح، 6/350 (3) المصباح المنیر، 2/490، لسان العرب، 3/343 (4) کنز العمال، جز10، 5/19، حدیث: 28277 (5) بخاری، 3/540، حدیث: 5447 (6) دیکھیے: مراٰۃ المناجیح، 6/20 (7) اخلاق النبی وآدابہ لابی الشیخ الاصبہانی، ص127، حدیث: 648 (8) مدنی پنج سورہ، ص356، 357 (9) دیکھیے: ابن ماجہ، 4/37، حدیث: 3324- دیکھیے مراٰۃ المناجیح، 6/20 (10) دیکھیے: مسند امام احمد، 44/572، حدیث: 27023 (11) دیکھیے: صراط الجنان، 7/589 (12) دیکھیے: سیر اعلام النبلاء، 10/308 (13) دیکھیے: فیضان سنت، 1/457، 458 (14) دیکھیے: خزائن الادویہ، 3/343 (15) مختلف ویب سائٹ سے ماخوذ۔

"588 हिजरी में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के बनाए गए मद्रसा सलाहिया का मौजूदा एक मन्ज़र"

(क़िस्त : 01)

चन्द क़दीम मदारिस व जामिआ़त

मदारिसे इस्लामिया को इस्लाम के क़िल्ए कहा जाता है, क्यूंकि येह इस्लामी तालीमात नस्ल दर नस्ल मुन्तक़िल करने के अहम मराकिज़ हैं, उन ही के ज़रीए इस्लामी उ़लूमो फ़ुनून की नश्रो इशाअ़त का सिल्सिला आग़ाज़े इस्लाम से जारी है, अपनी अस्ल के एतिबार से मद्रसा किसी इ़मारत और बिल्डिंग का नाम नहीं बल्कि एक उस्ताज़ और शागिर्द के राबिते का नाम है, जहां उस्ताज़ और शागिर्द तालीमे दीन के लिए मिल बैठें वोही जगह मद्रसा कहलाती है।

रूए ज़मीं पर मदारिसे इस्लामिया की तारीख़ इतनी ही क़दीम है जितनी इस्लाम की तारीख़, चूंकि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्तफा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़िये इलाही की इब्तिदा ﴿اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया। (پ30، العلق:1)) से की गई, इस लिए तालीमो तअ़ल्लुम का सिल्सिला शुरुए इस्लाम से किसी ना किसी सूरत में जारी रहा, बाज़ सह़ाबाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ईमान लाने वाले नए मुसलमानों को मुख़्तलिफ़ घरों में क़ुरआन और तालीमाते इस्लामिया का इन्फ़िरादी त़ौर पर दर्स देते थे।

येह सिल्सिला इसी त़रह़ जारी रहा यहां तक कि तारीख़े इस्लाम में पहली बार बा ज़ाबित़ा इस मुबारक अ़मल की इब्तिदा मस्जिदे नबवी से होती है, जब सत्तर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم मस्जिदे नबवी के चबूतरे पर क़ुरआन की तालीमो तअ़ल्लुम का सिल्सिला शुरूअ़ करते हैं, येह चबूतरा दिन के वक़्त एक दर्सगाह और रात में उन इ़ल्मे दीन के त़ालिबों की इक़ामत गाह था, अ़रबी में चबूतरे को सुफ़्फ़ा कहते हैं इस लिए इस्लाम का येह पहला मद्रसा "**सुफ़्फ़ा**" के नाम से मश्हूर हुवा, और इस में पढ़ने वाले "अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा" कहलाए।

इस के बाद येह सिल्सिला सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के इस्लाम की ख़ात़िर मुख़्तलिफ़ जेहतों में सफ़र करने के साथ साथ वसीअ़ होता रहा, यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़ुक़हा और उ़लमा को मसाजिद में मजालिसे इ़ल्म क़ाइम करने का फ़रमान जारी किया, इस लिए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा के साथ साथ कूफ़ा, बसरा, दिमश्क़ और फ़ुसत़ात़ जैसे इस्लामी शहरों में तालीमो तअ़ल्लुम के मराकिज़ क़ाइम किये गए।

दौरे सह़ाबा के बाद मश्हूर दर्सगाहों में कूफ़ा में इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की दर्सगाह और मदीना में इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की दर्सगाह मर्जए ख़लाइक़ थीं, इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में अफ़ग़ानिस्तान से ले कर दिमश्क़ व ह़िम्स तक के त़लबा इ़ल्मी प्यास बुझाने आते थे तो इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से फ़ैज़याब होने के लिए बुख़ारा व समरक़न्द और तियूनस व क़ुरतुबा से तिश्निगाने इ़ल्म जूक़ दर जूक़ ह़ाज़िर होते थे,

ह़ज़रात ताबेईन और उन के बाद के अदवार में इस सिल्सिले ने इस क़दर फ़रोग़ पाया कि दिमश्क़ में जामेअ़ बनी उमय्या और क़ाहिरा मिस्र में जामेअ़ इब्ने त़ूलून जैसे अहम इ़ल्मो फ़न के मराकिज़ वुजूद में आए जहां जलीलुल क़द्र उ़लमा बाज़ाबित़ा त़लबा को मुख़्तलिफ़ उ़लूम का दर्स देते थे। आगे चल कर इसी इ़ल्म दोस्ती और सरकारी सरपरस्ती के नतीजे में उ़लमाए किराम ने काइनाते अरज़ी के गोशे गोशे में इशाअ़ते इ़ल्म के मराकिज़ क़ाइम किए, सिर्फ़ दिमश्क़ जैसे शहर में 150 और क़ाहिरा में 75 मदारिस मौजूद थे और उस वक़्त से जो येह सिल्सिला शुरूअ़ हुवा था आज सदियां गुज़र जाने के बाद भी दुनिया के कमो बेश हर मुल्क में राइज है।

क़दीम ज़माने में दर्सो तालीम के लिए अलग से मुस्तक़िल इ़मारतें नहीं थीं बल्कि इस काम के लिए ज़ियादा तर मसाजिद से काम लिया जाता था जहां बाक़ाइ़दा मजलिसें लगाई जातीं और लोग उन मुबारक ह़ल्क़ों में हुसूले तालीम के लिए शिर्कत करते थे।

इस्लामी मदारिस व जामिअ़ात बाज़ाबित़ा त़ौर पर कब वुजूद में आए इस सिल्सिले में मुअर्रिख़ीन की आरा मुख़्तलिफ़ हैं, कुछ लोग येह सेहरा मलिक शाह सल्जूक़ के वज़ीर निज़ामुल मलिक त़ूसी के सर सजाते हैं कि इस ने सब से पहले 459 हिजरी में बग़दाद में मद्रसए निज़ामिया क़ाइम किया, मगर कुछ मुअर्रिख़ीन जैसे अ़ल्लामा तक़ियुद्दीन सुब्की और अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती इस का रद करते हैं, क्यूंकि चौथी सदी हिजरी के अवाख़िर में मदारिस के लिए अ़लाह़दा और मुस्तक़िल इ़मारत बनाने की इब्तिदा नेशापुर में हुई, यहां पहला मद्रसा नेशापुर के नासिरुद्दौला अबुल ह़सन (साले वफ़ात : 378 हि.) ने इमाम मुह़म्मद बिन हुसैन फ़ूरक के लिए बनाया, यूंही सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़नवी ने मथुरा की फ़त्ह से जा कर 410 हि. में एक आ़लीशान मद्रसा बनवाया, दिमश्क़ में चौथी सदी के आख़िर में अमीर शुजाउ़द्दौला सादिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने 391 हि. में ह़नफ़ियों का मद्रसा सादिरिय्या क़ाइम किया, और फिर येह सिल्सिला बढ़ता चला गया।

तारीख़ का मुत़ालआ़ करने से बेशुमार मश्हूर व मारूफ मदारिस व जामिअ़ात नज़र आते हैं, यहां 10वीं सदी हिजरी के एक बुज़ुर्ग अ़ब्दुल क़ादिर बिन मुह़म्मद अन्नईमी अद्दिमश्क़ी कि किताब "الدارس فی تاریخ المدارس" में मज़्कूर सिर्फ़ दारुल क़ुरआन, दारुल ह़दीस और मदारिस के नाम मुलाह़ज़ा कीजिये :

चन्द क़दीम दुवरुल क़ुरआनुल करीम :

دارُ القرآن الخَيضَريه، دارُ القرآن الكريم الجَزرِيه، دارُ القرآن الكريم الرَشَائيه، دارُ القرآن الكريم السَنْجَاريه، دارُ القرآن الكريم الصَابُونيه۔

चन्द क़दीम दुवरुल ह़दीसुश शरीफ़ :

دارُ الحديث الاَشرفيه البَرانيه، دارُ الحديث البَهَائيه، دارُ الحديث الحِمصِيه، دارُ الحديث السَامِرِيه، دارُ الحديث الفَاضِلِيه، دارُ الحديث النُورِيه، دارُ الحديث النَفِيسِيه، دارُ الحديث النَاصِرِيه۔

चन्द क़दीम दुवरुल क़ुरआन वल ह़दीस :

دارُ القرآن و الحديث التنكزيه، دارُ القرآن و الحديث الصَبابِيه، دارُ القرآن و الحديث المَعبَدِيه۔

अह़नाफ़ के चन्द क़दीम मदारिस :

المدرسةُ الاَسَدِيه، المدرسةُ الاِقبالِيه، المدرسةُ الآمَدِيه، المدرسةُ البَدَرِيه، المدرسةُ البَلْخِيه، المدرسةُ التاجِيه، المدرسةُ الجلالِيه، المدرسةُ الجَمالِيه، المدرسةُ الرَيحانِيه۔

शवाफ़ेअ़ के चन्द क़दीम मदारिस :

المدرسةُ الاَصفَهانِيه، المدرسةُ الاَمجَدِيه، المدرسةُ الاَمِينِيه، المدرسةُ التَقوِيه، المدرسةُ الحَلَبِيه، المدرسة الخَلِيلِيَه، المدرسةُ الشَرِيفِيه، المدرسة الصالحيه۔

मालिकिया के क़दीम मदारिस :

الزَاوِيةُ المَالِكِيه، المدرسةُ الصَلاحِيه۔

ह़नाबिला के क़दीम मदारिस :

المدرسةُ الجَوزِية، المدرسةُ الجَاموسيه، المدرسة الحنبلية الشريفية، المدرسة الصاحِبية، المدرسة الصَدْرِية، المدرسةُ العالِية، المدرسة المِسمارِية۔

नए लिखारी
(New Writers)

नए लिखने वालों के इन्आम याफ़्ता मज़ामीन

वादा वफ़ाई क़ुरआन की रौशनी में

मुबश्शिर अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुतवाज़न निज़ामे अख़्लाक़ का इ़लम बरदार है, जिस में इन्सान के फ़ित्री और त़बई़ तक़ाज़ों की बेहतरी और आला व उ़म्दा मुआ़शरती ज़िन्दगी के लिए अच्छे अख़्लाक़ की बेहतरीन तालीम मौजूद है, क्यूंकि तरबियत याफ़्ता बा अख़्लाक़ मुआ़शरा ही पुरसुकून ज़िन्दगी का ज़ामिन होता है दीने इस्लाम की अख़्लाक़ी तालीमात में से एक वादा वफ़ाई भी है, बाहम एतिमाद की फ़ज़ा क़ाइम रखने, एक मुहज़्ज़ब और बाकिरदार मुआ़शरे की तश्कील के लिए वादा वफ़ाई को अपनाना निहायत अहमियत का ह़ामिल है, इसी लिए इस्लाम ने ईफ़ाए अ़हद पर बहुत ज़ोर दिया है, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ الرَّحْمَہ फ़रमाते हैं : वादे का पूरा करना ज़रूरी है। मुसलमान से वादा करो या ग़ैर मुस्लिम से, अ़ज़ीज़ से वादा करो या ग़ैर से, उस्ताज़, शैख़, नबी, अल्लाह तआ़ला से किए हुए तमाम वादे पूरे करो। अगर वादा करने वाला पूरा करने का इरादा रखता हो मगर किसी उ़ज़्र या मजबूरी की वज्ह से पूरा न कर सके तो वोह गुनहगार नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, 6/483,492)

क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद मक़ामात पर ईफ़ाए अ़हद (वादा पूरा करने) की फ़ज़ीलत व अहमियत को बयान किया गया है, आइये ! हम भी वादा वफ़ाई का क़ुरआनी बयान पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं :

ईफ़ाए अ़हद

जिस मुआ़शरे में अ़हद की पासदारी और वादे की वफ़ादारी होती है इस को तरक़्क़ी की जानिब बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता और जो मुआ़शरा इस उ़म्दा अख़्लाक़ से महरूम होता है वोह बहुत जल्द तबाही व बरबादी का शिकार हो जाता है, अल्लाह तआ़ला के अह़काम पर अ़मल करने में ही कामयाबी है, लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने अ़हद पूरा करने का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़हद) पूरे करो। (پ6، المآئدۃ:1)

अ़ज़ीम नेकी

वादे को पूरा करना एक अ़ज़ीम नेकी और अख़्लाक़ी फ़रीज़ा है जैसे अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में नेक आमाल का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह लोग जो अ़हद कर के अपना अ़हद पूरा करने वाले हैं। (پ2، البقرۃ:177)

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का वस्फ़

वादा पूरा करना उ़म्दा फ़ेल और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अ़ज़ीमुश्शान वस्फ़ है जैसा कि अल्लाह पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के बारे में इरशाद है :

﴿وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا(۵۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किताब में इस्माईल को याद करो बेशक वोह वादे का सच्चा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता। (پ16، مریم:54)

महबूबे इलाही

वादा पूरा करना और अमानत का अदा करना दोनों चीज़ें परहेज़गारी के साथ तअ़ल्लुक़ रखती हैं और परहेज़गारी अल्लाह तआ़ला को निहायत महबूब है तो जो अल्लाह तआ़ला की पसन्द पर चलेगा वोह अल्लाह तआ़ला का महबूब व मुक़र्रब बन जाएगा, चुनान्चे इरशादे बारी है : ﴿مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ(۷۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जो अपना वादा पूरा करे और परहेज़गारी इख़्तियार करे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों से महब्बत फ़रमाता है। (پ3، ال عمرٰن:76)

फ़लाह़ व कामयाबी

अल्लाह पाक की रिज़ा, दुनिया व आख़िरत में फ़लाह़ व कामयाबी और जन्नतुल फ़िरदौस ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ वादा वफ़ाई भी है जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में अहले जन्नत का वस्फ़ बयान करते हुए फ़रमाता है :

﴿وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ(۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की रिआ़यत करते हैं। (پ18، المؤمنون:8)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जाइज़ वादे को पूरा करना ज़रूरी जब कि वादा ख़िलाफ़ी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। हमें चाहिए कि जिस से भी वादा करें उसे बहरे सूरत निभाया करें, अल्लाह पाक हमें वादा पूरा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ौफ़े ख़ुदा की नबवी तरग़ीबात
मुह़म्मद फ़ैज़ान अ़ली अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

ख़ौफ़ से मुराद वोह क़ल्बी कैफ़ियत है जो किसी ना पसन्दीदा अम्र के पेश आने की तवक़्क़ोअ़ के सबब पैदा हो, मसलन फल काटते हुए छुरी से हाथ के ज़ख़्मी हो जाने का डर, जब कि ख़ौफ़े ख़ुदा का मतलब येह है कि अल्लाह पाक की बे नियाज़ी, उस की नाराज़गी, उस की गिरिफ़्त और उस की तरफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए।

(ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14)

ख़ौफ़े ख़ुदा ईमान की रूह और तक़्वा की अस्ल है। येह वोह बातिनी कैफ़ियत है जो इन्सान को गुनाहों से रोकती, इताअ़त पर आमादा करती और अल्लाह पाक के क़ुर्ब की तरफ़ ले जाती है। रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी तालीमात और इरशादात के ज़रीए ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़ज़ीम अहमियत से आगाह फ़रमाया और उसे उख़रवी नजात का ज़रीआ़ क़रार दिया है। इसी मुनासबत से 4 अह़ादीस पढ़िए :

1 ख़ौफ़े ख़ुदा और अ़र्श का साया

क़ियामत के दिन जहां हर तरफ़ नफ़्सी नफ़्सी के आ़लम में हर कोई परेशान होगा, वहां ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों के लिए ख़ास इन्आ़म होगा, ह़दीस में 7 ऐसे अफ़राद का ज़िक्र हुवा जिन्हें अ़र्श का साया नसीब होगा जब और कोई साया न होगा, उन में से ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले के मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : رَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ فِي خَلَاءٍ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ यानी ऐसा शख़्स जिस ने अल्लाह पाक को तन्हाई में याद किया और उस की आंखों से आंसू बह निकले (उसे भी बरोज़े क़ियामत अ़र्श का साया मिलेगा)। (بخاری، 4/337، حدیث:6806)

2 ख़ौफ़े ख़ुदा नजात का ज़रीआ़

प्यारे आक़ा जाने आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ौफ़े ख़ुदा को बन्दे की नजात का क़वी ज़रीआ़ क़रार दिया है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ خَافَ اَدْلَجَ، وَمَنْ اَدْلَجَ بَلَغَ الْمَنْزِلَ، اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ غَالِيَةٌ، اَلَا اِنَّ سِلْعَةَ اللّٰهِ الْجَنَّةُ यानी जिसे ख़ौफ़

होता है वोह अव्वल वक़्त ही में सफ़र पर निकल पड़ता है और जो अव्वल वक़्त ही में सफ़र का आग़ाज़ कर देता है वोह मन्ज़िल तक पहुंच जाता है। सुन लो कि अल्लाह का सामान बड़ी क़ीमत वाला है, जान लो कि अल्लाह का सामान जन्नत है। (ترمذی، 4/204، حدیث:2458)

इस ह़दीसे मुबारका में ख़ौफ़े ख़ुदा को मन्ज़िले मक़्सूद (रिज़ाए इलाही और जन्नत) तक पहुंचने का मोह़र्रिक बताया गया है। जो बन्दा अल्लाह पाक से डरता है, वोह सुस्ती व काहिली को तर्क कर के अव्वल ही से कामयाबी ह़ासिल करने के लिए नेकी की राह इख़्तियार करता है।

3 ह़िक्मत की अस्ल

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़िक्मत की अस्ल बयान करते हुए फ़रमाया : رَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللهِ यानी ह़िक्मत की अस्ल अल्लाह पाक का ख़ौफ़ है। (شعب الایمان، 1/470، حدیث:744)

4 मेरे बाद भी डरते रहना

सह़ाबए किराम को ख़ौफ़े ख़ुदा की तालीम देते हुए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया : अगर तुम मुझ से मिलना चाहते हो तो मेरे बाद भी अल्लाह पाक से बहुत डरते रहना। (احیاء العلوم، 4/198)

मौजूदा दौर में ख़ौफ़े ख़ुदा की ज़रूरत

फ़ी ज़माना जहां इन्सान ज़ाहिरी तरक़्क़ी के उ़रूज पर जा रहा है, वहीं दूसरी त़रफ़ बात़िनी ज़वाल का भी शिकार है। गुनाह को मामूली समझा जाने लगा है और अल्लाह पाक की पकड़ को फ़रामोश किया जा रहा है। ऐसे माह़ौल में ख़ौफ़े ख़ुदा को इख़्तियार करने की अशद ज़रूरत है क्यूंकि मुन्दर्जा बाला अह़ादीसे मुबारका से मालूम होता है कि ख़ौफ़े ख़ुदा ही वोह क़ुव्वत है जो इन्सान को बेराह रवी से बचा कर सीधी राह पर क़ाइम रखती है।

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के क़ारेईन ! जो बन्दा अल्लाह पाक से डरता है, वोह दुनिया में भी मह़फ़ूज़ रहता है और आख़िरत में भी सुर्ख़रू होता है। लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा को ज़िन्दा रखे, क्यूंकि येही ख़ौफ़ इस्लाह़े नफ़्स, ह़ुस्ने अ़मल और नजाते अबदी की कुंजी है।

अल्लाह पाक हमें प्यारे आक़ा जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात पर अ़मल करते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा को इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मुत़ालआ़ए सीरत की ज़रूरत व अहमियत

सय्यिद मुह़म्मद अर्सलान अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

मुत़ालआ़ए सीरते नबवी हर मुसलमान के लिए रूह़ानी, अख़्लाक़ी और अ़मली राहनुमाई का बेहतरीन ज़रीआ़ है। सीरत का मत़लब है हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी का मुत़ालआ़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़, इ़बादात, मुआ़मलात, क़ियादत, सब्र और ह़िक्मत को समझना। जब हम सीरत का मुत़ालआ़ करते हैं तो हमें इस्लाम की तालीमात अ़मली शक्ल में नज़र आती हैं।

क़ुरआन का अ़मली नमूना

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। (پ21، الاحزاب:21)

येह आयत वाज़ेह़ करती है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी हमारे लिए कामिल नमूना है। नमाज़ कैसे पढ़नी है ? लोगों से कैसा बरताव करना है ? मुश्किल ह़ालात में कैसा सब्र करना है ? येह सब मालूमात हमें सीरतुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलती हैं। सीरत का मुत़ालआ़ दरअस्ल क़ुरआन को समझने का ज़रीआ़ है।

ईमान में इ़ज़ाफ़ा

सीरत का मुत़ालआ़ दिल में मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ईमान की ताज़गी पैदा करता है। सह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीस में है :

तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे इस के वालिद, औलाद और सब लोगों से ज़ियादा महबूब ना हो जाऊं। (بخاری،1/17،حدیث:15)

जब इन्सान आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जिद्दो जिहद, रहमत, अ़द्ल और क़ुरबानियों को जानता है तो दिल में महब्बत और अ़क़ीदत बढ़ती है और येही महब्बत ईमान मज़बूत करती है।

अख़्लाक़ी तरबियत का ज़रीआ़

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं अच्छे अख़्लाक़ की तक्मील के लिए भेजा गया हूं। (مسند بزار، 15/364، حدیث: 8949)

आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत में सच्चाई, अमानत, हिल्म, दरगुज़र और अ़द्ल नुमायां हैं। मक्का के सख़्त तरीन हालात में भी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब्र और अ़फ़्व का मुज़ाहरा किया। फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर आ़म मुआफ़ी इस की रौशन मिसाल है। आज के दौर में जब मुआशरा अख़्लाक़ी कमज़ोरियों का शिकार है, सीरत का मुतालअ़ा हमें अ़मली अख़्लाक़ सिखाता है।

मुश्किलात में राहनुमाई

सीरत हमें सिखाती है कि मुश्किलात में मायूस नहीं होना चाहिए। मक्का में ज़ुल्मो सितम, शिअ़बे अबी तालिब का मुहासरा, ताइफ़ की तक्लीफ़ें उन सब में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब्र और अल्लाह पर तवक्कुल का रास्ता इख़्तियार किया। हिजरते मदीना के बाद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मिसाली मुआशरा क़ाइम किया, जिस की बुनियाद उख़ुव्वत, अ़द्ल और मुशावरत पर थी। येह सब वाक़िआ़त हमें ज़िन्दगी के मसाइल का हल देते हैं।

मुआ़शरती और क़ियादत के उसूल

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ रूहानी पेशवा नहीं बल्कि बेहतरीन राहनुमा भी थे। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने मदीना में एक मुनज़्ज़म रियासत क़ाइम की, जिस में मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़ मुतअ़य्यन किए गए। सुल्हे हुदैबिय्या जैसे मुआ़हदे आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दूर अन्देशी की मिसाल हैं। सीरत का मुतालअ़ा हमें अच्छी क़ियादत, हिक्मत और बरदाश्त का दर्स देता है।

नौजवानो के लिए रोल मॉडल

आज के नौजवानों को मुख़्तलिफ़ फ़िक्री और अख़्लाक़ी चैलेन्जिज़ का सामना है। सीरतुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नौ जवानों को पाकीज़गी, मेहनत, दियानत और मक़्सदियत का रास्ता दिखाती है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जवानी अमानत व सदाक़त की मिसाल थी, इसी लिए आप को सादिक़ व अमीन कहा जाता था। अगर हमारे नौजवान सीरतुन्नबी का मुतालअ़ा करें और तालीमात को अपनाएं तो उन की ज़िन्दगी संवर सकती है।

मुतालअ़ए सीरत सिर्फ़ एक तारीख़ी मुतालअ़ा नहीं बल्कि ज़िन्दगी संवारने का अ़मली निसाब है। येह ईमान को मज़बूत करता है, अख़्लाक़ को बेहतर बनाता है और मुश्किलात में रास्ता दिखाता है। क़ुरआन हमें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी का हुक्म देता है और पैरवी उसी वक़्त मुम्किन है जब हम आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी को जानें। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि वोह बाक़ाइदगी से सीरत का मुतालअ़ा करे, इस पर ग़ौर करे और उसे अपनी अ़मली ज़िन्दगी का हिस्सा बनाए।

अल्लाह तआ़ला हमें सीरते तय्यिबा को समझने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिये प्यारी ह़दीस

जिस ने धोका दिया !

हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا यानी जिस ने हमें धोका दिया, वोह हम में से नहीं।[1]

प्यारे बच्चो ! किसी चीज़ की (अस्ली) ह़ालत को पोशीदा रखना धोका है।[2] धोके को फ़रेब, दग़ा, मक्कारी और मक्र वग़ैरा भी कहते हैं।

प्यारे बच्चो ! अल्लाह के नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ बुरे कामों पर तम्बीह करते हुए फ़रमाया है कि "**वोह हम में से नहीं**" इस का मत़लब क्या है ? उसे बयान करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : यानी वोह हमारी जमाअ़त से या हमारे त़रीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मत़लब नहीं कि वोह हमारी उम्मत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता।[3]

धोका देना गुनाह का काम है और अल्लाह पाक और रसूले करीम عَلَيْهِ السَّلَام को येह बहुत नापसन्द है । इस बुरी आ़दत से मुआ़शरे में बे बरकती आती है । फ़रेब देने वाला दुनिया और आख़िरत दोनों में ज़लील होता है । क़ियामत के दिन ऐसा शख़्स ज़लीलो ख़्वार होगा, मक्कारी और चालबाज़ी मोमिन की शान नहीं । जो शख़्स दूसरों को धोका देता है, लोग उस पर भरोसा करना छोड़ देते हैं, दोस्त उस का साथ छोड़ देते हैं और आख़िरेकार उस की इ़ज़्ज़त भी जाती रहती है।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने धोका देने से सख़्ती से मना फ़रमाया है, एक बार का वाक़िआ़ है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाज़ार से गुज़रे और एक अनाज के ढेर में हाथ डाला तो अन्दर से अनाज गीला था । आप ने उस अनाज वाले से पूछा कि येह क्या मुआ़मला है ? उस ने बताया कि अनाज पर बारिश पड़ गई थी । प्यारे नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम ने गीला अनाज ऊपर क्यूं न रखा ताकि लोग देख सकते ? (और धोका न खाते ।)[4]

प्यारे बच्चो ! इम्तिह़ानात में नक़्ल करना, अपनी डेली रिपोर्ट वाली कॉपी मैं ख़ुद ही अम्मी अब्बू के दस्तख़त कर लेना, अम्मी ने कोई सामान लाने के लिए पैसे दिए तो बक़िय्या बचने वाले पैसे छुपा लेना, येह सब धोका है।

अच्छे बच्चो ! प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात पर अ़मल करें, कभी किसी को धोका न दें, इस ह़दीसे पाक को याद कर लें, अपने भाई बहनों और दोस्तों को भी येह ह़दीस सुनाएं और उन्हें भी इस बुरे काम से मना करें।

अल्लाह पाक हमें धोका देही और हर गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) مسلم، ص64، حدیث:283 (2) فیض القدیر، 6/240، تحت الحدیث:8879
(3) مراٰۃ المناجیح، 6/560 (4) دیکھیے: مسلم، 64، حدیث:284۔

हड्डियों पर दस्ते मुस्तफ़ा ﷺ

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा ﷺ अल्लाह पाक के आख़िरी नबी हैं और अल्लाह तआ़ला ने आप को बे शुमार मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए । उन मोजिज़ात में कभी भूकों के लिए खाना बढ़ जाता है तो कभी अल्लाह पाक मुर्दा को भी ज़िन्दा फ़रमा देता है। आइए ! आज हम एक ऐसे ही ह़ैरत अंगेज़ मोजिज़े के बारे में सुनते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ एक बार हुज़ूरे अकरम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो चेहरए मुस्तफ़ा पर भूक के आसार देखे, उन्हों ने घर आ कर अपनी ज़ौजा से फ़रमाया कि मैं ने चेहरए मुस्तफ़ा ﷺ के आसार बदले हुए देखे हैं ग़ालिबन भूक से, तो क्या घर में कुछ खाने को है ? उन की ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : येह एक बकरी है और थोड़े से जौ, बहरह़ाल बकरी ज़ब्ह़ कर दी गई, जौ पीस कर रोटियां पका कर सालन में भिगो कर सरीद तय्यार किया गया। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ सरीद का बरतन बारगाहे रिसालत में लाए और पेश कर दिया।

रह़मते आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : जाबिर ! जाओ दूसरे सह़ाबा को बुला लाओ। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ कहते हैं कि मैं सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم को बुला लाया तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया : थोड़े थोड़े अफ़राद को खाने के लिए अन्दर भेजते जाओ, चुनान्चे ऐसा ही किया गया कि जब चन्द अफ़राद खाना तनावुल फ़रमा कर रुख़्सत होते तो दूसरे दाख़िल हो जाते, जब सब खाना खा चुके तो हुज़ूरे अकरम ﷺ ने बकरी की जमा शुदा हड्डियों पर अपना दस्ते मुबारक रख कर कुछ पढ़ा तो देखते ही देखते बकरी कान झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से फ़रमाया : लो येह अपनी बकरी ले लो। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ कहते हैं कि मैं बकरी ले कर घर पहुंचा तो ज़ौजा ने बकरी देख कर ह़ैरत से कहा : येह क्या ! येह बकरी वापस कैसे आ गई ? मैं ने कहा : अल्लाह की क़सम ! येह वोही बकरी है जो हम ने ज़ब्ह़ की थी। हुज़ूरे अकरम

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह पाक से दुआ की तो अल्लाह पाक ने उसे हमारे लिए दोबारा ज़िन्दा कर दिया है।

(देखिये: الخصائص الکبری 2/112)

प्यारे बच्चो ! इस मुबारक वाक़िए से हमें कई प्यारी बातें सीखने को मिलती हैं :

- इन्सान को चाहिए कि अपनी महबूब हस्तियों और बुज़ुर्गों की हालत पर नज़र रखे ताकि अगर कभी उन की ख़िदमत का मौक़अ मिले तो येह सआदत हासिल कर सके।
- इन्सान के पास अगर्चे वसाइल व ज़राएअ कम हों मगर उसे चाहिए कि अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ दूसरों की मदद के जज़्बात दिल में ज़रूर रखे और मौक़अ पर परेशान हालों के काम आए।
- घर के मुआमलात में एक दूसरे का साथ दें तो ज़िन्दगी में सहूलत और घर में बरकत रहती है।
- मेहमान नवाज़ी और खाना खिलाना इस्लाम के उम्दा औसाफ़ हैं, हमें चाहिए कि ख़ुशदिली से मेहमान नवाज़ी किया करें।
- सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अपने नबी से बे पनाह महब्बत करते थे और आप की मामूली सी तक्लीफ़ भी गवारा नहीं करते थे।
- हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बहुत ख़ैरख़्वाह थे, भूक प्यास या किसी भी क़िस्म के परेशान कुन लम्हात में उन्हें तन्हा न छोड़ते बल्कि उन की परेशानी दूर फ़रमाया करते थे।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! हर चीज़ अपने लिए चाहना और दूसरों के हुक़ूक़ का ख़याल न रखना एक बुरी आदत है जिस की वजह से लोग नफ़रत की निगाह से देखते हैं। जिस बच्चे में येह आदत होती है वोह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशात को अहम समझता है और दूसरों की ज़रूरतों को नज़र अन्दाज़ कर देता है, घर में बहन भाइयों के साथ झगड़े और नाचाक़ी भी इसी वजह से पैदा होती है। इस्लाम हमें दूसरों के हुक़ूक़ अदा करने और ईसार का दर्स देता है। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो फिर अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे और दूसरे को अपने ऊपर तरजीह दे तो अल्लाह पाक उस को बख़्श देगा।

(तारीख़े दिमश्क़, 31/142)

बच्चों को चाहिये कि एक दूसरे का ख़याल करना और ईसार करना सीखें इसी में दुनिया व आख़िरत की भलाई है।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "حرم" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं:

ا	ن	ا	م	ق	و	ق	ح	ق
م	ف	ش	ز	ط	ر	س	و	ا
ر	ت	ا	ح	ن	ھ	ت	ح	ل
ن	ی	ب	ز	ی	م	ر	د	خ
ت	ش	ر	م	ر	ح	ج	ر	ا
س	ر	ج	ق	ج	ل	ی	س	ن
ت	ر	خ	آ	ک	ہ	ح	ت	ی
ڑ	ش	ت	ق	ل	و	ب	ق	ک
ت	ر	ز	س	ر	ا	ث	ی	ا

1 حقوق 2 ایثار 3 ترجیح 4 آخرت 5 درس۔

क्लास रूम

क़तरा क़तरा मोती

क्लास रूम में दाख़िल होते ही सर बिलाल ने सलाम और हाल अहवाल के बाद बच्चों को कल के सबक़ की दोहराई करने का कहा और ख़ुद व्हाइट बोर्ड की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए थे। उमूमन सर बिलाल सिर्फ़ सियाह और नीला मार्कर ही इस्तिमाल करते थे लेकिन आज नीले और सियाह के साथ साथ सब्ज़ और सुर्ख़ रंग के बोर्ड मार्कर्ज़ भी सर बिलाल की मुट्ठी में दिखाई दे रहे थे।

बच्चों पर एक भरपूर नज़र डाली कि कहीं कोई किताब की आड़ में बातों में तो नहीं मगन और फिर ब्लेक मार्कर से व्हाइट बोर्ड की दाएं तरफ़ एक बड़ा सा गोल दायरा बना दिया और फिर उस दायरे में लाइन खींच कर उसे दो ख़ानों में बांट दिया था, बड़े वाले ख़ाने में सुर्ख़ मार्कर से 97 फ़ीसद जब कि छोटे वाले में सब्ज़ मार्कर से 3 फ़ीसद लिख दिया था। फिर उस में 3 फ़ीसद वाले ख़ाने को मज़ीद दो हिस्सों में बांट कर छोटे वाले ख़ाने में एक 1 फ़ीसद लिख दिया।

बच्चे जो सबक़ दोहरा चुके थे और अब हैरानी और दिलचस्पी के मिले जुले जज़्बात के साथ व्हाइट बोर्ड की तरफ़ मुतवज्जेह हो चुके थे, अब सर बिलाल ने व्हाइट बोर्ड की दूसरी तरफ़ लिखा : आज़ादी के वक़्त, और उस के सामने पांच बाल्टियां बना दी थीं। फिर नीचे 2026 लिख कर उस के आगे डेढ़ बाल्टी बना दी और सब से नीचे 2040 लिख कर उस के आगे एक ग्लास बना दिया था।

तो बच्चो आप को पता है नां येह कौन सा हिजरी महीना है ? सर बिलाल व्हाइट बोर्ड से फ़ारिग़ हो कर पूछने लगे।

उसैद रज़ा : जी सर येह हज और क़ुरबानी का महीना है।

सर जी इस महीने में तो हम मज़े से बकरे की बारबीक्यू पार्टी करते हैं, इस महीने को भला कैसे भूल सकते हैं, **कामरान** ने कहा तो सभी मुस्कुरा पड़े।

सर बिलाल : जी जी बच्चो येह ज़ुल हिज्जतिल हराम का महीना है जिस में मुसलमान हज और क़ुरबानी जैसी अहम इबादात करते हैं। और आप को पता है नां जब भी कोई हज या उमरा की इबादत कर के वापस घर लौटता है तो अपनों के लिए आबे ज़मज़म का तोहफ़ा लाज़िमी लाता है लेकिन क्या आप को आबे ज़मज़म की तारीख़ पता है ? आज से बहुत साल पहले अल्लाह पाक के प्यारे नबी हज़रते इस्माईल अपने बचपने में और उन की वालिदा एक सहरा (Desert) में थे, ख़ूराक और पानी सब ख़त्म हो गया था अब नन्हे इस्माईल ने प्यास से रोना शुरूअ़ किया तो मां ने बेताबी से इधर उधर पानी की तलाश में चक्कर लगाना शुरूअ़ किए, दूसरी तरफ़ नन्हे इस्माईल ने ज़मीन पर पांव मारना शुरूअ़ कर दिए और वहीं से अल्लाह पाक ने मीठे पानी का चश्मा जारी कर दिया, मां ने येह देखा तो चश्मे के इर्द गिर्द पत्थर लगा दिए, उसी चश्मे का पानी आज भी आबे ज़मज़म के नाम से जाना जाता है जिसे हर मुसलमान इन्तिहाई शौक़ और अदब से पीता है। और आप को पता है इसी चश्मे की वजह से इस सहरा में रफ़्ता रफ़्ता आबादी होना शुरूअ़ हो गई और वहीं पे हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ानए काबा की तामीर की आज तक सारी दुनिया से मुसलमान उस का हज करने जाते हैं।

सर बिलाल : ने क्लास में बच्चों के दरमियान चक्कर लगाते हुए बात जारी रखी : तो बच्चो पानी एक ऐसी नेमत है जो हमेशा से इन्सान की बुनियादी ज़रूरत रही है और सिर्फ़ मक्कए पाक ही नहीं, तारीख़ बताती है कि दुनिया में जितनी भी पुरानी क़ौमें हैं वोह पानी के पास ही रिहाइश इख़्तियार करती थीं जैसे दरियाए फ़ुरात, नील और दरियाए सिन्ध वग़ैरा। लेकिन बच्चो इतनी अहम बुनियादी ज़रूरत जिस की ख़ातिर पहले क़बीलों में लड़ाइयां भी छिड़ जाती थीं वोह आज कितनी आसानी से हमारे घरों के नल में आ जाता है शायद इसी लिए हमें इस की क़द्रो क़ीमत नहीं है चलें फिर आज इस की क़द्रो क़ीमत जानने की कोशिश करते हैं।

अब सर बिलाल व्हाइट बोर्ड के पास आ चुके थे, बच्चो आप को पता है इस वक़्त दुनिया में पानी का जितना ज़ख़ीरा है इस का अक्सर यानी सत्तानवे फ़ीसद पानी तो वैसे ही खारा है यानी पीने के लाइक़ ही नहीं है, बाक़ी रहा तीन फ़ीसद तो उस में से भी दो फ़ीसद तो बर्फ़ यानी ग्लेशियर्ज़ की सूरत में है यानी सिर्फ़ एक फ़ीसद पानी ऐसा है जो हमारे पीने लाइक़ है।

अब हम आते हैं इन्डिया की त़रफ़ तो जब इन्डिया आज़ाद हुवा था तब हमारे पास पानी का कितना ज़ख़ीरा था और आज कितना है इसे एक मिसाल से समझते हैं, आज़ादी के बाद हर भारती शहरी के पास गोया पीने लाइक़ पानी की पांच बाल्टियां थीं, जो कम होते होते आज डेढ़ से दो बाल्टी रह गया है लेकिन इस से भी ख़त़रनाक सूरतेह़ाल तो येह है कि हमारी आइन्दा नस्लों के लिए येह कम हो कर सिर्फ़ एक ग्लास रह जाएगा, यानी जैसे आज हम लम्बी लम्बी क़त़ारों में लग कर पेट्रोल वग़ैरा डलवाते हैं अल्लाह ना करे एक ऐसा दिन आ सकता है कि पीने लाइक़ पानी ख़रीदने के लिए लम्बी लम्बी क़त़ारें लगी होंगी और ऐसा भी हो सकता है सोने Gold की त़रह़ इस की क़ीमत इतनी ज़ियादा हो कि बहुत सारे लोग ख़रीद ही न पाएं।

फिर सर बिलाल ने 2026 के सामने बनाई हुई बाल्टी के नीचे पानी के छोटे छोटे क़त़रे बनाना शुरूअ़ कर दिए और साथ कहने लगे : तो बच्चो जैसे मुट्ठी से रेत फिसलती है नां वैसे ही हमारे हाथ से पानी भी निकलता जा रहा है, हां हम चाहें तो इसे रोक सकते हैं।

वोह कैसे सर ? क्लास मॉनीटर मुआ़विया ने जल्दी से पूछा।

अगर हम पानी समझदारी से इस्तिमाल करना शुरूअ़ कर दें जैसे ब्रश करते, चेहरे वग़ैरा पर साबुन लगाते वक़्त पानी का नल बन्द करना शुरूअ़ कर दें, ग्लास जग वग़ैरा में बचा हुवा पानी न फेंकें, सेहन, मोटर बाइक, गाड़ी धोते हुए पानी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ही इस्तिमाल करें न कि पाइप लगा कर नल खुला छोड़ दें।

याद रखें बच्चो ! पानी अल्लाह की बहुत प्यारी नेमत है और जब कोई क़ौम नेमत की क़द्र नहीं करती तो वोह नेमत उस से छीनी भी जा सकती है, और ऐसा न हो कि माज़ी की त़रह़ मुस्तक़बिल Future में भी पानी पर जंगें होने लगें, आज वादा करें कि क़त़रे क़त़रे की ह़िफ़ाज़त करेंगे हम अपनी ख़ात़िर आइन्दा नस्लों की ख़ात़िर !!!

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	बाक़िर	इ़ल्म के गहरे राज़ खोलने वाला	अहले बैत के चश्मो चराग़ का लक़ब
मुहम्मद	वारिस	मददगार, ह़िमायती	मश्हूर सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वारिस शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम
मुहम्मद	मुज़फ़्फ़र	कामयाबी	इमामे इ़ल्मो फ़न ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम

बच्चियों के 3 नाम

उमामा	इरादा करने वाली	नवासिए रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बा बरकत नाम
साइरा	सैर करने वाली	सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
राबिआ़	शफ़्क़त करने वाली	मश्हूर वलिय्या ख़ातून رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

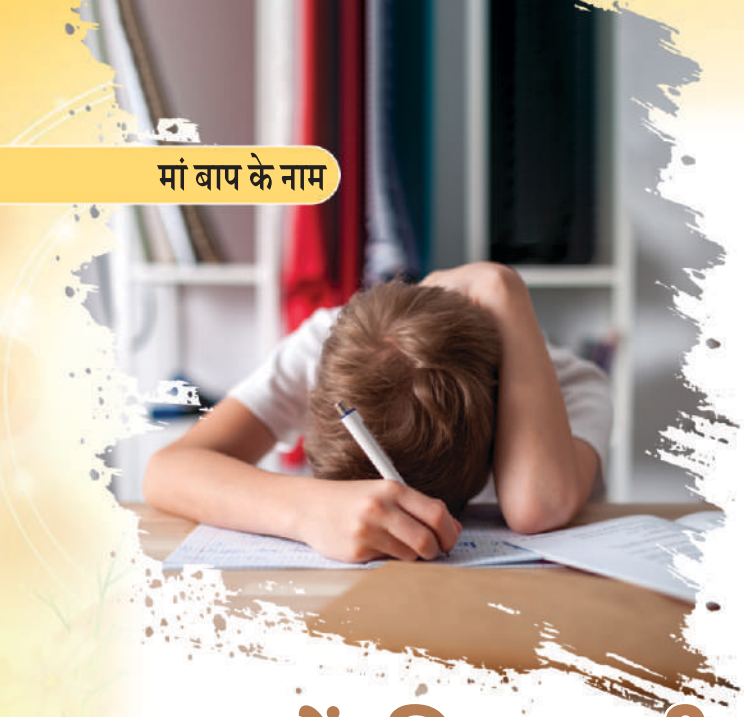

बच्चों की मायूसी और वालिदैन की ज़िम्मेदारी

उम्मीद और ह़ौसले के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला मुसलमान अल्लाह करीम और उस के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द है जब कि मायूसी इस्लाम में नापसन्दीदा अ़मल है। अल्लाह पाक ने अपनी रह़मत से मायूस होने से सख़्ती के साथ मना फ़रमाया है, चुनान्चे इरशाद हुवा : ﴿لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो। (پ24، الزمر:53)

इस से मालूम होता है कि मायूसी इस्लाम की नज़र में एक नापसन्दीदा कैफ़िय्यत है जिस से छोटों बड़ों सब को बचना चाहिए। मायूसी की वुजूहात छोटों और बड़ों में मुख़्तलिफ़ हो सकती हैं और उन्हें ख़त्म करने के त़रीक़े भी दोनों के लिए मुख़्तलिफ़ हो सकते हैं। हम इस मज़्मून में बच्चों की मायूसी की वुजूहात और उन्हें ख़त्म करने के त़रीक़ों पर बात करेंगे।

जब बच्चों के चेहरे, लहजे या ह़रकात व सकनात से मायूसी के आसार ज़ाहिर हों तो ऐसे वक़्त में वालिदैन का किरदार निहायत अहम होता है। अगर वालिदैन दानिशमन्दी, सब्र और मह़ब्बत के साथ बच्चों की रहनुमाई करें तो बच्चे की मायूसी ख़त्म हो सकती है और वोह दोबारा एतिमाद के साथ तालीम और दीगर कामों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो सकते हैं।

बच्चों की मायूसी की वुजूहात और उन का ह़ल

बाज़ औक़ात बच्चे स्कूल या मद्रसे से मायूस हो कर घर लौटते हैं उस की मुख़्तलिफ़ वुजूहात हो सकती हैं।

तालीमी कमज़ोरी पहली वजह तालीमी कमज़ोरी है। बाज़ बच्चे बढ़ाई में दूसरों की निस्बत कमज़ोर होते हैं, इस लिए वोह अस्बाक़ को अच्छी त़रह़ समझ नहीं पाते। जब वोह बार बार कोशिश के बावुजूद कामयाबी ह़ासिल नहीं कर पाते तो उन के दिल में मायूसी पैदा हो जाती है।

ह़ल : ऐसी सूरत में वालिदैन को चाहिए कि वोह ग़ुस्सा या डांट डपट करने के बजाए नर्मी, शफ़क़त और समझदारी से काम लें। बच्चे से प्यार से बात करें, उस की बात पूरी तवज्जोह के साथ सुनें, बच्चे को तसल्ली दें और समझाएं कि कमज़ोरी या नाकामी पर मायूस होने के बजाए मेह़नत और कोशिश जारी रखो और अल्लाह से दुआ करो ताकि मुश्किल आसान हो।

इम्तिह़ान में नाकामी दूसरी अहम वजह इम्तिह़ान में नाकामी या कम नम्बर आना है। तालीमी निज़ाम में इम्तिह़ानात को बहुत अहमियत दी जाती है, इस लिए जब बच्चे को कम नम्बर मिलते हैं तो उसे शरमिन्दगी और मायूसी का एह़सास होता है। बाज़ औक़ात असातिज़ा की सख़्ती या डांट डपट भी बच्चे के दिल को मुतअस्सिर करती है, ख़ास त़ौर पर अगर बच्चे की त़बीअ़त ह़स्सास (Sensitive) हो।

ह़ल : ऐसी सूरत में वालिदैन को चाहिए कि बच्चे की नाकामी की वुजूहात पर ग़ौर करते हुए उन को दूर करें। अगर बच्चा किसी मज़मून में कमज़ोर है तो उस की मदद करें, उस के लिए इज़ाफ़ी वक़्त निकालें, उसे आसान अन्दाज़ में समझाएं या किसी अच्छे उस्ताद से रहनुमाई दिलवाएं। साथ ही बच्चे की ह़ौसला अफ़ज़ाई करें और उस

की छोटी छोटी कामयाबियों पर भी उस की तारीफ़ करें।

क्लास फ़ेलोज़ का रवय्या इसी त़रह़ बाज़ बच्चे अपने साथियों के रवय्ये की वजह से भी मायूस हो जाते हैं। अगर हम जमाअ़त बच्चे उस का मज़ाक़ उड़ाएं या उसे कमतर समझें तो उस के दिल में एह़सासे कमतरी पैदा हो जाता है।

ह़ल : ऐसी सूरत में वालिदैन बच्चे को येह एह़सास दिलाएं कि दूसरों के मज़ाक़ या बुरे रवय्ये से किसी की क़द्रो क़ीमत कम नहीं होती। इस के इ़लावा बच्चे को ह़ौसला दें कि वोह सब्र और अच्छे अख़्लाक़ के साथ दूसरों का सामना करे। अगर मस्अला ज़ियादा बढ़ जाए तो असातिज़ा या स्कूल / मद्रसा इन्तिज़ामिया से भी बात करें ताकि बच्चों के दरमियान अच्छा माह़ौल क़ाइम हो सके।

होमवर्क का बोझ बाज़ औक़ात स्कूल का माह़ौल, ज़ियादा होमवर्क या खेलकूद के मवाक़ेअ़ की कमी भी बच्चे के दिल में बोझ और उकताहट पैदा कर देती है।

ह़ल : ऐसी सूरतेह़ाल में वालिदैन बच्चे कि लिए आसानी पैदा करें, मुनासिब वक़्त दें, पढ़ाई के साथ साथ खेल कूद और आराम का भी मौक़अ़ दें, क्यूंकि खेल से बच्चे का ज़ेहन ताज़ा होता है और उस की त़बीअ़त ख़ुशगवार रहती है। अगर वाक़ेई होमवर्क ज़रूरत से ज़ियादा हो या बच्चा बहुत ज़ियादा दबाव महसूस करे तो वालिदैन असातिज़ा से नर्मी के साथ बात कर के मुनासिब ह़ल तलाश करें।

बाज़ औक़ात बच्चे की मायूसी में स्कूल और मद्रसे का अ़मल दख़्ल नहीं होता बल्कि कुछ और वुजूहात हो सकती हैं जिन की वज्ह से बच्चा मायूसी का शिकार हो जाता है।

घरेलू माह़ौल का ख़राब होना अगर घर में वालिदैन के दरमियान झगड़े हों, सख़्ती ज़ियादा हो या बच्चे को मह़ब्बत और तवज्जोह न मिले तो वोह अन्दर ही अन्दर परेशान और मायूस हो जाता है।

ह़ल : ऐसी सूरतेह़ाल में वालिदैन को चाहिए कि घर का माह़ौल पुरसुकून और मह़ब्बत भरा बनाएं। बच्चों के सामने झगड़ा करने से बचें।

बड़ों की त़रफ़ से ह़द से ज़ियादा तवक़्क़ुआ़त कभी वालिदैन या बड़े बच्चों से ऐसी तवक़्क़ुआ़त रखते हैं जो उन की त़ाक़त से ज़ियादा होती हैं। जब बच्चा ख़ुद को इन तवक़्क़ुआ़त पर पूरा उतरता नहीं देखता तो वोह अपने को नाकाम समझ कर मायूस हो जाता है।

ह़ल : ऐसी कैफ़िय्यत में वालिदैन को चाहिए कि बच्चे की सलाह़िय्यत और उ़म्र को देख कर तवक़्क़ुआ़त रखें। उसे आहिस्ता आहिस्ता तरक़्क़ी करने का मौक़अ़ दें और उस पर ग़ैर ज़रूरी दबाव न डालें।

मुसल्सल डांट डपट और तन्क़ीद अगर बच्चे की हर बात पर तन्क़ीद की जाए और उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई न की जाए तो वोह मायूसी का शिकार हो जाता है।

ह़ल : ऐसी सूरते ह़ाल में वालिदैन को चाहिए कि मुसल्सल डांट डपट न करें, नर्मी और ह़िक्मत से इस्लाह़ करें। सिर्फ ग़लतियों पर नज़र न रखें बल्कि अच्छाइयों की तारीफ़ भी करें ताकि उस का ह़ौसला बुलन्द रहे।

जिस्मानी या ज़ेहनी कमज़ोरी बाज़ बच्चों की त़बीअ़त कमज़ोर होती है या वोह जल्द थक जाते हैं। इस वजह से वोह दूसरे बच्चों की त़रह़ खेल कूद या पढ़ नहीं पाते जिस की वजह से दिल बरदाश्ता और मायूस हो जाते हैं।

ह़ल : अगर बच्चा जिस्मानी या ज़ेहनी कमज़ोरी की वजह से मायूस हो तो वालिदैन को चाहिए कि तालीम का बिला वजह दबाव कम करें और बच्चे के सेह़तमन्द होने तक खाने, पीने और आराम पर इज़ाफ़ी तवज्जोह दें और ज़रूरत पड़े तो डॉक्टर या उस्ताद से मश्वरा लें।

मोह़तरम वालिदैन ! बच्चों की मायूसी का सबब कोई भी हो आप ने अपना बेहतरीन किरदार अदा करना है।

अल्लाह पाक हमें और हमारे बच्चों को मायूसी से महफ़ूज़ फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बेटियों की तरबियत

पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक

बचपन में औलाद उस मोम की तरह होती है जिसे हर सांचे में ढाला जा सकता है इसी लिए औलाद की तरबियत का बेहतरीन और सुनहरा वक़्त उन का बचपन होता है। बिल ख़ुसूस बेटियां जो सिर्फ़ अपनी अकेली ज़ात तक महदूद नहीं रहतीं बल्कि उन के साथ कई ज़िन्दगियां जुड़ी होती हैं, एक बेटी की अच्छी और बेहतरीन तरबियत होगी तो ही वोह एक बेहतरीन मुआशरे की तश्कील का सबब बनेगी।

बेटियों की तरबियत में जो अहम जिहात शामिल हैं उन में पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करने की तरबियत भी है।

सब से पहले तो अपनी बेटियों को सिखाएं कि पड़ोसी / हमसाए येह वोह क़रीबी लोग हैं जिन के साथ रोज़ मर्रा ज़िन्दगी में मेल जोल होता है और उन के हुक़ूक़ (जैसे बीमारी में इयादत, ख़ुशी ग़मी में शिर्कत) इस्लाम और मुआशरती इक़्दार में बहुत अहम हैं। बेटी को बताएं कि येह हुक्म हमें अपने पाक परवरदिगार की बारगाह से मिला है। तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ और मां बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और पास के हमसाए और दूर के हमसाए और करवट के साथी और राहगीर और अपनी बांदी ग़ुलाम से बेशक अल्लाह को ख़ुश (पसन्द) नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला।[1] इस आयते मुक़द्दसा के तहत तफ़्सीराते अहमदिया में है कि क़रीब के हमसाए से मुराद वोह है जिस का घर अपने घर से मिला हुवा हो और दूर के हमसाए से मुराद वोह है जो महल्लेदार तो हो मगर उस का घर अपने घर से मिला हुवा न हो या जो पड़ोसी भी हो और रिश्तेदार भी वोह क़रीब का हमसाया है और वोह जो सिर्फ़ पड़ोसी हो, रिश्तेदार न हो वोह दूर का हमसाया या जो पड़ोसी भी हो और मुसलमान भी वोह क़रीब का हमसाया और वोह जो सिर्फ़ पड़ोसी हो मुसलमान न हो वोह दूर का हमसाया है।[2]

पड़ोसी के हुक़ूक़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान ही पड़ोसी के हुक़ूक़ वाज़ेह कर देता है, आप ने फ़रमाया : तुम्हें मालूम है कि पड़ोसी का क्या हक़ है ? (फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया :) कि जब वोह तुम से मदद मांगे मदद करो और जब क़र्ज़ मांगे क़र्ज़ दो और जब मोहताज हो तो उसे दो और जब बीमार हो इयादत करो और जब उसे ख़ैर पहुंचे तो मुबारक बाद दो और जब मुसीबत पहुंचे तो ताज़ियत करो और मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ और बग़ैर इजाज़त अपनी इमारत बुलन्द ना करो कि उस की हवा रोक दो और अपनी हांडी से उस को ईज़ा न दो, मगर उस में से कुछ उसे भी दो और मेवे ख़रीदो तो उस के पास भी हदिया करो और अगर हदिया न करना हो तो छुपा कर मकान में लाओ और तुम्हारे बच्चे उसे ले कर बाहर न निकलें कि पड़ोसी के बच्चों को रंज होगा। तुम्हें मालूम है कि पड़ोसी का क्या हक़ है ? क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुकम्मल तौर पर पड़ोसी का हक़ अदा करने वाले थोड़े हैं, वोही हैं जिन पर अल्लाह की मेहरबानी है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पड़ोसियों के मुतअल्लिक़ मुसल्सल वसिय्यत फ़रमाते रहे यहां तक कि लोगों ने गुमान किया कि पड़ोसी को वारिस कर देंगे। फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पड़ोसी

तीन क़िस्म के हैं, बाज़ के तीन ह़क़ हैं बाज़ के दो और बाज़ का एक ह़क़ है। जो पड़ोसी मुस्लिम हो और रिश्तेदार हो, उस के 3 ह़क़ हैं। ह़क़्क़े जवार (यानी पड़ोस), ह़क़्क़े इस्लाम और ह़क़्क़े क़राबत। मुस्लिम पड़ोसी के दो ह़क़ हैं, ह़क़्क़े जवार और ह़क़्क़े इस्लाम और ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी का सिर्फ़ एक ह़क़्क़े जवार है।[3]

बेटियों को दर्जे ज़ैल बातों की तरबियत लाज़िमी दें

- बेटी को सिखाया जाए कि जब भी घर में कोई अच्छी चीज़ या खाना पके, तो उस में से हमसायों का ह़िस्सा ज़रूर निकाले, चाहे वोह चीज़ थोड़ी ही क्यूं न हो, येह अ़मल बाहमी मह़ब्बत को बढ़ाता है और ह़सद व कीना जैसे जज़्बात का ख़ातिमा करता है।

- बेटियों को इस बात की तरबियत दी जाए कि वोह पड़ोस में होने वाली ख़ुशी और ग़मी दोनों में पेश पेश रहें। अगर पड़ोस में ख़वातीन या उन के बच्चे बीमार हों तो उन की इ़यादत करना, और अगर कोई परेशानी हो तो अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ मदद करना एक बेहतरीन इस्लामी सिफ़त है जो बेटी की शख़्सिय्यत को निखारती है।

- बेटी को सिखाया जाए कि पड़ोसी की इ़ज़्ज़त और राज़ की ह़िफ़ाज़त करना उस की ज़िम्मेदारी है, ताकि मुआशरे में एतिमाद की फ़ज़ा क़ाइम हो। हमसायों के घर के अन्दरूनी मुआमलात या उन के ऐबों पर नज़र न रखी जाए और न ही उन की ग़ीबत की जाए।

- पड़ोसी को क़ौल या फ़ेल से तक्लीफ़ न देना ईमान की अ़लामत है। बेटी को तरबियत दी जाए की वोह ऐसी बातों से बचे जिस से हमसायों को अज़िय्यत हो, जैसे घर का कचरा उन के दरवाज़े के सामने फेंकना, ऊंची आवाज़ में बातें करना या उन की राज़दारी (Privacy) में मुख़िल होना।

- बेटी को बचपन ही से येह आ़दत डालनी चाहिए कि जब भी वोह किसी पड़ोसन से मिले, चाहे वोह उ़म्र में बड़ी हों या छोटी, सलाम में पहल करे। चेहरे पर मुस्कुराहट और लहजे में नर्मी रख कर बात करना सदक़ा है, और येह रवय्या पड़ोस में उस की इ़ज़्ज़त और मह़ब्बत को मुस्तह़कम करता है।

- पड़ोसी के छोटे बच्चों के साथ शफ़्क़त व नर्मी बरतने का ज़ेहन दिया जाए।

- उ़मूमन पड़ोस में छोटी मोटी चीज़ों (जैसे नमक, चीनी या बरतन) का तबादला होता रहता है। बेटी को सिखाया जाए कि अगर कोई पड़ोसी कुछ मांगने आए तो तंगदिली का मुज़ाहरा न करे, बल्कि ख़ुशदिली से उन की ज़रूरत पूरी करे। उसे येह भी समझाया जाए कि अगर किसी से कोई चीज़ उधार ली है तो उसे बर वक़्त और बेहतर ह़ालत में वापस करे।

- एक ज़िम्मेदार बेटी को इस बात का इदराक होना चाहिये कि उस के घर से उठने वाली आवाज़ें हमसायों के आराम में मुख़िल न हों। ख़ास त़ौर पर सोते वक़्त, बीमारी की सूरत में या इम्तिह़ानात के दिनों में शोर न करना और टीवी वग़ैरा की आवाज़ धीमी रखना पड़ोसी के बुनियादी ह़ुक़ूक़ में शामिल है।

- तरबियत का सब से मुश्किल लेकिन आला तरीन पहलू येह है कि अगर किसी पड़ोसन का रवय्या नामुनासिब हो, तो बेटी को तह़म्मुल और बरदाश्त सिखाई जाए। उसे समझाया जाए कि इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ बुराई का जवाब ख़ामोशी या नेकी से देना दुश्मन को भी दोस्त बना देता है।

- वालिदैन ख़ुद हमसायों के साथ अच्छा सुलूक करें क्यूंकि बच्चे नसीह़त से ज़ियादा अ़मल से सीखते हैं। कभी कभार बेटी के हाथ से हमसायों के घर खाना या तोह़फ़ा भिजवाएं ताकि उस की झिझक ख़त्म हो। हफ़्ते में एक बार उस से पूछें कि आज उस ने अपने पड़ोसियों के लिए क्या अच्छा काम किया।

बेहतरीन दीनी तरबियत के लिए हर हफ़्ते बाद नमाज़े इ़शा मदनी मुज़ाकरा देखते रहें।

येह बात भी ज़ेहन नशीन रहे कि पड़ोसियों के ह़ुक़ूक़ और हुस्ने सुलूक के तमाम अह़काम के साथ साथ ग़ैर मह़रम से पर्दा भी है, बेटियों को पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक की तरबियत में येह ज़रूर सिखाएं कि पड़ोसी ख़वातीन ही के साथ मरबूत रहें।

---

(1) پ5، النسآء:36 (2) دیکھئے: تفسیرات احمدیہ، ص275، النسآء، تحت الآیۃ:36۔
(3) دیکھئے: شعب الایمان، 7/83، 84، حدیث:9560۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 बीवी की इजाज़त के बग़ैर उस की त़रफ़ से क़ुरबानी करना

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरी बीवी साहिबे निसाब होने के बावुजूद क़ुरबानी नहीं कर रही मैं ने उस को समझाया भी है, लेकिन वोह नहीं मान रही। मैं ने उस से कहा कि चलो फिर मैं तुम्हारी त़रफ़ से क़ुरबानी कर दूंगा। वोह इस पर भी राज़ी नहीं हो रही क्यूंकि मैं ने पहले ही कई लोगों का लाखों में क़र्ज़ अदा करना है, इस लिए वोह मुझे मना कर रही है। मेरा इरादा है कि मैं बीवी को बताए बग़ैर ही उस की त़रफ़ से क़ुरबानी कर दूं। अगर मैं ऐसा करता हूं, तो क्या मेरी बीवी की त़रफ़ से क़ुरबानी अदा हो जाएगी या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दूसरे की त़रफ़ से क़ुरबानी करने के लिए उस दूसरे शख़्स की इजाज़त ज़रूरी है चाहे येह इजाज़त सराह़तन यानी वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में हो या दलालतन यानी Understood हो। अगर किसी की त़रफ़ से वाज़ेह़ इन्कार हो तो क़ुरबानी नहीं होगी। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में भी आप की बीवी की त़रफ़ से सराह़तन या दलालतन इजाज़त नहीं है, बल्कि वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में मना कर रही है, इस लिए बीवी की इजाज़त के बग़ैर बीवी की त़रफ़ से क़ुरबानी करने की सूरत में बीवी का वाजिब अदा नहीं होगा। (فتاویٰ ہندیہ، 5/302-ردالمحتار، 9/524-فتاویٰ ضویہ، 20/453-بہارِ شریعت، 3/350-ابلق گھوڑے سوار، ص9)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मख़्सूस अय्याम में निय्यते एह़राम और दीगर मनासिके ह़ज का मस्अला

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक ख़ातून ह़ज्जे तमत्तोअ़ के लिए आई उ़मरा कर के एह़राम खोल चुकी थी आठ ज़िल ह़िज्जा को उस औ़रत को माहवारी शुरूअ़ हो गई है। तो क्या वोह इसी माहवारी में ही ह़ज के एह़राम की निय्यत कर के मिना अ़रफ़ात वग़ैरा जा सकती है ? शरई रहनुमाई फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ह़ज का एह़राम बांधने के वक़्त औ़रत ह़ाइज़ा हो जाए, तो वोह भी दीगर ह़ाजियों की त़रह़ ह़ज के एह़राम की निय्यत कर के मिना रवाना होगी। सुन्नत येह है कि आ़म ह़ुज्जाज की त़रह़ नज़ाफ़त की ख़ातिर ग़ुस्ल कर के फिर निय्यत करे। अगर्चे अस्ल ग़ुस्ल तो उस को पाकी के वक़्त करना होगा। येह औ़रत सिवाए त़वाफ़े ज़ियारत के सब अफ़्आले ह़ज अदा करेगी त़वाफ़े ज़ियारत पाक होने पर अदा करेगी। (تنویر الابصار متن درِ مختار، 3/630-حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار، 1/513-فتاویٰ فقیہ ملت، 1/357)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ज़ुल हिज्जतिल हराम
के चन्द अहम वाक़िआ़त

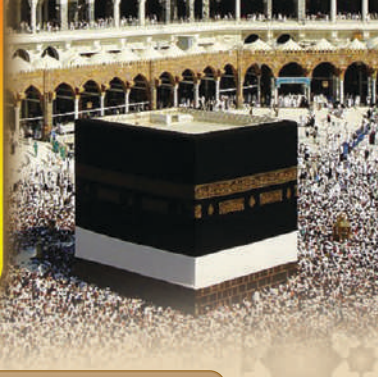

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
4 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1401 हि.	यौमे विसाल ख़लीफ़ए आला हज़रत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अ़हमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438, 1439 हि. और "सय्यिदी क़ुत्बे मदीना"
7 ज़ुल हिज्जतिल हराम 114 हि.	यौमे विसाल ताबेई़ बुज़ुर्ग, हज़रते इमाम मुहम्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि. और "फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर"
11 ज़ुल हिज्जतिल हराम 921 हि.	यौमे विसाल हज़रते अ़ल्लामा शैख़ बहाउद्दीन अन्सारी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि.
14 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1370 हि.	यौमे विसाल अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोहतरम हाजी अ़ब्दुर्रहमान क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि. और "तअ़ारुफ़े अमीरे अहले सुन्नत"
18 ज़ुल हिज्जतिल हराम 35 हि.	यौमे शहादत मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा, हज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللهُ عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 ता 1445 हि. और "करामाते उ़स्माने ग़नी"
18 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1296 हि.	यौमे विसाल मुर्शिदे आला हज़रत, हज़रते अ़ल्लामा शाह आले रसूल मारहरवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि. और "शर्ह शजरए क़ादिरिया रज़विया, सफ़हा 116"
19 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1367 हि.	यौमे विसाल ख़लीफ़ए आला हज़रत, हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुहम्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438, 1439 हि. और "तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल"
20, 21, 22 ज़ुल हिज्जतिल हराम	उ़र्स हज़रते सय्यिद अ़ब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी हसनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि.
27 ज़ुल हिज्जतिल हराम 334 हि.	यौमे विसाल इमाम अबू बक्र जाफ़र बिन यूनुस शिब्ली मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1438 हि.
ज़ुल हिज्जतिल हराम 6 हि.	विसाले मुबारका हज़रते बीबी उम्मे रूमान رَضِیَ اللهُ عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना ज़ुल हिज्जतिल हराम 1439 और 1440 हि.

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

"**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी कीजिये।

ज़ुल हिज्जतिल हराम की मुनासबत से क़ाबिले मुतालआ़ कुतुबो रसाइल

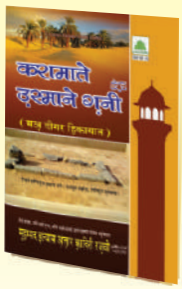

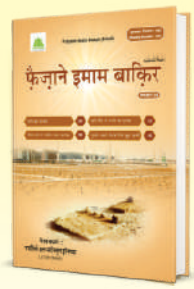

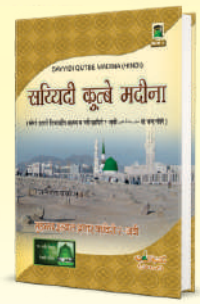

मिस्वाक के फ़ायदे और आदाब

मिस्वाक अल्लाह के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत प्यारी सुन्नत है । अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मिस्वाक की सुन्नत पर अ़मल करना ना सिर्फ़ अज्रो सवाब के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है बल्कि इस की बदौलत दुनिया के मुतअ़द्दिद फ़ायदे भी ह़ासिल होते हैं। आइए ! मिस्वाक के चन्द फ़वाइद व आदाब पढ़िए और फ़वाइद पाने और आदाब पर अ़मल की निय्यत फ़रमाइए। **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : 1 दो रकअ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बग़ैर मिस्वाक के 70 रकअ़तों से अफ़ज़ल है (الترغیب والترھیب، 1/102، حدیث:18) 2 मिस्वाक का इस्तिमाल अपने लिए लाज़िम कर लो क्यूंकि येह मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مسند امام احمد، 2/438، حدیث:5849) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि मिस्वाक में दस(10) ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़रिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मेदा दुरुस्त करती है। (جمع الجوامع، 5/249، حدیث:14867) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, मिस्वाक का इस्तिमाल, नेक लोगों की सोह़बत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना (حیاۃ الحیوان، 2/166)

मिस्वाक से मुतअ़ल्लिक़ चन्द आदाब ❁ हो सके तो अपने कुर्ते में सीने पर दाएं बाएं दो जेब बनवाइये और दिल की जानिब (यानी left Side वाली) जेब के बराबर में मिस्वाक रखने के लिए एक छोटी सी जेब बनवा लीजिए । यूं प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत मिस्वाक शरीफ़ गोया सीने और दिल से लगी रहेगी ❁ मिस्वाक को खड़ा कर के रखना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह, 1/372 माख़ूज़न) ❁ अगर इसे खड़ा नहीं करते यूंही नीचे गिरा देते हैं तो ऐसा करने वाले के लिए जुनून (यानी पागलपन) का ख़त़रा है। ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जो मिस्वाक को ज़मीन पर रखे और मजनून (यानी पागल) हो जाए तो अपने इलावा किसी को मलामत न करे (मिस्वाक के फ़ज़ाइल, स. 30) ❁ जिस त़रह़ दीनी किताब को ज़मीन पर रखना अदब के ख़िलाफ़ है इसी त़रह़ मिस्वाक को भी ज़मीन पर न रखा जाए ❁ मिस्वाक को ऊंची जगह जहां मिट्टी कचरा वग़ैरा न हो लिटा कर रखने में ह़रज नहीं ❁ मुस्तअ़मल (यानी इस्तिमाल शुदा, Used) मिस्वाक के रेशे नीज़ जब मिस्वाक ना क़ाबिले इस्तिमाल हो जाए तो उसे फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है ❁ किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पत्थर वग़ैरा किसी भारी चीज़ के साथ बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिए। दावते इस्लामी की मजलिस तह़क़ीक़ुज़े औराक़े मुक़द्दसा के तह़त मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बॉक्स (Box) लगाए जाते हैं। एक ह़ल येह भी हो सकता है कि मिस्वाक के रेशे या मुस्तअ़मल मिस्वाक इस त़रह़ के किसी डब्बे वग़ैरा में डाल दी जाए।

अल्लाह करीम हमें अदाए सुन्नत की निय्यत से मिस्वाक को अपनाने और दूसरों को इस की तरग़ीब दिलाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।
اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है